● वर्ष-3
● अंक-70
रायपुर, मंगलवार
31 अक्टूबर 2023
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6›› 1 नवंबर को वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी?

सिलेंडर 500 रुपये सस्ता देगी कांग्रेस

खैरागढ़ में प्रियंका गांधी की महिलाओं को बड़ी सौगात

रायपुर/खैरागढ़। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव जैसे जैसे पास आ रहा है। कांग्रेस भाजपा के साथ ही अलग अलग पार्टियों के दिग्गजों का दौरा जारी है। राहुल गांधी के दो दिवसीय दौरे के बाद प्रियंका गांधी छत्तीसगढ़ दौरे पर पहुंची। छत्तीसगढ़ दौरे पर प्रियंका गांधी सबसे पहले खैरागढ़ के जालबांधा पहुंची। अपने भाषण की शुरुआत प्रियंका गांधी ने मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ की तुलना से शुरुआत की। प्रियंका ने कहा मध्य प्रदेश की जनता कभी खुश नहीं दिखती लेकिन छत्तीसगढ़ की जनता के चेहरे काफी खिले हुए दिखते हैं।

खैरागढ़ के साथ हमारे परिवार का पुराना रिश्ता है। इसी के तहत इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खोला गया। इंदिरा गांधी जी इस विश्वविद्यालय का उद्घाटन किया। उपचुनाव में जीत के बाद भूपेश बघेल ने खैरागढ़ को नया जिला बनाने की घोषणा की। इसी के साथ प्रियंका गांधी ने कई बड़ी घोषणाएं छत्तीसगढ़ के लिए की।

छत्तीसगढ़ की माताओं बहनों के लिए महतारी योजना के तहत 500 रुपये सिलेंडर सब्सिडी। 42 लाख बिजली उपभोक्ताओं की 200 यूनिट तक बिजली मुफ्तस्वयं सहायता समूह की महिलाओं का कर्ज माफ होगा। 700 नए ग्रामीण औद्योगिक पार्क बनेंगेसभी हाइर सेकेंड्री स्कूलों को आत्मानंद स्कूल के तहत अपग्रेड। परिवहन व्यवसाय से जुड़े वाहन मालिकों को मोटरयान टैक्स माफ।

रागी की रोटी खाकर आई हूं, रोज खाती हूं। 67 वनोपज के लिए छत्तीसगढ़ में एमएसपी मिल रही है। आज छत्तीसगढ़िया संस्कृति की देश दुनिया में पहचान बन रही है। देश में बेरोजगारी बढ़ रही है। छत्तीसगढ़ में पूरे देश भर में बेरोजगारी कम है। खेती किसानी छत्तीसगढ़ में बढ़ रही है। दूसरे प्रदेशों से लोग बिजनेस करने छत्तीसगढ़ आ रहे हैं। मोदी सरकार ने 22 हजार घोषणाएं की है और 220 घोटाले भी किए हैं।

पूरा उत्तर भारत आवारा पशुओं से जूझ रहा है। किसान रो रहे हैं। छत्तीसगढ़ में गोधन न्याय योजना से समस्या भी हल हो गई और लोग आत्मनिर्भर भी बन रहे हैं। ग्रामीण विकास जरुरी है। यही कांग्रेस की सोच है। हमने 10 हजार गौठान बनाकर रोजगार भी दिया। कांग्रेस की सोच आपको आगे बढ़ाना है।प्रियंका गांधी ने एक बार फिर अडानी को लेकर भाजपा पर साधा निशाना। प्रियंका ने कहा कि बड़े उद्योगपतियों को कौड़ियों के दाम पर संपत्ति बेची जा रही है। उन्होंने जनता से सोच समझकर अपना वोट देने की अपील की।

छत्तीसगढ़ का मॉडल, गुजरात मॉडल से कहीं अच्छा है। मोदी सरकार ने महंगाई बढ़ाई, बेरोजगारी बढ़ाई। छत्तीसगढ़ में सबसे ज्यादा दाम में धान खरीदा जा रहा है। लाखों किसानों का कर्ज माफ किया गया है। बिजली बिल आधा किया गया है। बस्तर पहले हिंसा के लिए जाना जाता था, लेकिन आज अपनी संस्कृति और मिलेट्स के लिए पहचाना जा रहा है।

सीएम भूपेश बघेल ने कहा छत्तीसगढ़ के 20 विधानसभा सीटों में पहले चरण का चुनाव 7 नवंबर को है। साल 2018 में कांग्रेस ने 68 सीटें जीती। रमन सिंह 15 साल में 55 सीटें से ज्यादा सीटें नहीं जीत पाई। उपचुनाव में भी जीत मिली और अब छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की 71 सीटें हैं। भूपेश बघेल ने रमन सिंह और पीएम मोदी पर जमकर हमला बोला। सीएम ने कहा कि मनमोहन सरकार में भी किसानों को बोनस दिया जाता था। लेकिन जब से केंद्र में मोदी सरकार बनी तब से किसानों का बोनस बंद हो गया। हमने पीएम मोदी को पत्र लिखा है कि एक बार आप इसकी अनुमति दीजिए हम किसानों को बोनस देना शुरू कर देंगे। वैश्विक महामारी में भी कांग्रेस किसानों के साथ खड़ी रही। प्रदेश के सभी किसानों को 2500 रुपये समर्थन मूल्य दिया गया। राजीन गांधी किसान न्याय योजना के तहत चार बार भूमिहीन किसानों को राशि दी जा रही है। कोरोना काल में 3 महीने तक गरीब परिवारों तक कांग्रेस ने राशन पहुंचाया।

भूपेश बघेल ने कहा कि छत्तीसगढ़ में भाजपा को सांप सूंघ गया है। अब तक एक भी घोषणा नहीं की है। छत्तीसगढ़ के किसानों की फिर से कर्जमाफी की घोषणा कांग्रेस ने की है। इस घोषणा से भाजपा को परेशानी हो रही है। लेकिन हम फिर भी कर्जमाफी करेंगे।

छत्तीसगढ़ के गृहमंत्री ताम्रध्वज साहू ने कहा कि 5 साल पहले जब छत्तीसगढ़ में सरकार बनी तो कैबिनेट के सभी मंत्रियों में एक दिन विकास के पैमाने को लेकर बात हुई। तब ये बात निकली कि सड़क बनाना, साफ पीने का पानी देना जनता को सुविधा देना है, ये विकास का पैमाना नहीं है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति को आगे बढ़ाना विकास का पैमाना है।

गैस चैंबर की ओर बढ़ी दिल्ली

नई दिल्ली। राजधानी में मौसम बदलने व हवा की गति कम होने से वायु गुणवत्ता बेहद खराब श्रेणी में बरकरार है। देशभर के 221 शहरों में दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) छठे स्थान पर रहा। अक्तूबर में एनसीआर के मुकाबले पहली बार दिल्ली में सोमवार को हवा बेहद खराब रही। यहां एक्यूआई 347 दर्ज किया गया, जोकि रविवार के मुकाबले 27 सूचकांक अधिक रहा। यह इस सीजन का सबसे अधिक एक्यूआई रहा। सुबह एक्यूआई 333 दर्ज किया गया, वहीं दोपहर तक यह औसतन 340 हो गया। वहीं, वजीरपुर व रोहिणी समेत चार इलाकों में हवा गंभीर और 29 इलाकों में हवा बेहद खराब श्रेणी पहुंच गई।

एनसीआर में दिल्ली के बाद ग्रेटर नोएडा की हवा सबसे अधिक प्रदूषित रही। दिल्ली की हवा समग्र रूप से बेहद खराब श्रेणी में दर्ज की गई। कमोबेश यही स्थिति पूरे सप्ताह तक बने रहने का अनुमान है। दीपावली से पहले ही दिल्ली धीरे-धीरे गैस चैंबर की ओर बढ़ रही है। विशेषज्ञों के अनुसार, हवा में पराली व वाहनों और फैक्ट्रियों का धुआं घुल रहा है। ऐसे में हवा की गति कम होने से प्रदूषण के कण हवा में ठहर रहे हैं, जिससे हवा प्रदूषित हो रही है। अगर इसी तरह की स्थिति बनी रहती है, तो ग्रैप का तीसरा चरण लागू किया जा सकता है।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के मुताबिक, देशभर के 221 शहरों में दिल्ली की हवा छठे स्थान पर सबसे अधिक प्रदूषित रही। इसमें हनुमानगढ़ में एक्यूआई 428 दर्ज किया गया, जोकि गंभीर श्रेणी में रहा। वहीं, जींद में 416, बठिंडा में 381, श्री गंगानगर में 368 व बहादुरगढ़ में 362 एक्यूआई दर्ज किया गया।

सीपीसीबी के अनुसार, दिल्ली में सोमवार को 29 इलाकों में बेहद खराब हवा दर्ज की गई। इसमें वजीरपुर में 429, रोहिणी में 425, मुंडका में 417 व नॉर्थ कैंपस में 401 एक्यूआई दर्ज किया गया, जोकि गंभीर श्रेणी है। सोनिया विहार में 397, पंजाबी बाग में 392, बवाना में 390, जहांगीरपुरी में 389, आनंद विहार में 385, ओखला फेज-2 व न्यू मोती बाग में 378, अशोक विहार में 375, नरेला में 355, द्वारका सेक्टर-8 में 343 व बुराड़ी क्रॉसिंग में 370 समेत 29 इलाकों में एक्यूआई दर्ज किया गया। आया नगर में 286, लोधी रोड में 297 व पूसा में 278 वायु सूचकांक दर्ज किया गया, जोकि खराब श्रेणी है।भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम) के मुताबिक, सोमवार को हवाएं उत्तर-पूर्वी दिशा की ओर से चलीं। इस दौरान गति छह से आठ किलोमीटर प्रतिघंटा रही।

अखौरा-अगरतला नई रेलवे लाइन (भारत में 5.05 किमी और बांग्लादेश में 10.014 किमी) पश्चिमी त्रिपुरा के निश्चिंतपुर में एक अंतरराष्ट्रीय आव्रजन स्टेशन के माध्यम से बांग्लादेश के रेलवे स्टेशन अखौरा को जोड़ेगी।

केरल की सरकार कट्टरपंथ के प्रति नरम : नड्डा

नईदिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष जे पी नड्डा ने केरल की वाम सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए उस पर राज्य में ''कट्टरपंथ'' के प्रति ''नरम रुख अपनाने'' का सोमवार को आरोप लगाया। नड्डा ने वाम सरकार पर यह भी आरोप लगाया कि जब इस्लामी उग्रवादी समूह हमास के एक नेता ने केरल में आयोजित एक डिजिटल बैठक को संबोधित किया तो वामपंथी सरकार ''मूक दर्शक'' बनी रही। नड्डा ने भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रित गठबंधन (राजग) के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए यह बात कही। राजग ने राज्य में वाम सरकार के कथित कुशासन के विरोध में केरल सचिवालय के चार में से तीन द्वार अवरुद्ध कर दिए। नड्डा ने हमास के साथ इजराइल के युद्ध के विरुद्ध हाल में राज्य में एक इस्लामी समूह द्वारा आयोजित कार्यक्रम में हमास नेता खालिद मशाल के डिजिटल माध्यम से जुड़ने का जिक्र करते हुए आरोप लगाया कि उसने अपने संगठन के बारे में खुलकर बात की और वामपंथी सरकार ''मूक दर्शक'' बनी रही। उन्होंने कहा, ''इसका क्या मतलब है? आप 'गॉड्स ऑन कंट्री' (ईश्वर का अपना देश) केरल को बदनाम कर रहे हैं।'' उन्होंने लोगों से सवाल किया कि क्या वे इस प्रकार की चीजों की अनुमति देंगे? उन्होंने एक दिन पहले कोच्चि के निकट कलमश्शेरि में हुए बम धमाकों का भी जिक्र किया, जिसमें तीन लोगों की मौत हो गई। उन्होंने आरोप लगाया कि ''इसकी गहराई तक जाने पर'' यह पता लगाया जा सकता है कि मुख्यमंत्री पिनराई विजयन के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा ''कट्टरपंथ को लेकर नरम रुख अपनाने'' के कारण शांतिपूर्ण राज्य में ऐसी स्थिति पैदा हुई है। नड्डा ने वाम सरकार में कथित भ्रष्टाचार को लेकर उसकी आलोचना की और दावा किया कि केरल में विजयन के नेतृत्व में कुप्रबंधन साफ दिखाई देता है।उन्होंने कहा, ''हम सभी पिनराई विजयन की सरकार के कुशासन की समस्याओं को उठाने, वर्तमान प्रशासन में व्याप्त घोटालों और भ्रष्टाचार पर बात करने के लिए यहां एकत्र हुए हैं। हमारा सामूहिक लक्ष्य केरल में समृद्धि, विकास और सुशासन लाने के हमारे प्रयासों में एकजुटता प्रदर्शित करना है।'' उन्होंने आगे कहा कि 'धरना' विजयन सरकार के प्रति लोगों के कथित असंतोष को व्यक्त करने के लिए एक मंच है। उन्होंने दावा किया कि विजयन सरकार हताश और नीतिगत रूप से पंगुहै। भाजपा के सैकड़ों समर्थक सुबह करीब छह बजे से ही सचिवालय के तीन प्रवेश द्वारों के बाहर एकत्र हो गए। इस विरोध प्रदर्शन को देखते हुए बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया और यातायात को किसी और मार्ग की ओर परिवर्तित किया गया, ताकि कार्यालय जाने वाले लोगों तथा स्कूल जाने वाले छात्रों को दिक्कत न हो।

प्रमुख समाचार

लालू प्रसाद यादव ने रेलवे बेचने की कोशिश की: सम्राट चौधरी

नईदिल्ली। बिहार में भारतीय जनता पार्टी के जैसी सम्राट चौधरी ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और राजद सुप्रीमो लालू यादव पर बड़ा हमला बोला है। उन्होंने लालू और नीतीश पर जमकर अपनी भड़ास निकाली है। सम्राट चौधरी ने लालू प्रसाद यादव पर आरोप लगाया कि उन्होंने रेलवे बेचने की कोशिश की।उन्होंने कहा कि आज के समय में अगर नीतीश कुमार बिहार में मुखिया के पद पर भी चुनाव लड़ने खड़े हो जाए तो उन्हें जीत हासिल नहीं होगी। राजद सुप्रीमो पर आरोप लगाते हुए सम्राट चौधरी ने कहा कि लाल यादव एक ऐसी नेता है जिन्होंने रेलवे तक को बेच दिया। उन्होंने कहा कि लालू यादव ने रेल मंत्री के पद पर रहते हुए रेलवे को पूरी तरह से बर्बाद कर दिया था। बता दें कि सम्राट चौधरी ने यह आरोप 30 अक्टूबर को पटना में पत्रकारों के साथ बातचीत करने के दौरान लगाए हैं। उन्होंने कहा कि सही अर्थो में जदयू राजनीतिक दल नहीं बल्कि एक गैंग है। उन्होंने सवाल किया कि जदयू के राष्ट्र अध्यक्ष को पता होना चाहिए कि नीतीश कुमार क्या कर रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि नीतीश सरकार ने सत्ता का जबरदस्त तरीके से दुरुपयोग किया है।

प्रचार के दौरान सांसद के. प्रभाकर रेड्डी पर चाकू से हमला

नईदिल्ली। तेलंगाना में सत्तारूढ़ भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के सांसद एवं दुब्बक विधानसभा क्षेत्र से पार्टी के उम्मीदवार के. प्रभाकर रेड्डी पर सिद्दीपेट जिले में एक व्यक्ति ने चाकू से कथित तौर पर हमला कर दिया। घटना के समय वह प्रचार कर रहे थे। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि घटना के बाद आरोपी को हिरासत में ले लिया गया, जिसकी पहचान 38 वर्षीय राजू के रूप में हुई है। इसने बताया कि आरोपी के खिलाफ हत्या का प्रयास के तहत मामला दर्ज किया गया है।मेडक लोकसभा क्षेत्र से सांसद रेड्डी के पेट में चाकू लगने के घाव हैं और उन्हें नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया। हालांकि, बाद में उन्हें उपचार के लिए हैदराबाद स्थानांतरित किया गया। पुलिस ने कहा कि उनकी हालत स्थिर बताई जा रही है।सिद्दीपेट की पुलिस आयुक्त एन. स्वेता ने कहा कि सांसद से मिलने आया आरोपी उनके करीब गया और उन पर चाकू से हमला कर दिया। पार्टी के कुछ कार्यकर्ताओं ने तुरंत आरोपी को पकड़ लिया और पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस ने बताया यह घटना दौलताबाद मंडल में उस समय हुई, जब प्रभाकर रेड्डी प्रचार कर रहे थे।

मनीष सिसोदिया की जमानत याचिका रद्द की सुको ने

नईदिल्ली। आबकारी नीति से संबंधित मनी लॉन्ड्रिंग मामले में दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को सुप्रीम कोर्ट ने बेल नहीं दी है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा मनीष इस सिसोदिया की बेल रिजेक्ट किया जाने के बाद अब आम आदमी पार्टी का भी बयान सामने आ गया है। आम आदमी पार्टी ने कहा है कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा बेल रिजेक्ट किए जाने के बाद हम दूसरे कानूनी विकल्पों पर भी गौर कर रहे हैं।दिल्ली सरकार में मंत्री आतिशी ने कहा कि जब सुप्रीम कोर्ट में मनीष सिसोदिया की बेल के मामले पर सुनवाई हो रही थी तो कोर्ट ने प्रवर्तन निदेशालय से कई बार यह सवाल किया की मनी ट्रेल कहां है। कोर्ट ने यह भी कहा था कि अगर मनी ट्रेन नहीं है तो मनी लॉन्ड्रिंग का मामला कैसे बन सकता है। इसके बाद आम आदमी पार्टी की नेता आतीशी ने कहा है कि जलवायु के दौरान कोर्ट ने यह भी कहा है कि अप्रूवल जान बचाने के लिए कोई भी बयान दे सकता है। ऐसे में भरोसा करना मुश्किल है।आतीशी ने आगे कहा कि मनीष सिसोदिया को एक बार फिर से बेल नहीं मिल सकी है। आप नेता ने कहा कि कोर्ट का जो आदेश आया है।

भारत का आर्थिक महाशक्ति होना जरूरी: गोपाल कृष्ण

नईदिल्ली। नई दिल्ली के कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में विचार संगम कार्यक्रम का आयोजन दिनाँक 30 अक्टूबर 2023 को किया गया। मोदी सरकार की आर्थिक नीतियां अर्थव्यवस्था के लिए कितनी लाभप्रद है इस विषय पर भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता गोपाल कृष्ण अग्रवाल ने कहा कि बिना आर्थिक महाशक्ति बन कोई भी देश विश्व का नेतृत्व नहीं कर सकता है। अगर हमें विश्व गुरु बना है तो हमें आर्थिक महाशक्ति बनना होगा और इसी दिशा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश को आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश से 2014 के बाद से लगातार तरक्की कर रहा है देश के सामने कई तरह की आर्थिक चुनौतियां थी लेकिन हमारी सरकार नहीं इन चुनौतियों को दूर किया। हम आर्थिक शक्ति बनने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं जीएसटी को उन्होंने पूरी तरीके से रिफॉर्म बताया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नेतृत्व में हमारा देश हर मामले में तरक्की कर रहा है। हम इंफ्रास्ट्रक्चर पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं। लगातार इंफ्रास्ट्रक्चर को लेकर हमारे विशेष नीति है और इसका परिणाम भी देश के सामने आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगर लीडरशिप सही नहीं हुआ तो इस पर ब्रेक लग सकता है ऐसे में अगर देश को आर्थिक श क्ति बना है तो लीडरशिप सही होना चाहिए।

जम्मू-कश्मीर के डीजीपी ने पुलिसकर्मियों से कहा: सतर्क रहें

नईदिल्ली। जम्मू-कश्मीर के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) दिलबाग सिंह ने सोमवार को कहा कि खतरा अभी भी बरकरार है और पुलिसकर्मियों को श्रीनगर के एक मैदान में क्रिकेट खेलते समय एक पुलिस अधिकारी पर हमले जैसी घटनाओं को लेकर सतर्क एवं सावधान रहना होगा। श्रीनगर के एक क्रिकेट मैदान में क्रिकेट खेलने के दौरान लश्कर-ए-तैयबा के आतंकवादियों ने जम्मू-कश्मीर पुलिस में निरीक्षक मसरूर अहमद वानी को रविवार को गोली मार दी थी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए थे। डीजीपी सिंह ने एक कार्यक्रम से इतर संवाददाताओं से बातचीत में कहा, हमें सतर्क रहना होगा। आसपास अभी भी खतरा बरकरार है; हम इन्हें हल्के में नहीं ले सकते। हमें सावधान रहना होगा, हमें सतर्क रहना होगा। मैं प्रार्थना करता हूं कि वह (वानी) जल्द ठीक हो जाएं। उन्होंने बताया कि आतंकवादियों ने पुलिसकर्मी पर उस समय हमला किया, जब वह क्रिकेट मैच खेल रहे थे। सिंह ने कहा, हमारे एक अधिकारी लोगों के साथ घुलने मिलने, क्रिकेट खेलने गये थे। वह अधिकारियों की एक टीम के साथ क्रिकेट मैदान में खेल रहे थे। उन्हें गोली मार दी। वह घायल हैं, वह ठीक हो रहे हैं, वह अस्पताल में हैं। यह पूछे जाने पर कि क्या पाकिस्तान आगामी चुनावों के मद्देनजर माहौल को खराब करने की कोशिश करेगा।

सियासत

गारंटी की राजनीति भी है रणनीति का हिस्सा, कोई नहीं अपवाद

नईदिल्ली। राजस्थान और मध्य प्रदेश के विधानसभा चुनावों में महिला मतदाताओं को लुभाने के लिए कांग्रेस क्या सोची-समझी रणनीति के तहत प्रियंका गांधी को आगे कर रही है? महिलाओं- बच्चों से जुड़ी घोषणाओं को प्रियंका गांधी के जरिये गारंटी के रूप में सामने लाया जा रहा है, ताकि महिलाओं को पूरी तरह भरोसे में लिया जा सके। राजस्थान में झुंझुनूं की रैली में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रियंका गांधी को गारंटी कार्ड के रूप में सामने रखा। घर की मुखिया महिला को दस हजार रुपये हर साल दिए जाएंगे और एक करोड़ परिवारों को 500 रुपये में गैस सिलेंडर मिलेगा। इससे सरकार पर साढ़े दस हजार करोड़ का अतिरिक्त खर्च बढ़ेगा। राजस्थान में कांग्रेस और भाजपा के बीच कड़ी टक्कर है और जानकारों के मुताबिक, सत्ता की चाभी महिला व युवा वर्ग के पास है। राज्य में 2.73 करोड़ पुरुष वोटरों के मुकाबले 2.53 करोड़ महिला वोटर हैं, पर वोट डालने में महिलाएं बाजी मार ले जाती हैं। 2018 के विधानसभा चुनाव में राज्य में 74.72 फीसदी वोट पड़े थे। उनमें पुरुष वोटों का प्रतिशत 73.49 था, जबकि 74.67 फीसदी महिलाओं ने वोट दिया था। तब कांग्रेस और भाजपा के बीच 0.54 प्रतिशत का ही अंतर था, यानी कांग्रेस को भाजपा से सिर्फ 1.79 लाख वोट ज्यादा मिले थे।

इस आंकड़े के मद्देनजर महिला वोटरों की अहमियत समझ में आती है। पिछले तीस साल में महिलाओं की वोट देने में भागेदारी तेजी से बढ़ी है। वर्ष

1993 में करीब 60 फीसदी मतदान हुआ था और तब 68 प्रतिशत पुरुषों, जबकि केवल 52 फीसदी महिलाओं ने वोट दिया था। पर अब कहानी बदल गई है। यही वजह है कि दोनों दलों को महिला वोटर याद आ रहे हैं और महिला नेता भी। प्रियंका गांधी ने इससे पहले मध्य प्रदेश में हर महिला को 1,500 रुपये मासिक देने की गारंटी दी थी। आठवीं तक के बच्चों को पांच सौ रुपये, नवीं-दसवीं के बच्चों को एक हजार और ग्यारहवीं-बारहवीं के बच्चों को 1,500 रुपये महीना देने की %पढ़ो-पढ़ाओ योजना% की गारंटी भी उन्होंने दी थी। इससे पहले हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक में भी प्रियंका गांधी से ही गारंटियां दिलाई गई थीं।

गारंटी देने में भी सियासत हो रही है। प्रधानमंत्री मोदी कांग्रेस की गारंटी को चुनावी जुमला बताते हुए कह रहे हैं कि कांग्रेस सिर्फ चुनाव जीतने के लिए गारंटी दे रही है, चुनाव जीतने पर वह भूल जाएगी। दूसरी तरफ, भाजपा की गारंटी को वह मोदी की गारंटी से जोड़ रहे हैं, और कह रहे हैं कि यह मोदी की गारंटी है, जो पूरी की जाएगी।

यह अपने आप में रोचक राजनीति है। एक कह रहा है, हमारी गारंटी पर यकीन करो, तो दूसरा कह रहा है कि हमारी गारंटी पर यकीन करो, क्योंकि हम गारंटी पूरी कर चुके हैं। उधर गारंटी का खेल शुरू करने वाले केजरीवाल भी आम आदमी पार्टी की गारंटी को केजरीवाल की गारंटी बता रहे हैं। मध्य प्रदेश में कांग्रेस ने गृहलक्ष्मी योजना के तहत 1,500 रुपये महीना देने की गारंटी दी, तो मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने लाड़ली बहना योजना की घोषणा कर पहले महीने 1,000 और दूसरे महीने 1,250 रुपये देना शुरू भी कर दिया। अशोक गहलोत ने बीपीएल परिवारों को 500 रुपये में सिलेंडर देना शुरू किया, तो शिवराज चौहान ने 450 रुपये में सिलेंडर देने की घोषणा कर दी। जबकि तेलंगाना में केसीआर ने 400 रुपये में गैस सिलेंडर देने की गारंटी दी है।

राजस्थान और मध्य प्रदेश, दोनों जगह कांग्रेस के पास कोई बड़ी महिला नेता नहीं है। पर जब चुनाव ही महिला वोटरों के आसपास लड़ा जा रहा हो, तो जरूरी हो जाता है कि महिला नेता ही बहनों को गारंटी दे। शौचालय, जन-धन खाते, उज्ज्वला योजना आदि के जरिये प्रधानमंत्री मोदी ने महिला वोटरों के बीच अपनी पैठ बनाई है। मध्य प्रदेश में तो शिवराज सिंह चौहान मामा के रूप में सामने आ गए हैं, लेकिन कांग्रेस का ऐसा कोई जुड़ाव राजस्थान और मध्य प्रदेश में नहीं हो पाया है। इसकी भरपाई भी प्रियंका गांधी के जरिये की जा रही है। एक बात दिलचस्प है।

राज्य में विपक्षी पार्टी आगे की गारंटी दे, तो समझ में भी आता है, पर सत्ता में मौजूद पार्टी जीतने पर गारंटी देने की बात कहे, तो समझ जाना चाहिए कि माजरा क्या है।

कर्जमाफी की घोषणा से भाजपा परेशान: मुख्यमंत्री बघेल

17.5 लाख लोगों को आवास देने का वादा पूरा करेगी कांग्रेस

खैरागढ़। छत्तीसगढ़ में भाजपा को सांप सूंघ गया है। भाजपा ने अभी एक भी घोषणा नहीं की है। कांग्रेस ने फिर से कर्जमाफी की घोषणा की है। इस घोषणा से भाजपा परेशान हो उठी है। यह बात मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने आज जालबांधा में हुई जनसभा में कही। मुख्यमंत्री श्री बघेल ने कहा कि यूपीए की सरकार में मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री थे तो किसानों को 50 से 100 रुपये बोनस मिलता था, लेकिन मोदी के प्रधानमंत्री बनते ही बोनस मिलना बंद हो गया। मैंने प्राधानमंत्री को पत्र लिखा कि बोनस पर आप रोक लगाए हैं, अनुमति देकर रोक हटाइए। कांग्रेस सरकार छत्तीसगढ़ के किसानों को अपने खजाने से बोनस का भुगतान करेगी लेकिन मोदी जी ने आज तक अनुमति नहीं दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले चुनाव में जब हमने बिजली बिल हाफ, 25 सौ रुपये में धान खरीदी का वादा किया तो बीजेपी के लोग भरोसा नहीं कर पा रहे थे। हमने इस बार भी 2640 रुपये में धान खरीदने का वादा किया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मोदी जी साढ़े 14 लाख करोड़ रुपये का कर्ज उद्योगपतियों का माफ करते हैं। हमने किसानों का साढ़े 9 हजार करोड़ रुपये का कर्ज माफ कर दिया तो बीजेपी नेताओं के पेट में दर्द होने लगता है।

मुख्यमंत्री श्री बघेल ने कहा कि हमने 17.5 लाख लोगों को आवास देने का वादा किया है, जिसे पूरा करके रहेंगे। आवास के लिए केंद्र सरकार पैसा दे या न दे। हमने साढ़े सात लाख गरीबों को आवास के लिए पहली किस्त जारी कर दी है।

मुख्यमंत्री श्री बघेल ने कहा कि वैश्विक महामारी में प्रधानमंत्री मोदी ने सरकारी कर्मचारियों की तनख्वाह में कटौती कर दी, दो साल तक सांसद निधि बंद कर दी। लेकिन छत्तीसगढ़ में हमारी सरकार ने न विधायक निधि बंद की और न ही किसी की तनख्वाह में कटौती की। उस दौर में भी हमने किसानों से 19 सौ रूपये में धान खरीदा और मोदी जी ने हमसे चावल लेना बंद कर दिया। हमारी सरकार ने घाटा सह कर बाजार में 13 सौ से 14 सौ धान बेचा लेकिन किसानों को घाटा नहीं होने दिया। कोरोना संकट के समय में हमने तीन महीने का राशन एडवांस में जरूरतमंदों को पहुंचाया। 26 लाख लोगों को मनरेगा से काम दिया। आम, इमली, तेंदूपत्ता खरीदने की व्यवस्था की।

मुख्यमंत्री श्री बघेल ने कहा कि कांग्रेस ने जो वादे किए हैं उसे पूरा करेगी। भूमिहीन मजदूरों को 10 रुपये सालाना, किसानों की कर्ज माफी, तेंदूपत्ता संग्राहकों को 4 हजार रुपये सालाना, लघु वनोपज की एमएसपी पर 10 रुपये की वृद्धि, केजी से पीजी तक निःशुल्क शिक्षा, 17.5 लाख परिवारों को आवास, 10 लाख रुपये तक इलाज का वादा कांग्रेस ने किया है।

अकलतरा से ऋचा जोगी ने भरा नामांकन

जांजगीर चांपा। छत्तीसगढ़ में दूसरे चरण के लिए नामांकन का सोमवार को आखिरी दिन था। नामांकन के आखिरी दिन कई दिग्गजों ने नामांकन भरा।वहीं बसपा प्रभाव वाले जिले जांजगीर चांपा में जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ के उम्मीदवारों ने नामांकन भरकर विरोधियों को चुनौती दी।जांजगीर चांपा के तीनों विधानसभा क्षेत्र से जनता कांग्रेस के उम्मीदवारों ने नामांकन दाखिल किया। अकलतरा विधानसभा से अमित जोगी की ऋचा जोगी, पामगढ़ विधानसभा से गोरेलाल बर्मन और जांजगीर चांपा विधानसभा से रविन्द्र द्विवेदी ने नामांकन दाखिल किया है। नामांकन के पहले जोगी कांग्रेस ने नगर में रैली निकाल कर शक्ति प्रदर्शन किया। इस दौरान अकलतरा विधानसभा सभा के दावेदारी कर रहीं ऋचा जोगी ने कहा कि अकलतरा कि जनता पांच साल से मुलभुत सुविधाओं के आभाव से जूझ रही है।

नक्सलगढ़ चांदामेटा के ग्रामीणों ने चुनावी चौपाल में की सड़क, पानी की मांग

आदिवासियों की रिहाई की रखी शर्त

जगदलपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के महासंग्राम में पहले चरण का मतदान 20 सीटों पर 7 नवंबर को होगा। इन 20 सीटों में बस्तर की 12 सीटें भी शामिल है।

जगदलपुर विधानसभा क्रमांक 86 के चांदामेटा गांव में मतदाताओं की चौपाल लगाई गई। चांदामेटा के ग्रामीणों ने मीडिया को बताया कि इस साल के चुनाव में ग्रामीण उसे वोट देंगे जो गांव का पूर्ण विकास करेगा। गांव की हर गली में सड़क हो। साफ पीने का पानी मिले। गांव के रहने वाले हर परिवार को रहने के लिए घर मिले, पूरी तरह से गांव का विकास हो, उसे ही वोट डाला जाएगा।

चांदामेटा के एक और ग्रामीण ने बताया कि गांव के कई लोगों को जेल में रखा गया है। कुछ लोगों को छोड़ा गया है लेकिन गांव के कुछ लोग अभी भी जेल में बंद है। प्रशासन से नेताओं से मांग की जा रही है कि जेल में बंद चांदामेटा के ग्रामीणों की जेल से रिहाई की मांग की गई हैं। साफ रूप से कह दिया गया है कि जो जेल में बंद लोगों को बाहर निकालेगा उन्हें वोट दिया जाएगा।

जो सरकार अच्छे से काम करेगी, उसे वोट देंगे। रोड, सीसी रोड, हर घर में नल होना चाहिए। गांव में अब तक कांग्रेस भाजपा का कोई नेता नहीं पहुंचा है, लेकिन हम अपने मन से सोच कर वोट देंगे। गांव में ही मतदान केंद्र बन जाने से गांव के वोटर्स ने

खुशी जताई। गांव वालों ने बताया कि पहले 6 किलोमीटर दूर छिंदगुर में वोट डालने के लिए जाया करते थे। लेकिन अब चांदामेटा में ही मतदान केंद्र बनने के कारण काफी राहत महसूस कर रहे हैं।

गांव वालों को कहना है कि जेल में बंद लोगों को यदि बाहर निकाला नहीं गया तो अगली बार दूसरी पार्टी को वोट देंगे।गांव की युवती ने बताया कि वह खेती किसानी का काम करती है। गांव में सड़क बनने से उन्हें खुशी होगी। युवती ने गांव के जेल में बंद लोगों को निकालने की भी मांग की है।

जगदलपुर के चांदामेटा में पहली बार मतदान केंद्र खोला गया है। जिससे गांव के लोग काफी खुश और उत्साहित है। चांदामेटा में मतदान केंद्र नहीं खुलने से यहां के गांव वालों को वोट डालने 6 किलोमीटर पैदल चलकर छिंदगुर जाना पड़ता था। काफी दूर होने के कारण बुजुर्ग मतदाता अपना वोट नहीं डाल पाते थे। लेकिन अब मतदान केंद्र चांदामेटा में ही खुलने से ग्रामीण खुश है।

वैशाली नगर के चुनावी रण में शवों को जलाने वाला प्रत्याशी

■ **अब तक एक लाख शवों को जलाने का दावा**

भिलाई। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में दूसरे चरण के मतदान के लिए नामांकन का आखिरी दौर चल रहा है। जिसमें 70 विधानसभा सीटों के लिए मुकाबला होगा।दूसरे फेज में सीएम भूपेश बघेल से लेकर डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव जैसे दिग्गजों की किस्मत दाव पर लगेगी।लेकिन दिग्गजों के बीच इस चुनाव में कुछ प्रत्याशी ऐसे हैं,जो नेताओं की तरह फेमस नहीं हैं।लेकिन ये कुछ ऐसा करते हैं जिसे करने के लिए शायद कोई भी सौ बार जरुर सोचेगा।ऐसे ही प्रत्याशी हैं वैशाली नगर विधानसभा से शंकर लाल साहू। जिनका काम ही उनका नाम है।

शंकर लाल साहू पिछड़ा वर्ग से आते हैं। शंकर लाल भी इस विधानसभा चुनाव में अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। वैशाली नगर में शायद ही कोई ऐसा हो जो इन्हें ना जानता हो। क्योंकि इनका काम ऐसा है जिसे देखकर किसी का भी दिल पसीज जाता है। शंकर लाल साहू का कोई भी

राजनीतिक बैकग्राउंड नहीं है।ना ही किसी ऐसे नेता से संपर्क जिनके बूते इन्हें पहचान मिली हो।फिर भी अपने काम से ही शंकरलाल जाने जाते हैं। शंकर लाल रामनगर मुक्तिधाम में पिछले 35 साल से दाह संस्कार का काम करवाते हैं।अब तक शंकरलाल 1 लाख शवों का अंतिम संस्कार करवा चुके हैं।

शंकरलाल को बचपन से अभिनय करने का भी शौक है। अब तक कई छत्तीसगढ़ी फिल्म और एल्बम में शंकरलाल काम कर चुके हैं।उनका ये भी दावा है कि छत्तीसगढ़ के चार चिनहारी नरवा गरवा घुरवा बाड़ी गीत उन्होने ही लिखा है। जो आज छत्तीसगढ़ के हर किसी की जुबान पर है।चुनाव लड़ने के लिए उनके पास ज्यादा पैसा तो नहीं है।लेकिन वो जनसहयोग करके इस चुनाव में अपनी किस्मत आजमाने जा रहे हैं। शंकर लाल साहू ठेकेदारी में भिलाई रामनगर मुक्तिधाम में शव जलाने का काम करते हैं। कोविड के दौरान भी जब परिवार के लोग शव को मुक्तिधाम में छोड़कर भाग जाते थे।तब वो लावारिस शवों का भी अंतिम संस्कार करते थे। कोविड के दौरान शंकरलाल ने करीब 80 शवों का दाह संस्कार किया है। शंकरलाल का कहना है कि वो जिस काम को करते हैं।उसमें भी अब भ्रष्टाचार ने अपने पांव पसार लिए हैं। शंकरलाल का वेतन 12 हजार रुपए है।लेकिन ठेकेदार उसमें भी कमीशन मांग लेता है।

शंकरलाल की माने तो वैशाली नगर में विकास के नाम पर सिर्फ लोगों के साथ छल हुआ है। वैशालीनगर आज भी विकास के लिए तरस रहा है। शंकरलाल अब तक एक बार विधायक, महापौर और दो बार पार्षद चुनाव लड़ चुके हैं।इस बार स्वाभिमान मंच के बैनर तले 5वीं बार चुनाव लड़ने जा रहे हैं। शंकरलाल का कहना है अगर यदि वे जीतकर आते हैं तो वैशाली नगर की तस्वीर बदल देंगे।

आजादी के 76 साल बाद नक्सलगढ़ चांदामेटा में पहली बार बना मतदान केंद्र, लंबा सफर हुआ खत्म

जगदलपुर। आगामी 7 नवंबर को होने वाले लोकतंत्र के महापर्व में बस्तर इतिहास रचने जा रहा है। बस्तर के अंतिम छोर में बसे नक्सलगढ़ में एक ऐसा गांव बसा है, जहां पहली बार मतदान केंद्र बना है। इस गांव की गूंज दिल्ली तक है।

बस्तर संभाग के जगदलपुर जिले के विधानसभा क्रमांक 86 का चांदामेटा गांव है। ये गांव हमेशा से ही सुर्खियों में रहा है। साल भर पहले इस गांव में स्कूल बनाया गया। उसके पहले साल 2022 में पुलिस चौकी बनाई गई और आजादी के पर्व पर पहली बार तिरंगा फहराया गया। अब इस गांव के नाम एक और उपलब्धि जुड़ी है और वो है पहली बार मतदान केंद्र। चांदामेटा के इस मतदान केंद्र में 7 नवंबर को 335 मतदाता अपना वोट डालेंगे। जिसे लेकर यहां के लोग काफी खुश और उत्साहित है।

चांदामेटा गांव के ग्रामीणों ने बताया कि उनके ही गांव में मतदान केंद्र बनने से उन्हें काफी खुशी हो रही है। पहले चुनाव में वोट डालने के लिए 6 किलोमीटर का पैदल सफर तय करके छिंदगुर गांव जाना पड़ता था। पहाड़ी और उबड़ खाबड़ रास्ता होने के कारण काफी समय लग जाता था। उनका पूरा दिन ही आने-जाने व वोट डालने में निकल जाता था।

ग्रामीण ने कहा लंबी दूरी होने के कारण गांव

के बुजुर्ग वोट डालने के लिए मतदान केंद्र नहीं पहुंच पाते थे। अब चांदामेटा गांव में ही मतदान केंद्र खुलने से लोग उत्साहित है। पहले छिनगुर जाते थे वोट डालने, तीन बार छिनगुर गांव जाकर वोट डाले थे लेकिन इस बार गांव में ही वोट डालेंगे।

चांदामेटा में स्थित पुलिस कैंप से करीब 200 मीटर दूर नक्सलियों का ट्रेनिग कैम्प था। जहां नक्सलियों की पूरी ट्रैनिग होती थी। 1 साल पहले इस क्षेत्र में डर का माहौल था। इस इलाके तक कोई आना नहीं चाहते थे। लेकिन कैंप लगने के बाद हालात बदल गए हैं। चांदामेटा में तैनात सीआरपीएफ 80 बटालियन के कंपनी कमांडर राजू नामदेव वाघ ने बताया कि यहां काफी चुनौती पूर्ण था। कैंप लगने के बाद भी कई हादसे हुए। लेकिन अब लोग काफी सुरक्षित महसूस कर रहे हैं।

राजू नामदेव वाघ ने कहा चुनाव को लेकर हमारी पूरी तैयारी है, पूरे एरिया को सिक्योर किया गया है। सीआरपीएफ, डीआरजी के जवान चप्पे चप्पे पर तैनात है। गांव में पहली बार वोटिंग को लेकर गांव वाले काफी उत्साहित भी है।

बस्तर कलेक्टर ने कहा चांदामेटा इलाके से जानकारी मिल रही है कि ग्रामीण काफी उत्साहित है। पहली बार अपने ही गांव में निर्भीक होकर खुद को सुरक्षित महसूस करके वोट डालने मतदान केंद्र पहुंचेंगे। जिसको लेकर ग्रामीणों में काफी उत्साह है।

छत्तीसगढ़ ओडिशा बॉर्डर के चांदामेटा गांव में भले ही पहली बार मतदान केंद्र बनाया गया हो लेकिन यहां के वोटर, चुनाव और एक एक वोटों की कीमत अच्छे से जानते हैं इसी वजह से गांव के आदिवासियों ने चांदामेटा में पोलिंग बूथ बनाने की डिमांड प्रशासन से की जो पूरी हुई।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

कबीरधाम में आज भी मतदान घर से कर सकेंगे वोटिंग

कबीरधाम। भारत निर्वाचन एवं मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी छत्तीसगढ़ के निर्देशों के अनुपालन में कबीरधाम जिले के कवर्धा और पंडरिया विधानसभा में चालीस प्रतिशत से ऊपर दिव्यांग और 80 वर्ष से ऊपर के बुजुर्ग सोमवार को मतदान किया। 31 अक्तूबर को भी वोट डाले जाएंगे। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी जनमेजय महोबे ने बताया कि आज 30 अक्तूबर को सुबह कबीरधाम कलेक्टोरेट कार्यालय स्थित जिला निर्वाचन कार्यालय से मतदान दल को रवाना किया गया। भारत निर्वाचन आयोग एवं मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी छत्तीसगढ़ के दिशा-निर्देशों के अनुसार, विधानसभा आम निर्वाचन 2023 में 40 प्रतिशत से अधिक दिव्यांग (दिव्यांग प्रमाण पत्र अनिवार्य है) और 80 वर्ष से अधिक बुजुर्ग मतदाताओं को इस बार घर बैठे मतदान कराने की सुविधा दी गई है। जिले के पंडरिया एव कवर्धा विधानसभा क्षेत्र के कुल 450 मतदाताओं ने घर बैठे मतदान कराने के लिए बीएलओ के माध्यम से सहमति दी है। मतदान का समय सुबह 8 बजे शाम 5 बजे निर्धारित है।

धान कटाई कर रहे लोगों को शत प्रतिशत मतदान के लिए दिलाई गई शपथ

गौरेला पेंड्रा मरवाही। विधानसभा आम चुनाव में शत प्रतिशत मतदान के लिए भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार स्वीप कार्यक्रम चलाया जा रहा है। कार्यक्रम के तहत कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती प्रियंका ऋषि महोबिया के मागदर्शन और स्वीप के जिला नोडल अधिकारी श्री कौशल प्रसाद तेदुलकर के निर्देशन में आज विकासखण्ड पेण्ड्रा के ग्राम पतगवां में धान कटाई कर रहे लोगों सहित कोटमीकला में समूह की महिलाओं और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को शत प्रतिशत मतदान की शपथ दिलाई गई। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के जिला मिशन प्रबंधक श्री दुर्गाशंकर सोनी ने सभी को लोकतंत्र को मजबूत बनाने स्वतंत्र एवं निष्पक्ष मतदान की शपथ दिलाई। इस अवसर पर प्रभारी जिला कार्यक्रम प्रबंधक अभिषेक जायसवाल, विकासखण्ड परियोजना प्रबंधक सुश्री मंदाकिनी कौशरिया उपस्थित थी।

ट्रेलर ने बाइक सवार को मारी टक्कर, किया चक्काजाम

कोरबा। सर्वमंगला कनबेरी मार्ग में तेज रफ्तार ट्रेलर के चालक ने बाइक सवार को टक्कर मार दी। हादसे में सब्जी छोड़ने जा रहा युवक गंभीर रूप से घायल हो गया है। उसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती किया गया है। घटना से आक्रोशित ग्रामीणों ने मौके पर चक्काजाम कर दिया। जिसके बाद पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और लोगों को समझाने का प्रयास कर रही है। घटना सोमवार सुबह करीब 6 बजे की है। बताया जा रहा है कि सर्वमंगला पुलिस चौकी अंतर्गत चंद्रनगर जटराज निवासी भागीरथी पटेल खेती बाड़ी का काम करता है। वह प्रतिदिन की तरह अपनी बाइक पर सब्जी लेकर सर्वमंगला चौक जा रहा था। वह गांव के समीप जोड़ा पुल के पास पहुंचा था। इसी दौरान तेज रफ्तार ट्रेलर सीजी 12 एयू 1380 के चालक ने लापरवाही पूर्वक वाहन चलाते हुए बाइक क्रमांक सीजी 12 एटी 6845 को टक्कर मार दी। घटना में बाइक सवार भागीरथी पटेल को गंभीर चोटे आई हैं। लोग मौके पर एकत्रित होते इससे पहले चालक वाहन छोड़ भाग निकला।

श्रीराम को हुई पीड़ा को जानने, पैदल यात्रा पर निकला अक्षय

गरियाबंद। आराध्य देव श्रीराम जी को वनवास के दौरान हुए कष्ट को जानने एवं युवाओं में श्रीराम के आदर्श को स्थापित करने के उद्देश्य से पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले के बुर्दा गांव के 25 वर्षीय युवक अक्षय भगत अयोध्या से पैदल यात्रा पर निकले हुए हैं । इससे पहले बाल विवाह के खिलाफ जागरूकता अभियान को लेकर साइकिल से भारत यात्रा कर चुके हैं, साथ ही अफ्रीका के चार देश केनिया , यूगांडा ,रवांडा ,तंजानिया,सहित बांग्लादेश की यात्रा साइकिल से पूरी की है। अब प्रभु श्रीराम के वन गमन मार्ग से यात्रा करते हुए श्रीलंका तक सफर करेंगे। अक्षय भगत अयोध्या होते हुए प्रयागराज , चित्रकूट ,सतना छत्तीसगढ़, पंचवटी, हम्पी होते हुए रामसेतु तक यात्रा करेंगे। तीन हजार किलोमीटर से ज्यादा का यह सफर तय करने में चार से पांच माह का समय लगेगा। अक्षय भगत के राजिम पहुंचने पर हिंदू संगठनों ने उनका स्वागत किया इसके अलावा पूर्व सांसद चंदूलाल साहू भी उनका स्वागत कर सफल यात्रा की शुभकामनाएं दी।

कबीरधाम एसपी का पुराना वीडियो को जोड़कर किया वायरल

कबीरधाम। सोशल मीडिया में काफी एक्टिव रहने वाले कबीरधाम एसपी डॉ.अभिषेक पल्लव का एक वीडियो वायरल हो रहा है। इस वीडियो को कबीरधाम जिले से जोड़कर बताया जा रहा है। यह वीडियो बीते दो दिनों में जिले के विभिन्न सोशल मीडिया ग्रुप में तेजी से वायरल हुआ। इस वीडियो को लेकर एसपी डॉ.अभिषेक पल्लव ने बयान जारी किया है। उन्होंने बताया कि जो वीडियो वायरल किया जा रहा है, वो कबीरधाम जिले से नहीं है। वे इसी साल मार्च माह में दुर्ग एसपी रहने के दौरान चोरी की घटना को लेकर प्रेस कांफ्रेंस लिए थे। जिसमें बांग्लादेश के चोर पश्चिम बंगाल में आकर फर्जी आधार कार्ड बनवाए थे और घूम घूम कर चोरी कर रहे थे। लेकिन, कुछ लोगों द्वारा मेरे पुराने वीडियो को कवर्धा का वीडियो बताकर कवर्धा में मुसलमानों के द्वारा फर्जी आधार कार्ड बनाकर रहने की बात की जा रहीं है, जो गलत है। मेरे द्वारा कवर्धा में इस तरह कोई भी प्रेस कॉफ्रेंस नहीं लिया गया है। वीडियो को वायरल व फॉरवर्ड करेंगे, उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जा सकती है।

घने जंगल और नालों को पार कर मतदान कराने पहुंचे मतदान कर्मी

कांकेर। भारत निर्वाचन आयोग ने विधानसभा निर्वाचन में सभी मतदाताओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए कई पहल की गई है। इसी क्रम में आयोग ने 80 वर्ष से अधिक उम्र के वरिष्ठ नागरिकों को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो, इसके लिए उनके घर पर ही मतदान करने की सुविधा दी है। जिले के वरिष्ठजन भी उत्साह के साथ लोकतंत्र के इस पर्व में मताधिकार का प्रयोग कर रहे हैं।

कांकेर में 80 वर्ष से अधिक उम्र के वरिष्ठ नागरिकों के मतों को लेने मतदान कर्मियों का एक वीडियो सामने आया है। जिसमे जवानों के सुरक्षा के बीच घने जंगलों और नदी-नाले पार पर मतदानकर्मी वोट लेने जा रहे है। यह वीडियो अंतागढ़ विधानसभा क्षेत्र का बताया जा रहा है। अंतागढ़ विधानसभा क्षेत्र में सबसे ज्यादा नक्सल संवेदनशील मतदान केंद्र हैं। नक्सल प्रभावित होने के साथ ही क्षेत्र घने जंगलों, पहाड़ों और छोटे-छोटे नालों की अधिकता के कारण रास्ते में कई कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। मतदानकर्मी कठिन रास्तों को पार कर वोट लेने उनके घर पहुंच रहे हैं।

जिला निर्वाचन अधिकारी प्रियंका शुक्ला ने बताया, ऐसे मतदाता, जो 80 वर्ष से अधिक उम्र वाले और 40 प्रतिशत से अधिक दिव्यांगता वाले हैं, वोट डालने नहीं जा सकते। उनके वोट डाक मतपत्र से लेने मतदान दल घर-घर पहुंचा। जिले की कांकेर, अंतागढ़ और भानुप्रतापपुर विधानसभा में ऐसे कुल 306 वोटर थे। 3 दिनों में मतदान दल सभी के घर पहुंचा तथा 298 ने

वोट किया। इनमें से 4 की मृत्यु हो चुकी थी। बाकी 4 नोटिस समय में घरों से अनुपस्थित पाए गए।

कांकेर कलेक्टर डॉ प्रियंका शुक्ला ने कहा कांकेर में सबसे अधिक भानुप्रतापपुर विधानसभा 195 ऐसे वोटर हैं। इनमें से 169 बुजुर्गों में 167 ने वोट दिया। वहीं 26 दिव्यांगों में 25 ने मतदान किया। यहां मतदान का प्रतिशत 98 फीसदी रहा। कांकेर विधानसभा में ऐसे 75 वोटर हैं। इनमें 53 बुजुर्ग और 22 दिव्यांग हैं। आयोग के निर्देश पर यह अभियान चलाया गया। 3 दिनों में मतदान पूर्ण हो चुका हो चुका है।

कांकेर में पहले फेस के तहत 7 नवंबर को मतदान होना है। मतदान केंद्र के रास्ते में नदी-नाले पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण पोलिंग बूथ तक पहुंचना मुश्किल होता है। इसलिए कांकेर जिले के 8 पोलिंग बूथ पर मतदान कर्मियों को सेना के हेलीकॉप्टर से उतारा जाएगा। इसके लिए सेना के हेलीकॉप्टर एमआई 13 ने लैडिंग को लेकर अभ्यास भी किया गया है।

वरिष्ठ मतदाताओं में जिले के अंतागढ़ विधानसभा क्षेत्र के कोयलीबेड़ा इलाके के ग्राम मरकानार निवासी 88 वर्षीय घसियाराम चक्रधारी हैं। शारीरिक रूप से कमजोर होने के कारण घसियाराम ने घर पर ही डाक मत पत्र के माध्यम से वोट डाला। घसियाराम ने युवा मतदाताओं के सामने एक मिसाल प्रस्तुत की है। घसियाराम ने बताया कि वो वर्ष 1953 से अब तक सभी लोकसभा और विधानसभा निर्वाचन में मतदान करते आ रहे हैं।

सामान्य प्रेक्षक ने निर्वाचन तैयारियों की समीक्षा की

गौरेला पेंड्रा मरवाही। जिले में विधानसभा आम निर्वाचन के पर्यवेक्षण के लिए भारत निर्वाचन आयोग द्वारा नियुक्त सामान्य प्रेक्षक श्री शांतनु साहा ने आज कलेक्ट्रेट के अरपा सभाकक्ष में निर्वाचन कार्य से सम्बद्ध सभी सेक्टर अधिकारियों, नोडल अधिकारियों, स्थैतिक निगरानी दलों, उड़नदस्ता दलों एवं मास्टर ट्रेनर्स की बैठक लेकर तैयारियों की समीक्षा की। उन्होने तैयारियों की विस्तृत समीक्षा के बाद बैठक में उपस्थित सभी अधिकारियों को सचेत होकर स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव सम्पन्न कराने के निर्देश दिए। उन्होने कलेक्ट्रेट में स्थापित नाम निर्देशन कक्ष, शिकायत एवं नियंत्रण कक्ष तथा वहां संधारित पंजी का अवलोकन किया। उन्होने दिव्यांग एवं 80 वर्ष से ऊपर के मतदाताओं द्वारा मतदान हेतु प्रारूप 12 क में दिए गए सहमति पत्रों और इसके लिए संधारित पंजी का भी अवलोकन किया। सामान्य प्रेक्षक ने स्ट्रांग रूम, मतगणना कक्ष, मतदान सामग्री प्रबंधन शाखा सहित मतदान दलों को मतदान सामग्री देने, उनके आगमन, प्रस्थान, वाहन एवं रूट चार्ट की जानकारी ली। उन्होने मतदान के बाद ईवीएम मशीनों को स्ट्रांग रूम में रखने तथा मतगणना के दौरान स्ट्रांग रूम से ईवीएम मशीनों को मतगणना केंद्र में ले जाने की प्रक्रिया की पारदर्शिता और उम्मीदवारों एवं पार्टी के अवलोकनार्थ सीसीटीवी कैमरा एवं डिस्प्ले स्क्रीन की व्यवस्था का भी जानकारी लिया और आवश्यक निर्देश दिए।

त्रिकोणीय मुकाबले में फंसे सीएम भूपेश

रायपुर। जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ जोगी (जेसीसीजे) के प्रदेश अध्यक्ष अमित जोगी ने छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले की पाटन विधानसभा सीट से सोमवार को नामांकन दाखिल कर दिया है। ऐसे में पाटन की वीआईपी हाई प्रोफाइल सीट पर चुनावी लड़ाई काफी रोचक हो गई है। वहां पर अब कांटे की टक्कर होगी। पाटन से चाचा-भतीजा (दुर्ग सांसद विजय बघेल और सीएम भूपेश बघेल) के चुनावी मुकाबले के बीच अमित जोगी के आने से वहां पर अब चुनाव त्रिकोणीय हो चुका है। जनता कांग्रेस के मुखिया अमित जोगी ने नामांकन दाखिल कर इस सीट के मुकाबले को त्रिकोणीय बना दिया है। इससे ये पहले खबर आ रही थी कि वो चुनाव नहीं लड़ेंगे अपने पार्टी के प्रत्याशियों के लिए ही चुनाव प्रचार-प्रसार करेंगे, उन्होंने खुद चुनाव लड़ने के लिए कोर्ट से अनुमति मांगी थी। अब उनके पाटन से नामांकन दाखिल करते ही प्रदेश की सियासत गरमा गई है। राजनीतिक गलियारे तरह-तरह की चर्चाएं हो रही हैं।

अमित ने किया ट्वीट

इसी बीच अमित जेगी ने ट्वीट कर लिखा कि मैंने पाटन से आज अपना नामांकन भरा है। ये चुनाव %भूपेश% नही %भ्रष्टाचार% के विरुद्ध है। यह एक ताकतवर दाऊ %परिवार% बनाम पाटन के गरीब, अनुसूचित जाति-जनजाति, अति पिछड़ा वर्गों के %अधिकार% का चुनाव है। मैं तो केवल चेहरा हूं, प्रत्याशी तो पाटनवासी हैं, प्रत्याशी तो पीएससी घोटाला पीड़ित हैं, आवास पीड़ित हैं, वादाखिलाफी पीड़ित हैं, नियमितीकरण पीड़ित हैं, शराबबंदी पीड़ित हैं। मैं तो भ्रष्टाचार के विरुद्ध, इन सभी पीड़ितों का प्रतिनिधित्व कर रहा हूं। मेरे पास %सेफ% सीट से जीतने के तीन विधानसभाओं के विकल्प थे, मैं दो सीटों से भी लड़ सकता था लेकिन मैंने अकेले पाटन से ही लड़ने का निर्णय पाटनवासियों के कहने पर लिया है। मैंने पिछले एक महीने में पाटन विधानसभा क्षेत्र में तीन बड़ी सभाएं की हैं। मेरे आने के बाद, पाटन में पहली बार चुनाव होगा, अभी तक तो एक ही परिवार के चाचा-भतीजा की सेटिंग होती आयी है, चुनाव तो अब होगा।

किसको हो सकता है नफा-नुकसान

पाटन विधानसभा सीट का सियासी समीकरण देखा जाए तो अमित जोगी की यहां से चुनाव लड़ने पर मुकाबला त्रिकोणीय हो गया है। अमित जोगी के इस रणनीति के पीछे बहुत बड़े मायने हैं। वो चाहते तो मरवाही, कोटा या अन्य जगह से भी चुनाव लड़ सकते थे, लेकिन वो पाटन से चुनाव लड़ने का फैसला कर राज्य की कांग्रेस सरकार को घेरने का काम किया है। ऐसे में यहां से कांग्रेस को नुकसान और बीजेपी को फायदा मिल सकता है। कांग्रेस के वोट बैंक प्रभावित होंगे। क्योंकि जोगी के चुनाव लड़ने से कांग्रेस के वोटर्स बंट जाएंगे जबकि बीजेपी को नुकसान कम फायदा ज्यादा हो सकता है। जेसीसीजे सीएम भूपेश बघेल की कांग्रेस सरकार की सीटों को कम करने की रणनीति के तहत काम कर रही है। पार्टी सबसे ज्यादा नुकसान कांग्रेस को ही पहुंचा सकती है। कांग्रेस शुरू से ही आरोप लगा रही है कि जेसीसीजे बीजेपी की बी टीम के रूप में काम कर रही है। एक बार फिर उन्हें ऐसा कहने का अवसर मिल गया है।

एक समय कांग्रेस में विलय होना चाहती थी पार्टी

अजीत जोगी के निधन के बाद उनकी पार्टी कांग्रेस में विलय करना चाहती थी। अजीत जोगी की पत्नी रेणु जोगी ने कांग्रेस हाईकमान से इस बारे में बात की थी। राजनीतिक गलियारों में इस बात की चर्चाएं थीं कि सोनिया गांधी की तरफ से सहमति भी मिल गई थी। कांग्रेस हाईकमान के राजी हो जाने के बाद भी स्टेट लीडरशिप ने इस विलय को नहीं होने दिया था। इसके पीछे की वजह अमित जोगी बताए जाते हैं। राजनीतिक जानकार कहते हैं कि पार्टी किसी भी हालत में अमित जोगी को कांग्रेस में शामिल नहीं करना चाहती थी। कयास ये भी कि अमित अब वही निजी बदला भूपेश से चुनावों में लेना चाहते हैं। अजीत जोगी के अलग पार्टी बना लेने के बाद रेणु जोगी लंबे समय तक कांग्रेस में बनी रहीं थीं। वह अपने रिश्ते गांधी परिवार से मानती रही हैं।

पाटन का जातीय समीकरण

बीजेपी ने पाटन विधानसभा सीट पर भूपेश बघेल के चाचा और बीजेपी से दुर्ग सांसद विजय बघेल को चुनावी मैदान में उतारा है। वहीं कांग्रेस से सीएम भूपेश बघेल खुद चुनाव लड़ रहे हैं। दोनों कुर्मी समाज से हैं और कुर्मी ओबीसी वर्ग से आते हैं, जिसकी इस क्षेत्र में बड़ी आबादी है। विधानसभा क्षेत्र में ओबीसी वोटर्स का दबदबा है। यहां साहू और कुर्मी वोटरों की संख्या सबसे अधिक है। ऐसे में इस जाति के लोग जिस भी उम्मीदवार को समर्थन देंगे उसकी जीत तय मानी जाती है। इस सीट पर सतनामी समाज और सामान्य वर्ग के वोटर्स की संख्या कम है। पाटन सीट से भूपेश बघेल लगातार चुनाव जीतते आ रहे हैं। कांग्रेस ने उन्हें साल 1993 से लेकर अब तक छह बार चुनावी मैदान में उतार चुकी है, जिनमें वो पांच बार बाजी मारी है। वर्ष 2008 में एक बार भाजपा का खाता खुला था। विजय बघेल ने भूपेश बघेल को हराया था। भाजपा इस बार फिर इसी आधार पर विजय बघेल को चुनाव लड़ा रही है।

पिछले विधानसभा चुनाव का परिणाम

2018 का विधानसभा चुनाव का परिणाम देखें तो भूपेश बघेल ने बीजेपी प्रत्याशी मोतीलाल साहू को करीब 27 हजार 477 मतों से हराया था। उस समय कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष होने के नाते भूपेश बघेल के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ने 90 विधानसभा सीटों में से 68 सीटों पर अपनी जीत दर्ज की थी भूपेश बघेल छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री बन थे।

राहुल प्रियंका की घोषणाओं पर भाजपा का हमला, टीएस सिंहदेव का पलटवार

रायपुर। छत्तीसगढ़ में प्रियंका गांधी ने ताबड़तोड़ चुनावी सभाएं ली।इस दौरान प्रियंका गांधी ने कई सारी घोषणाएं भी की हैं। जिन्हें लेकर टीएस सिंहदेव ने बयान दिया है। प्रियंका गांधी के संभावित घोषणाओं को लेकर टीएस सिंहदेव ने कहा कि हम सब एक सोच को लेकर चल रहे लोगों को घोषणा पत्र का इंतजार है।

पिछले चुनाव में हमने कई घोषणाएं की थी। एक-एक करके सब घोषणाओं को हाईकमान से अनुमति लेने के बाद पूरा किया गया था।इस बार भी ऐसा ही होगा।

पूर्व केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद के राहुल गांधी से हिसाब मांगने के सवाल पर डिप्टी सीएम ने कहा हम हिसाब देने ही लोगों के बीच में जा रहे हैं। बहुत महत्वपूर्ण चीजें हमने की हैं। जिन बातों की घोषणाएं नहीं की, वो भी पूरा कर रहे। इसके अलावा अरुण साव के बयान पर टीएस सिंहदेव ने पलटवार किया है।आपको बता दें कि अरुण साव ने कहा था कि जहां कांग्रेस के नेता जा रहे हैं वहां उन्हें जनता दौड़ा रही है।इसी के डर से घोषणाएं कर रहे हैं। टीएस सिंहदेव ने कहा सरकार के प्रतिनिधि के रूप में मुझे 5 साल हो गए। अभी तक किसी ने नहीं दौड़ाया। अरुण साव को कौन दिख गया, जिन्हें दौड़ाया जा रहा। वहीं राहुल गांधी के आम जनता को परेशान करने वाले बयान पर डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव ने कहा कि किसानों ने राहुल गांधी को खुलकर अपनी बातें बताई। राहुल ने किसानों से भाव पूछा, उन्होंने सभी बातें साझा की। किसानों ने बताया कि अब वे कर्ज से मुक्त हैं। उनके पास कोई कर्ज नहीं, धान के सही दाम उन्हें मिल रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

2 नवंबर को कांकेर और 4 नवंबर को दुर्ग में रैली करेंगे पीएम नरेंद्र मोदी

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव का पहला चरण 7 नवंबर को है। उससे पहले कांग्रेस भाजपा के दिग्गजों का लगातार छत्तीसगढ़ दौरा हो रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 2 नवंबर को कांकेर का दौरा करेंगे। 4 नवंबर को दुर्ग में सार्वजनिक सभा को संबोधित करेंगे। कांकेर में तीन विधानसभा सीटें हैं। कांकेर, भानुप्रतापपुर और अंतागढ़ विधानसभा। इन तीनों सीटों पर पहले चरण में 7 नवंबर को मतदान होगा। 3 दिसंबर को वोटिंग होगी। कांकेर की अंतागढ़ सीट इस समय हाई प्रोफाइल सीट बन गई हैं। यहां से बागी कांग्रेस विधायक अनूप नाग टिकट नहीं मिलने से निर्दलीय चुनाव लड़ रहे हैं। कांग्रेस ने उन्हें पार्टी से निष्कासित भी कर दिया है। राजनांदगांव, खैरागढ़, डोंगरगढ़, डोंगरगांव, खुज्जी, मोहला मानपुर, कवर्धा, पंडरिया में 7 नवंबर को पहले चरण में चुनाव है। 3 दिसंबर को मतगणना होगी। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 के लिए भाजपा ने अब तक मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार की घोषणा नहीं की है। पीएम मोदी के चेहरे पर ही भाजपा चुनाव लड़ रही है। जबकि कांग्रेस में डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव कई बार कह चुके हैं कि कांग्रेस में मुख्यमंत्री पद की रेस के लिए सीएम भूपेश बघेल ही लाइन में पहले नंबर पर हैं। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव दो चरणों में हो रहा है। पहले चरण में 7 नवंबर को 90 में से 20 सीटों पर मतदान होना है। इसमें बस्तर संभाग की 12 सीटें और दुर्ग संभाग की 8 सीटों पर चुनाव हो रहा है। 5 नवंबर को पहले चरण के मतदान के लिए चुनाव प्रचार खत्म होगा। दूसरे चरण का मतदान 17 नवंबर को होगा। वोटों की गिनती 3 दिसंबर को होगी।

रायपुर में फर्स्ट टाइम वोटर्स मैराथन, प्रथम 100 विजेताओं को मिलेगा सीएम से मिलने का मौका

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 के लिए 7 नवंबर को पहले चरण का चुनाव हो रहा है। 17 नवंबर को दूसरे चरण का चुनाव है। विधानसभा चुनाव 2023 में पहली बार वोट देने वाले युवाओं की संख्या करीब 18 लाख है। इन फर्स्ट टाइम वोटर्स को मतदान के लिए प्रेरित करने कांग्रेस की ओर से रायपुर में फर्स्ट टाइम वोटर मैराथन का आयोजन किया गया। जिसमें 18 से 25 साल के युवा मतदाता भारी संख्या में शामिल हुए। कांग्रेस खेल विभाग के पदाधिकारी, महापौर और कई वरिष्ठ नेताओं ने भी मैराथन में शामिल हुए। कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने मैराथन से जुड़ी जानकारी साझा की है। मैराथन में प्रथम आने वाले 100 विजेताओं को मुख्यमंत्री भूपेश बघेल से मुलाकात करने का मौका मिलेगा। इस मैराथन का आयोजन कांग्रेस द्वारा फर्स्ट टाइम वोटरों को मतदान के लिए प्रोत्साहित करने के लिए किया गया। मैराथन में रजिस्ट्रेशन ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरीकों से किया गया था। सुशील आनंद शुक्ला ने बताया, इस मैराथन में प्रथम 100 विजेताओं से सीएम भूपेश बघेल विशेष मुलाकात करेंगे। इस मैराथन दौड़ में 18 साल से 25 साल तक की आयु वर्ग के प्रतिभागियों ने भाग लिया। मैराथन रायपुर स्थित तेलीबांधा तालाब से सुबह 7 बजे शुरु हुआ, जो घड़ी चौक होते हुए गांधी मैदान में जाकर खत्म हुआ। इस मैराथन में खेल विभाग से जुड़े हस्तियों ने भी शिरकत की। उन्होंने अपने खेल के फर्स्ट टाइम एक्सपीरियंस को लोगों के बीच साझा किया। साथ उन्होंने फर्स्ट टाइम वोटरों से अपील किया कि उनका फर्स्ट टाइम वोट करने का यह एक्सपीरियंस जीवन भर याद रहने वाला है। इसलिए ज्यादा से ज्यादा फर्स्ट टाइम वोटर मतदान करें।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने पाटन सीट से नामांकन दाखिल किया

रायपुर। छत्तीसगढ़ में हो रहे विधानसभा चुनाव के लिए मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने सोमवार को दुर्ग जिले की अपनी पारंपरिक सीट पाटन से कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में अपना नामांकन दाखिल किया। 62 वर्षीय नेता ने दुर्ग कलेक्ट्रेट में नामांकन पत्र दाखिल करने की अपनी तस्वीरें सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर अपने हैंडल पर पोस्ट कीं और लिखा, नाम- भूपेश बघेल, विधानसभा क्षेत्र- पाटन, छत्तीसगढ़ महतारी के आशीर्वाद से आज पुन: पाटन विधानसभा क्षेत्र से प्रत्याशी के रूप में नामांकन दाखिल किया है। बघेल के नामांकन दाखिल करने के दौरान विधानसभा अध्यक्ष चरण दास महंत और गृह मंत्री ताम्रध्वज साहू उनके साथ थे। नामांकन दाखिल करने जाने से पहले बघेल ने सोशल मीडिया पर अपनी तस्वीरें साझा कीं, जिनमें उनकी पत्नी भिलाई स्थित अपने आवास पर उनके माथे पर तिलक लगाती नजर आ रही हैं।

इन तस्वीरों को एक्स पर साझा करते हुए बघेल ने लिखा, हर बार वह दिन याद आता है जब पहली बार नामांकन दाखिल करने गया था। आज पाटन विधानसभा क्षेत्र से प्रत्याशी के रूप में नामांकन दाखिल करने भिलाई स्थित निवास से निकला हूं।''

उन्होंने लिखा ''मेरी धर्मपत्नी मुक्तेश्वरी ने हर बार की तरह तिलक किया। आप सबका प्यार मेरा संबल है। छत्तीसगढ़िया स्वाभिमान के लिए, आप सबकी सेवा के लिए सदैव समर्पित रहने का वादा आपसे करता हूं। दुर्ग जिले का पाटन, ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र है जिसकी सीमा राजधानी रायपुर से लगती है।

बघेल ने इस सीट से पांच बार 1993, 1998, 2003, 2013 और 2018 में विधानसभा चुनाव जीता है। 2008 में वह भाजपा के विजय बघेल से विधानसभा चुनाव हार गए थे। विजय बघेल भूपेश बघेल के रिश्तेदार हैं। इस सीट पर भाजपा ने एक बार फिर विजय बघेल को मैदान में उतारा है। वह दुर्ग से लोकसभा सांसद हैं। दोनों कुर्मी जाति से हैं। कुर्मी राज्य में एक प्रभावशाली ओबीसी समुदाय है, जिसकी इस निर्वाचन क्षेत्र में बड़ी आबादी है।

भाजपा के कदम सिर्फ अडाणी के लिए है उठते : टीएस सिंहदेव

■ **कांग्रेस करती है सबका भला**

रायपुर। राहुल गांधी के दो दिवसीय छत्तीसगढ़ दौरे में प्रदेशवासियों के लिए कई बड़े ऐलान किया गया। इन घोषणाओं को लेकर छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव ने कहा है कि कांग्रेस पार्टी छत्तीसगढ़ एक सोच और विजन के साथ आगे बढ़ रही है। जो भी घोषणाएं हो रही है उस पर सीनियर लीडर्स की अनुमति के बाद ही राहुल गांधी ने घोषणाएं की हैं।

उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव ने कहा, आपने देखा कि राहुल गांधी ने महत्वपूर्ण घोषणाएं की है। केजी से पीजी एक बड़ी घोषणा है। जिसमें सरकारी स्कूलों और कॉलेजों में मुफ्त शिक्षा का प्रावधान है। जिन भूमिहीन परिवारों को प्रति वर्ष 7,000 रुपये मिलते थे, उन्हें 10,000 रुपये मिलेंगे।

राहुल गांधी ने कहा कि कांग्रेस राज्य में दोबारा सत्ता में आती है, तो सरकार किसानों का कर्ज फिर से माफ कर देगी। पिछले चुनाव में हमने धान के लिए 2500 रुपये प्रति क्विंटल का वादा किया था और हमने इसे पूरा किया।

इस दौरान डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव ने आरोप लगाया कि बीजेपी आदिवासियों की जमीन छीनना चाहती है। हम आपको आदिवासी कहते हैं, जबकि बीजेपी आपको वनवासी कहती है। आदिवासी शब्द का अर्थ है कि जमीन आप लोगों की है। कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा शुरू की गई योजनाओं से लोगों को फायदा होता है। इसके उलट बीजेपी के कदम अडानी को फायदा पहुंचाने के लिए उठते हैं।

इसके साथ ही उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव ने विजयनगर में हुए रेल हादसे पर शोक व्यक्त किया है। उन्होंने मृतकों को श्रद्धांजलि दी और पीड़ित परिजनों के प्रति संवेदना जताई है। इसके साथ ही सिंहदेव ने घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना भी की है। हादसे को लेकर सिंहदेव ने कहा है कि ऐसे हादसे दोबारा ना हो, यह रेलवे को सुनिश्चित करना चाहिए। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 दो चरणों में हो रहे हैं। पहले चरण में 90 में से 20 सीटों पर मतदान होना है। दूसरे चरण का मतदान 17 नवंबर को होगा, जिसके तहत बाकी 70 सीटों पर वोटिंग होगी। जिसके बाद वोटों की गिनती 3 दिसंबर को होगी।

अमित जोगी ने पाटन से ठोकी चुनावी ताल

■ **सीएम भूपेश और सांसद विजय बघेल के साथ होगी टक्कर**

दुर्ग। छत्तीसगढ़ की पाटन विधानसभा में कांग्रेस और बीजेपी के साथ अब जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ ने भी दावेदारी पेश की है। इस विधानसभा में पहले से ही सीएम भूपेश बघेल और विजय बघेल के बीच कांटे की टक्कर होने की संभावना है।वहीं जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ का प्रदेशाध्यक्ष अमित जोगी ने भी नामांकन के आखिरी दल अपना पर्चा दाखिल किया।जिसके बाद पाटन विधानसभा की गर्मी और भी ज्यादा बढ़ चुकी है।

सीएम भूपेश बघेल के विधानसभा क्षेत्र से अमित जोगी ने चुनाव लड़ने का ऐलान करते हुए नामांकन दाखिल किया। आपको बता दें कि पाटन विधानसभा मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का निर्वाचन क्षेत्र है।यहां से भूपेश बघेल चुनाव लड़ रहे हैं। वहीं बीजेपी की ओर से सांसद विजय बघेल चुनाव मैदान में उतरे हैं। वहीं अब इसमें अमित जोगी ने नामांकन दाखिल कर कहीं न कहीं इस चुनाव को रोचक बना दिया है।

अब तक अमित जोगी चुनाव लड़ाने की बात कर रहे थे। लेकिन उन्होंने दूसरे चरण के मतदान के लिए नामांकन के अंतिम दिन

अपना नामांकन फॉर्म जमा किया।अमित जोगी अब पाटन से अपनी दावेदारी पेश करेंगे। पाटन विधानसभा क्षेत्र पहले से ही हाई प्रोफाइल है। अब अचानक से पाटन के रण में अमित जोगी की आमद ने वोटों का समीकरण बिगाड़ा है।

आपको बता दें अमित जोगी के अलावा उनकी मां रेणु जोगी अपने पारंपरिक सीट कोटा से चुनाव लड़ रही हैं।वहीं उनकी पत्नी ऋचा जोगी ने अकलतरा विधानसभा सीट से नामांकन दाखिल किया है।यानी एक बार फिर जोगी फैमिली चुनावी रण में विरोधियों के लिए चुनौती बनने का काम कर रहे हैं।

छत्तीसगढ़ में दूसरे चरण के चुनाव के लिए आज नामांकन का आखिरी दिन है। इसी के तहत आज दुर्ग जिले की पाटन, दुर्ग ग्रामीण, दुर्ग शहर, वैशाली नगर, भिलाई नगर, अहिवारा के कांग्रेस, भाजपा और दूसरी पार्टियों के प्रत्याशी अपना नामांकन कर रहे हैं। पाटन से भाजपा प्रत्याशी विजय बघेल भी आज नामांकन कर रहे हैं। पाटन सीट पर भूपेश बघेल और विजय बघेल के बीच कांटे की टक्कर है।वहीं अब अमित जोगी के मैदान में आने से मुकाबला और भी रोचक हो गया है।

पाटन विधानसभा की बात करें तो इस बार यहां वोटर्स की संख्या 2 लाख 16 हजार 661 है। जिसमें से 1 लाख 7 हजार 574 पुरुष और 1 लाख 9 हजार 86 महिला वोटर्स हैं।जबकि एक ट्रांसजेंडर्स भी इस विधानसभा में है।

जोगी कांग्रेस की नौवीं और दसवीं लिस्ट जारी

जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ (जे) ने अपने प्रत्याशियों की नौवीं और दसवीं लिस्ट जारी कर दी है। जेसीसीजे की नौवीं और दसवीं लिस्ट में कुल 13 उम्मीदवारों का ऐलान किया गया है। जेसीसीजे ने 2 सीटों से अपने प्रत्याशी बदल दिया है। इससे पहले 28 अक्टूबर की रात जोगी कांग्रेस ने अपनी आंठवीं सूची जारी की थी, जिसमें केवल 02 उम्मीदवारों के नाम घोषित किए गए थे। अब तक जोगी कांग्रेस की 10 सूची में 78 उम्मीदवारों का ऐलान किया जा चुका है।

कांग्रेस ने स्वीकार कर लिया कि उनके खिलाफ छत्तीसगढ़ में एंटी इनकंबेंसी: साव

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 को लेकर प्रदेश का सियासी पारा हाई है। सभी राजनीतिक दल एक दूसरे पर आरोपों की बौछार कर रहे हैं। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव ने कांग्रेस पर हमला बोला है। अरुण साव का कहना है कि कांग्रेस ने यह मान लिया है कि राज्य में उनके खिलाफ एंटी इनकंबेंसी है। चुनावी राज्य छत्तीसगढ़ में एक संवाददाता सम्मेलन को अरुण साव संबोधित कर रहे थे। इस दौरान अरुण साव ने कहा, कांग्रेस सरकार के भ्रष्टाचार के खिलाफ लोगों के बीच बड़े पैमाने पर गुस्सा है। सत्ता में आने के बाद कांग्रेस की नेतृत्व वाली सरकार ने राज्य को लूट लिया और लोगों को धोखा भी दिया। जिस तरह से कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार ने कोयला, शराब और अन्य सहित कई भ्रष्टाचारों को अंजाम दिया है और झूठे वादे किए। छत्तीसगढ़ के लोग उन्हें एक सबक सिखाएंगे।

अरुण साव ने कहा कांग्रेस ने 22 इनकम्बेंट विधायकों के टिकटों से इनकार किया है, जिसका अर्थ है कि उनके नेतृत्व ने स्वीकार किया है कि कांग्रेस के खिलाफ राज्य में बड़े पैमाने पर एंटी इनकंबेंसी है। चुनाव अभियान में कांग्रेस पर झूठे वादे करने का आरोप लगाते हुए अरुण साव ने कहा, चुनाव अभियान पूरी गति से चल रहा है, जबकि एक ही समय में झूठे वादे भी पूरे जोरों पर है। पार्टी के सोशल मीडिया सेल ने एक वीडियो तैयार किया है, जिसमें कांग्रेस के भ्रष्टाचार के खिलाफ लोगों में बड़े पैमाने पर नाराजगी को दिखाया गया है। बीजेपी के इस वीडियो में कांग्रेस द्वारा घोषणापत्र में किए गए वादे भी शामिल हैं, जो अधूरे हैं। इसमें राज्य के लोक सेवा आयोग में अनियमितता का भी जिक्र किया गया है। इसके साथ ही अरुण साव ने सीएम भूपेश बघेल को 2018 में चुनाव के दौरान घोषणापत्र में किए गए वादों का दिसाब भी मांगा है।अरुण साव बिलासपुर संभाग में लोरमी विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे हैं। छत्तीसगढ़ में 20 सीटों के लिए पहला चरण के तहत 7 नवंबर को मतदान किया जाएगा। पहले चरण के बाद राज्य में बाकी 70 सीटों पर 17 नवंबर को वोट डाले जाएंगे। बिलासपुर के लोरमी विधानसभा सीट पर भी दूसरे चरण के तहत 17 नवंबर को मतदान होंगे। वहीं वोटों की गिनती 3 दिसंबर 2023 की जाएगी।

अजीत ने कांग्रेस के लिए बढ़ाई परेशानी, रायपुर उत्तर से लड़ेंगे निर्दलीय चुनाव

रायपुर। कांग्रेस में टिकट वितरण के बाद से लगातार असंतोष की लहर देखने को मिल रही है। कई जगहों से कांग्रेसी बागी होकर चुनाव लड़ रहे हैं। इसी क्रम में कांग्रेस पार्षद और एमआईसी सदस्य अजीत कुकरेजा भी रायपुर उत्तर से निर्दलीय चुनाव लड़ेंगे। कांग्रेस ने उन्हें मनाने की भरपूर कोशिश की पर वो नहीं माने। पार्टी में बगावत का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। आज सोमवार को वो रैली निकालकर नामांकन दाखिल करेंगे।

कुकरेजा ने कहा कि मुझे उम्मीद थी कि पार्टी प्रत्याशी के रूप में मौका देगी पर ऐसा नहीं हुआ। कुलदीप जुनेजा को रायपुर उत्तर से टिकट दिया गया है। ऐसे में मैं निर्दलीय चुनाव लड़ूंगा। पार्टी के वरिष्ठ नेताओं से उनकी चर्चा हुई है। मैंने साफतौर पर कह दिया है कि आज नामांकन दाखिल करूंगा। इस काम में सिंधी समाज के लोग भी मेरा साथ दे रहे हैं।

दूसरी ओर सिंधी समाज के सदस्य शिव ग्वालानी का कहना है कि कांग्रेस ने समाज की उपेक्षा की है। समाज से किसी को भी टिकट नहीं दिया है। इसलिए समाज अब अजीत कुकरेजा को चुनावी मैदान में उतार रहा है। कांग्रेस ओर से टिकट वितरण के बाद समाज ने बैठक ली थी। बैठक में यह फैसला लिया गया की पार्टी की ओर से किसी भी समाज के प्रत्याशी को टिकट नहीं दी गई है इसलिए समाज की ओर से जो मजबूत

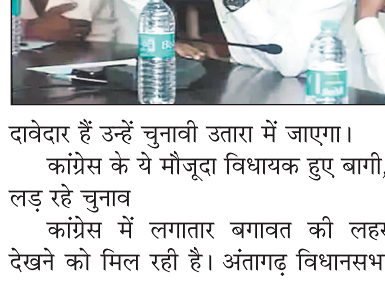

दावेदार हैं उन्हें चुनावी उतारा में जाएगा।

कांग्रेस के ये मौजूदा विधायक हुए बागी, लड़ रहे चुनाव

कांग्रेस में लगातार बगावत की लहर देखने को मिल रही है। अंतागढ़ विधानसभा सीट में कांग्रेस के मौजूदा विधायक अनूप नाग को टिकट नहीं मिलने के बाद बागी हो गए हैं। अनूप नाग ने निर्दलीय नामांकन फॉर्म भर दिया है। यदि अनूप ने नाम वापस नहीं लिया तो अंतागढ़ विधानसभा में मुकाबला रोचक हो सकता है। अनूप नाग रिटायर्ड टीआई हैं, 2018 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी के विक्रम उसेंडी को अनूप नाग ने 13414 मतों से हराया था। अनूप नाग को 57,061 वोट मिले थे। वहीं बीजेपी के विक्रम उसेंडी को 43,647 मत मिले थे। कांग्रेस ने अंतागढ़ से विधायक अनूप नाग को 6 साल के लिए निष्कासित कर दिया है। कांग्रेस ने उनकी जगह इस बार कांग्रेस ने प्रदेश अध्यक्ष और सांसद दीपक बैज को प्रत्याशी बनाया है।

दूसरी ओर महासमुंद से मौजूदा कांग्रेस विधायक किस्मतलाल नंद बागी होकर कांग्रेस का साथ छोड़कर जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ -जे (जेसीसीजे) में शामिल हो गए। जेसीसीजे ने उन्हें सरायपाली से टिकट दिया है। अब वो सराईपाली से चुनावी ताल ठोक रहे हैं। साल 2018 में किस्मतलाल नंद ने डीएसपी की नौकरी छोड़कर कांग्रेस से चुनाव लड़े थे। भाजपा प्रत्याशी को 52 हजार वोटों से हराया था।

गारंटी की राजनीति भी है रणनीति का हिस्सा

विजय विद्रोही

राजस्थान और मध्य प्रदेश के विधानसभा चुनावों में महिला मतदाताओं को लुभाने के लिए कांग्रेस क्या सोची-समझी रणनीति के तहत प्रियंका गांधी को आगे कर रही है? महिलाओं- बच्चों से जुड़ी घोषणाओं को प्रियंका गांधी के जरिये गारंटी के रूप में सामने लाया जा रहा है, ताकि महिलाओं को पूरी तरह भरोसे में लिया जा सके। राजस्थान में झुंझुनूं की रैली में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रियंका गांधी को गारंटी कार्ड के रूप में सामने रखा। घर की मुखिया महिला को दस हजार रुपये हर साल दिए जाएंगे और एक करोड़ परिवारों को 500 रुपये में गैस सिलेंडर मिलेगा। इससे सरकार पर साढ़े दस हजार करोड़ का अतिरिक्त खर्च बढ़ेगा। राजस्थान में कांग्रेस और भाजपा के बीच कड़ी टक्कर है और जानकारों के मुताबिक, सत्ता की चाभी महिला व युवा वर्ग के पास है। राज्य में 2.73 करोड़ पुरुष वोटरों के मुकाबले 2.53 करोड़ महिला वोटर हैं, पर वोट डालने में महिलाएं बाजी मार ले जाती हैं। 2018 के विधानसभा चुनाव में राज्य में 74.72 फीसदी वोट पड़े थे। उनमें पुरुष वोटों का प्रतिशत 73.49 था, जबकि 74.67 फीसदी महिलाओं ने वोट दिया था। तब कांग्रेस और भाजपा के बीच 0.54 प्रतिशत का ही अंतर था, यानी कांग्रेस को भाजपा से सिर्फ 1.79 लाख वोट ज्यादा मिले थे। इस आंकड़े के मद्देनजर महिला वोटरों की अहमियत समझ में आती है। पिछले तीस साल में महिलाओं की वोट देने में भागेदारी तेजी से बढ़ी है। वर्ष 1993 में करीब 60 फीसदी मतदान हुआ था और तब 68 प्रतिशत पुरुषों, जबकि केवल 52 फीसदी महिलाओं ने वोट दिया था। पर अब कहानी बदल गई है। यही वजह है कि दोनों दलों को महिला वोटर याद आ रहे हैं और महिला नेता भी। प्रियंका गांधी ने इससे पहले मध्य प्रदेश में हर महिला को 1,500 रुपये मासिक देने की गारंटी दी थी। आठवीं तक के बच्चों को पांच सौ रुपये, नवीं-दसवीं के बच्चों को एक हजार और ग्यारहवीं-बारहवीं के बच्चों को 1,500 रुपये महीना देने की %पढ़ो-पढ़ाओ योजना% की गारंटी भी उन्होंने दी थी। इससे पहले हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक में भी प्रियंका गांधी से ही गारंटियां दिलाई गई थीं। गारंटी देने में भी सियासत हो रही है। प्रधानमंत्री मोदी कांग्रेस की गारंटी को चुनावी जुमला बताते हुए कह रहे हैं कि कांग्रेस सिर्फ चुनाव जीतने के लिए गारंटी दे रही है, चुनाव जीतने पर वह भूल जाएगी। दूसरी तरफ, भाजपा की गारंटी को वह मोदी की गारंटी से जोड़ रहे हैं, और कह रहे हैं कि यह मोदी की गारंटी है, जो पूरी की जाएगी। यह अपने आप में रोचक राजनीति है। एक कह रहा है, हमारी गारंटी पर यकीन करो, तो दूसरा कह रहा है कि हमारी गारंटी पर यकीन करो, क्योंकि हम गारंटी पूरी कर चुके हैं। उधर गारंटी का खेल शुरू करने वाले केजरीवाल भी आम आदमी पार्टी की गारंटी को केजरीवाल की गारंटी बता रहे हैं। मध्य प्रदेश में कांग्रेस ने गृहलक्ष्मी योजना के तहत 1,500 रुपये महीना देने की गारंटी दी, तो मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने लाड़ली बहना योजना की घोषणा कर पहले महीने 1,000 और दूसरे महीने 1,250 रुपये देना शुरू भी कर दिया। अशोक गहलोत ने बीपीएल परिवारों को 500 रुपये में सिलेंडर देना शुरू किया, तो शिवराज चौहान ने 450 रुपये में सिलेंडर देने की घोषणा कर दी। जबकि तेलंगाना में केसीआर ने 400 रुपये में गैस सिलेंडर देने की गारंटी दी है। राजस्थान और मध्य प्रदेश, दोनों जगह कांग्रेस के पास कोई बड़ी महिला नेता नहीं है। पर जब चुनाव ही महिला वोटरों के आसपास लड़ा जा रहा हो, तो जरूरी हो जाता है कि महिला नेता ही बहनों को गारंटी दे। शौचालय, जन-धन खाते, उज्ज्वला योजना आदि के जरिये प्रधानमंत्री मोदी ने महिला वोटरों के बीच अपनी पैठ बनाई है। मध्य प्रदेश में तो शिवराज सिंह चौहान मामा के रूप में सामने आ गए हैं, लेकिन कांग्रेस का ऐसा कोई जुड़ाव राजस्थान और मध्य प्रदेश में नहीं हो पाया है। इसकी भरपाई भी प्रियंका गांधी के जरिये की जा रही है। एक बात दिलचस्प है। राज्य में विपक्षी पार्टी आगे की गारंटी दे, तो समझ में भी आता है, पर सत्ता में मौजूद पार्टी जीतने पर गारंटी देने की बात कहे, तो समझ जाना चाहिए कि माजरा क्या है।

भाजपा को राजपूतों का ही सहारा

अनिल तिवारी

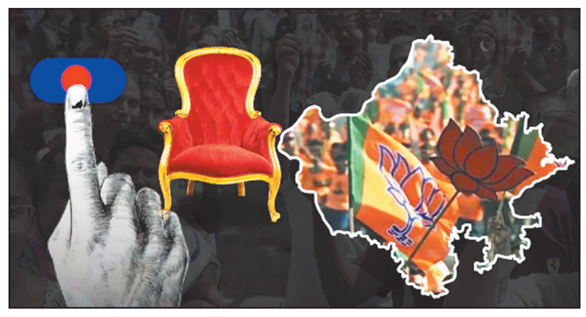

मरुधरा के रण में होने वाले विधानसभा के चुनाव में सत्ताधारी कांग्रेस पार्टी प्रदेश की पुरानी परंपरा को तोड़ने की हर कोशिश में जुटी है, वहीं भाजपा राज्य की 200 विधानसभा सीटों में 150 प्लस का लक्ष्य निर्धारित कर दोनों राष्ट्रीय दलों के लिए करो या मरो की स्थिति पैदा किए हुए हैं। आधिकाधिक सीट हासिल करने की गरज से टिकट बंटवारे में जातियों में भी उप-जातियों तक के समीकरण देखे जा रहे हैं, लेकिन विशेष रूप से दोनों दलों की नजर राजपूत मतदाताओं को अपने पाले में खींचने पर लगी हुई है। राजपूत समुदाय को टिकट देने के मामले में भारतीय जनता पार्टी आगे है। अब तक जारी सूची में लगभग 10त्न टिकट राजपूतों को देने की घोषणा की है जबकि कांग्रेस ने इस बिरादरी को अभी तक केवल पांच प्रतिशत टिकट ही दिए हैं। हालांकि अगली सूची में इसके कुछ और बढ़ने की संभावना है।

वर्ष 2013 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने 29 राजपूतों को टिकट दिया था जिसमें 24 जीत कर विधायक बने थे, जबकि कांग्रेस पार्टी ने 15 टिकट दिए और जीते केवल दो ही थे। लेकिन पिछले चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को क्षत्रियों की नाराजगी का खामियाजा उठाना पड़ा था। साल 2018 के चुनाव में भाजपा ने 26 राजपूतों को टिकट दिया जिनमें से केवल 10 ने जीत दर्ज की वहीं कांग्रेस ने राजपूत समुदाय के 15 उम्मीदवारों को टिकट दिया इनमें से सात ने जीत का परचम लहराया था। बाड़मेर लोकसभा चुनाव में भाजपा शीर्ष नेतृत्व ने संघ की नाराजगी के कारण जिन्ना की तारीफ करके एक बार पार्टी से निलंबित हो चुके और फिर वापसी करने वाले भाजपा नेता जसवंत सिंह का टिकट काटकर कांग्रेस छोड़कर आने वाले जाट नेता कर्नल सोनाराम को चुनाव लड़वाया था और जसवंत सिंह को हरवाने में संघ परिवार ने पूरी ताकत झोंक दी थी। जसवंत चुनाव हार गए। इस चुनाव में भाजपा विधायक रहे उनके पुत्र मानवेंद्र सिंह ने पार्टी के विरोध में प्रचार किया तो उन्हें भी पार्टी में अलग-थलग कर दिया गया, तब वे भाजपा छोड़कर पत्नी चित्रा सिंह के साथ कांग्रेस में चले गये। पश्चिमी राजस्थान में अपने गृह जिले बाड़मेर से सैकड़ों किलोमीटर दूर पूर्वी राजस्थान के झालावाड़ जिले में झालरापाटन सीट से उन्होंने वसुंधरा राजे के सामने चुनाव भी लड़ा लेकिन बुरी तरह से हार गए। राजपूत समाज को पिछड़ा वर्ग में आने वाले रावणा राजपूत समाज का समर्थन भी मिलता रहा है और विधानसभा चुनाव में 25 से लेकर 30 सीटों पर सीधा असर डालता है। राजपूत समाज ने पिछले चुनाव में कई सीटों पर निर्दलीय प्रत्याशी खड़े करके भाजपा की हार सुनिश्चित कर दी थी। इस बार भी अनेक सीटों पर राजपूत उम्मीदवार भाजपा के बागी बनकर सामने आ चुके हैं। इसी कारण राजपूत समुदाय की नाराजगी का तोड़ तलाशते हुए भाजपा अपनी चुनावी रणनीति तैयार कर रही है।

राजस्थान का इतिहास मोटे तौर पर राजपूतों का इतिहास रहा है। संख्या बल में अन्य के मुकाबले कम होने के बाद भी प्रतिनिधित्व के मामले में राजपूत बिरादरी सभी पर भारी पड़ती रही है। यही कारण है कि कोई भी पार्टी चुनाव में कभी उनकी अनदेखी नहीं करती। 2018 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी की हार का सबसे बड़ा कारण राजपूत समाज की नाराजगी ही रही थी। 2023 में भी बीजेपी के लिए हाल ही में लिए गए फैसलों से यह लग रहा है कि पार्टी राजपूत बिरादरी को लेकर या तो असमंजस में है या दबाव में है। पूर्व मुख्यमंत्री और राज्य में भाजपा के सबसे बड़े चेहरा रहे भैरों सिंह शेखावत के दामाद का टिकट कटने के बाद पार्टी और अधिक जल्दीबाजी में दिख रही है। महाराणा मेवाड़ के वंशज विश्वराज सिंह मेवाड़ और करणी सेना के संस्थापक लोकेंद्र सिंह के पुत्र भवानी सिंह कालवी को वोटिंग के एक महीने पहले आनन-फानन में पार्टी में शामिल करने से यह लगने लगा है कि भारतीय जनता पार्टी राजपूत वोटों को लेकर इस बार भी निश्चिंत होने वाली स्थिति में अभी नहीं है।

राजस्थान में राजपूतों की कुल संख्या 8 से 10 प्रतिशत के करीब है, जो अपनी प्रतिद्वंद्वी जातियों जाटों और गुर्जरों के मुकाबले काफी कम है। परन्तु उनकी राजनीतिक हैसियत का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि राज्य के हर विधानसभा चुनाव में करीब 14 से 15% विधायक इसी समुदाय से चुने जाते हैं। जबकि लोकसभा चुनाव में यह प्रतिशत कई बार 20त्न के पार भी पहुंच जाता रहा है। राजस्थान की करीब 120 विधानसभा सीटों से राजपूत समुदाय के प्रत्याशी कभी न कभी अपनी जीत का झंडा लहरा चुके हैं। यानी कि जिन सीटों पर राजपूत समुदाय की जनसंख्या बहुत ही कम है, कई बार वहां से भी राजपूत चुनकर विधानसभा और लोकसभा तक जाते रहे हैं।

वर्ष 2014 में बीजेपी के कद्दावर नेता जसवंत सिंह का टिकट कटने से शुरू हुई राजपूत समाज की नाराजगी घटने के बजाय दिन प्रतिदिन बढ़ती ही गई। वसुंधरा सरकार के समय राजकुमारी दीया कुमारी के होटल का प्रकरण, आनंदपाल के एनकाउंटर, सामराऊ प्रकरण, चतुर सिंह एनकाउंटर आदि को लेकर राजपूतों में राज्य सरकार के प्रति जो नाराजगी पैदा हुई वह 2018 के चुनाव में साफ नजर आई थी। इसके साथ ही गजेंद्र सिंह शेखावत को प्रदेश अध्यक्ष न बनाए जाने को लेकर राजपूतों में निराशा रही। माना गया कि तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया के विरोध के चलते अपेक्षाकृत कम लोकप्रिय चेहरा मदनलाल सैनी को राजस्थान बीजेपी का अध्यक्ष बनाया गया। यही सब कारण रहा है कि राजपूत बिरादरी को कांग्रेस से अधिक टिकट बांटने के बावजूद बीजेपी कांग्रेस से अधिक वोट नहीं पा सकी। 2018 के चुनाव में मिली हार के चलते भाजपा संगठन पिछले 2 साल से राजपूत समुदाय को मनाने में जुटा हुआ था। अगस्त 2022 में दुर्गा दास राठौड़ और पन्नाधाय की मूर्ति का अनावरण राजनाथ सिंह के कर कमलों से कराकर राजपूत समुदाय को यह संदेश देने की कोशिश शुरू हो गई थी। बाद में प्रदेश के तीन बार मुख्यमंत्री रहे भैरो सिंह शेखावत का 100वां जन्मदिन बड़े पैमाने पर मनाने की योजना बनाई गई।

बीजेपी ने पूर्व सीएम शेखावत के जन्मशती महोत्सव के बहाने मतदाताओं को साधने के लिए 5 महीने का वोटर कनेक्ट प्लान भी चलाया। राजस्थान विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता गुलाबचंद कटारिया को हटाकर उनकी जगह राजपूत बिरादरी के राजेंद्र सिंह राठौड़ को प्रतिपक्ष का नेता बनाया गया। महारानी दीया कुमारी को हर मोर्चे पर फ्रंट पर रखने की कोशिश की गई। अब यह कहा जा रहा है कि अगर प्रदेश में बीजेपी की सरकार बनती है तो महारानी दीया कुमारी मुख्यमंत्री भी बन सकती हैं।

भाजपा की ओर से लगातार यह बताने की कोशिश हो रही है कि राजपूत समुदाय भारतीय जनता पार्टी के लिए कितना महत्वपूर्ण है। लेकिन पांच बार विधायक रहे नरपत सिंह राजवी का टिकट कटने के बाद बिरादरी अस्मिता एक बार फिर खुलकर बाहर आ गई है। नरपत सिंह भैरो सिंह शेखावत के दामाद तो हैं ही, प्रदेश में बीजेपी के प्रमुख नेता के रूप में भी पहचाने जाते हैं।

अब इस बात की चर्चा हो रही है कि क्या वसुंधरा राजे से उनकी नजदीकी ही उनके टिकट कटने का सबसे बड़ा कारण बन गई। हालांकि प्रदेश की राजनीति की समझ रखने वाले कहते हैं कि लंबे समय तक नरपत सिंह राजवी खुल कर वसुंधरा राजे का विरोध करते रहे थे। राजवी की सीट से जयपुर की महारानी दीया कुमारी को टिकट दिया गया है। पार्टी के कार्यकर्ता यह सवाल पार्टी के बड़े नेताओं से पूछ रहे हैं कि दीया कुमारी को विद्याधर नगर जैसी बेहद आसान सीट क्यों दी गई? कुछ लोग तो यह भी सवाल उठा रहे हैं कि मुगलों के आगे घुटने टेकने वाले और महाराणा प्रताप के खिलाफ लड़ने वाले परिवार पर पार्टी इतनी मेहरबान आखिर क्यों है? हालांकि जैसे-जैसे चुनाव नजदीक आ रहा है, अशोक गहलोत की लोकप्रिय राजनीति से घबराया भाजपा नेतृत्व पहले के सारे गिले-शिकवे भुला कर वसुंधरा राजे सिंधिया को तवज्जो देने लगा है। पार्टी में बेकाबू हो रहे असंतोष को देखते हुए शीर्ष नेतृत्व यह समझ गया है कि दीया कुमारी और वसुंधरा राजे में बहुत बड़ा अंतर है। वसुंधरा बीजेपी की बहुत पुरानी नेता हैं। वह बीजेपी और राजस्थान की रग-रग से परिचित है। उन्होंने पार्टी को राजस्थान में खड़ा करने में खून पसीना बहाया है और सबसे बड़ी बात कि वह खुद को क्षत्रिय की बेटी भी कहती रही है।

भारतीय ज्ञान परंपरा....

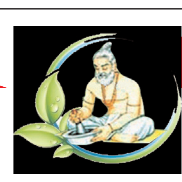

महोपनिषद् (भाग-28)

गतांक से आगे...

ज्ञानी पुरुषों के लिए मन न तो आनन्द रूप है और न ही आनन्दरहित है। उनके लिए वह चल, अचल, स्थिर, सत, असत् भी नहीं है अथवा इसके मध्य की स्थिति वाला भी नहीं है। अखण्ड चेतनसत्ता सर्वव्यापक होते हुए भी उसी प्रकार दृष्टिगोचर नहीं होती, जिस प्रकार चित्त में आलोकित होने वाला आकाश सूक्ष्मता के कारण दिखाई नहीं देता। सभी संज्ञाओं से रहित और संकल्पों से रहित यह चिदात्मा अविनाशी तथा स्वात्मा आदि नामों से जाना जाता है। वह समस्त निर्मल संसार के रूप में एकमात्र स्वयं को ही दर्शाता है। ज्ञानियों की दृष्टि में वह आकाश से भी सौ गुना स्वच्छ, निर्मल तथा निष्कलरूप है। वह चेतनसत्ता न तो कभी उदय होती है और न ही अस्त होती है, वह गमन- आगमन से रहित, न उठती और न स्थिर बैठी ही रहती है। वह न तो यहाँ और न ही वहाँ ही है।

वह चिदात्मा आश्रयहीन, विकल्परहित और शुद्धस्वरूप है। प्रारम्भ में शम-दम आदि गुणों द्वारा शिष्य के अन्त: का परिष्कार करना गुरु के लिए आवश्यक है, तत्पश्चात् उसे बोधस्वरूप यह ब्रह्मज्ञान प्रदान करे यह सभी कुछ ब्रह्मरूप है और तुम निर्मल ब्रह्मरूप हो। अपरिपक्व बुद्धिवाले और अज्ञानी के समक्ष सब कुछ ब्रह्ममय है, ऐसा कहना उसे मानो घोर नरक में धकेलने की तरह है।[ऋषि कहते हैं कि प्रारम्भ में शिष्य-साधक को अभेद का उपदेश नहीं करना चाहिए। इसे पहले वाञ्छित- अवाञ्छित का भेद बताकर शम-दम आदि द्वारा चित्त शुद्धि करानी चाहिए। जब तक चित्त शुद्ध नहीं हो जाता, तब तक अभेद समझाने के प्रयास में वह अवाञ्छित का त्याग नहीं कर पाता। आज के उपदेशक ऐसी भूल करके साधक को कुपथ्य दे बैठते हैं।]

जिसकी भोग कामनाएँ क्षीण हो चुकी हैं, आकांक्षाएँ समाप्तप्राय हैं तथा बुद्धि जागरूक है, उसी को वेदान्त का उपदेश प्राज्ञ गुरु प्रदान करे। अविद्यारूपी विकार का कोई अस्तित्व नहीं। जैसे सूर्योदय होने पर दिवस, दीपक से प्रकाश तथा पुष्प से सुगन्धि की स्थिति का होना निश्चित है, वैसे ही चैतन्य पर संसार विद्यमान है।

वास्तव में यह संसार अस्तित्व रहित है, यह तो मात्र आभासित होता है। जब तुम्हारी ज्ञान दृष्टि आवरण शून्य हो जायेगी और ज्ञान के प्रकाश से ओत-प्रोत होगी, ऐसे में तुम स्वयमेव अपने स्वरूप में स्थित हो जाओगे। तभी तुम्हें मेरे उपदेश की सत्यता का भली प्रकार बोध होगा। हे ब्रह्मन् ! सब दोषों को दूर करने वाली विद्या की प्राप्ति स्वार्थ भावना को विनष्ट करने के लिए प्रयत्नशील अविद्या द्वारा ही सम्भव होती है। अस्त्र द्वारा अस्त्र को निस्तेज किया जाता है और मल द्वारा मल धुलता है। विष द्वारा विष का शमन तथा शत्रु द्वारा शत्रु का हनन होता है। यह भूतमाया भी इसी प्रकार की है, जो अपने क्षय पर स्वयं हर्षित होती है।

क्रमश: ...

आचार्य नरेंद्र देव

मोहन सिंह

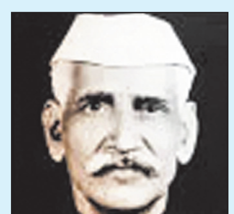

आचार्य नरेंद्र देव का जन्म 31 अक्तूबर 1889 को उत्तर प्रदेश के सीतापुर में हुआ था। यह उनकी 132वीं जयंती है। उनका पूरा नाम अविनाशी लाल था, जिसे बदलकर उन्होंने नरेंद्र देव रख लिया। उनके पिता का नाम बलदेव प्रसाद था। वे पेशे से वकील थे। उनका परिवार आज के पाकिस्तान के सियालकोट से उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध में आकर फैजाबाद में बस गया। देश के स्वाधीनता आंदोलन के सबसे विद्वान नेताओं में एक आचार्य नरेंद्र देव 17 मई 1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष चुने गए। काशी विद्या पीठ से उनका जुड़ाव सन 1921 से रहा।

उनके सहपाठियों में दर्शन और तंत्र विघा के महान विचारक महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज रहे हैं। खुद आचार्य नरेंद्र देव बौद्ध धर्म दर्शन और भारतीय दर्शन के उच्च कोटि विद्वान थे। स्वाधीन भारत में आचार्य नरेंद्र देव लखनऊ विश्वविद्यालय और काशी हिंदू विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहे। उपकुलपति रहते हुए वे अपने वेतन का अधिकांश हिस्सा समाजवादी पार्टी और अपने छात्रों को दान स्वरूप दे देते थे।

सन् 1929 में काशी विद्या पीठ में महात्मा गांधी की आचार्य नरेंद्र देव से मुलाकात हुई। महात्मा गांधी ने श्री प्रकाश जी से पूछा- ऐसा हीरा मुझसे अब तक क्यों छुपा कर रखा था? श्री प्रकाश जी ने कहा कि एक अच्छे हीरे की परख तो अच्छे जौहरी को ही हो सकती है।

आचार्य नरेंद्र देव के रूप में जो हीरा महात्मा गांधी को प्राप्त हुआ, उसे गांधी ने ताउम्र हिफाजत के साथ संजो कर रखा। वक्त जरूरत पर आजमाया भी। सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के साथ तो आचार्य नरेंद्र देव थे ही, द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जब कांग्रेस पार्टी, जवाहरलाल नेहरू, डॉ.राम मनोहर लोहिया और दूसरे नेताओं ने महात्मा गांधी पर मित्र देशों के समर्थन के लिए दबाव बनाया तो महात्मा गांधी ने मना कर दिया।

महात्मा गांधी यह भली-भांति जानते थे कि दुनिया के लिए जितना नुकसानदेह और खतरनाक फासीवाद है, उससे कम खतरनाक साम्राज्यवाद नहीं है। ऐसे वक्त आचार्य नरेंद्र देव गांधी साथ खड़े थे। इसकी एक बड़ी वजह शायद यह भी है कि साम्राज्यवाद और समाजवाद की जो समझ जवाहरलाल नेहरू को यूरोपीय जगत से प्राप्त हुई, इसके ठीक विपरीत आचार्य नरेंद्र देव को यह विरासत एशियाई और भारतीय देशज परंपरा से प्राप्त हुई।

रोजा लुक्सवर्ग से आचार्य से सहमत नजर आते हैं कि- समाजवाद केवल ब्रेड-बटर से जुड़ा मसला नहीं है। यह व्यापक संस्कृति से भी संबंधित है। और कहना न होगा कि भारत के समाजवादी आंदोलन ने संस्कृति के सवाल की ऐसी उपेक्षा की कि आज इसकी तुरही किसी और खेमे में बज रही है। हालांकि जवाहरलाल नेहरू से मात्र दो हफ्ते बड़े आचार्य नरेंद्र देव गहरे दोस्त भी थे।

आचार्य नरेंद्र देव के राजनीतिक जीवन में कई मोड़ आए। कांग्रेस में रहते हुए वे सन् 1937 में संयुक्त प्रांत से विधानसभा के सदस्य रहे। सन् 1946 में विधानसभा के निर्विरोध सदस्य चुने गए। सन् 1948 में नासिक सम्मेलन में कांग्रेस पार्टी और विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा देकर गांधी के मृत्यु के तीन महीने बाद समाजवादी पार्टी में चले गए। हालांकि कहा यह भी जाता है कि वे कांग्रेस पार्टी से अलग नहीं होना चाहते थे। पर आचार्य जी कांग्रेस छोड़ते हुए इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि कांग्रेस अब वह मोर्चा नहीं रह गया, जहां हर तरह की विचारधारा के लिए जगह हो। गांधी जी भी कुछ ऐसा ही सोचेते होंगे। वे चाहते थे कि कांग्रेस को विसर्जित कर लोक सेवक संघ बना देना चाहिए।

युद्ध के नियमों की किसे परवाह...और न अतीत के विवादों से

पी. चिदंबरम

मनुष्य की उत्पत्ति के बाद कई सहस्राब्दियों से ये दावे किए जाते रहे हैं कि होमो सैपियंस इस ग्रह के सबसे उन्नत और समझदार प्राणी हैं। मुझे अलबत्ता यह डर है कि हममें और मूल निएंडरथल में ज्यादा फर्क नहीं है। जैसे वे बगैर किसी नियम के लड़ाइयां करते थे, हम भी नियम-कानूनों को ताक पर रखकर युद्ध करते रहते हैं। सवाल यह है कि क्या मनुष्यता के इतिहास में कभी युद्धों के नियम थे। नेट्टिमय्यार ने करीब 200 ईस्वी पूर्व में रचित अपनी एक कविता में तमिल राजाओं के बीच होने वाले युद्धों के बुनियादी नियम बताए थे। इन नियमों के अनुसार युद्ध छेड़ने की मंशा रखने वाला राजा पहले एक चेतावनी जारी करेगा, जिसका तमिल से हिंदी में तर्जुमा कुछ इस तरह होगा-

गाएं, सज्जन धार्मिक पुजारी,
महिलाएं, मरीज और जिनका
अंतिम संस्कार करने वाला कोई न हो,
सुन लें,
हमारे तीर तेजी से आपकी ओर बढ़ रहे हैं,
इसलिए सुरक्षित ठिकानों की ओर बढ़ें।

युद्ध के मैदान में सैनिकों के बीच सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक युद्ध लड़े जाते थे। सूर्योदय से फिर युद्ध शुरू होता था। तमिल में रामायण लिखने वाले महाकवि कंबन के अनुसार, ऐसा माना जाता है कि राम ने थके हुए और पराजित रावण से कहा था, 'आज तुम जा सकते हो और कल युद्ध करने आ सकते हो।'

अगर युद्धों में सभ्यता को ढूंढा जाए, तो आधुनिक युद्धों की तुलना में, प्राचीन युद्ध निस्संदेह सभ्य की श्रेणी में आएंगे, जिनमें नियमों की परवाह दिखती थी। आज रूस और यूक्रेन तथा इस्राइल व हमास के बीच जो दो युद्ध लड़े जा रहे हैं, वे निर्मम युद्ध हैं। अंधाधुंध बमबारी से यूक्रेन और गाजा में शहर, कस्बे, अस्पताल और स्कूल मलबे में तब्दील हो चुके हैं। बच्चे, महिलाएं, बुजुर्ग और मरीजों सहित हजारों लोग मारे जा चुके हैं। विस्थापितों को ऐसे शिविरों में रखा जा रहा है, जहां बुनियादी सुविधाओं बिल्कुल भी नहीं हैं। हजारों बेघर पड़ोसी देशों में पलायन के लिए मजबूर हैं। पीने को पानी नहीं, बिजली नहीं, भोजन नहीं, दवाएं नहीं, मदद ले जा रहे ट्रकों तक को रोक दिया गया है। आखिर इन युद्धों की वजह क्या है? रूस और यूक्रेन में मुद्दा है प्रभुत्व। 1922 से 1991 के बीच यूक्रेन सोवियत संघ का हिस्सा था।

रूसी नस्ल के हजारों लोग यूक्रेन के कुछ हिस्सों में बसे थे और वहां के प्रमुख समूह भी बन गए थे। आजादी के बाद यूक्रेन नाटो देशों व रूस के बीच एक बफर क्षेत्र बना हुआ था। रूस को डर है कि यूक्रेन नाटो में शामिल होकर उसकी सेनाओं को रूसी सीमाओं तक ले आएगा। इसी वजह से रूस चाहता है कि यूक्रेन एक तटस्थ राज्य हो। वह यूक्रेन के उन हिस्सों पर भी फिर से कब्जा करना चाहता है, जहां कभी रूसी नस्ल के लोग बसे थे। जाहिर है कि यह युद्ध जमीन के एक हिस्से पर कब्जा करने के लिए है।

इस्राइल और हमास युद्ध भी जमीन को लेकर है। सभी फलस्तीनी, जिनमें से कुछ का प्रतिनिधित्व हमास करता है, मानते हैं कि यहूदी लोगों ने उनकी जमीन हड़प ली है। यह क्षेत्र दरअसल फलस्तीन कहलाता था और इस पर अरबों, यहूदियों और ईसाइयों का कब्जा था। इस्राइल को संयुक्त राष्ट के प्रस्ताव के जरिये बनाया गया था और 1948 में अपने गठन के बाद से ही यहूदी लोग इस भूमि पर बसे हुए हैं। वर्तमान में इस्राइल एक शक्तिशाली देश बन गया है, जो अपने दुश्मन पड़ोसियों से निपटना जानता है। इस्राइल इस क्षेत्र की एकमात्र परमाणु शक्ति संपन्न शक्ति है। इतिहास बेशक फलस्तीनियों के पक्ष में हो, लेकिन सच्चाई यह है कि इस्राइल को इस जमीन से अलग करना नामुमकिन है।

संयुक्त राष्ट्र एक कमजोर संस्था है। यह ऊंचे लक्ष्यों वाले संयुक्त राष्ट्र चार्टर को भी लागू नहीं कर सकता, जो कहता है, 'संयुक्त राष्ट्र आने वाली पीढ़ियों को युद्ध के संकट से बचाने के लिए दृढ़ संकल्पित है, जिसने हमारे जीवन काल में दो बार मानव जाति को अकथनीय पीड़ा दी है और...यह सुनिश्चित करने के लिए...सामान्य हित को छोड़कर सशस्त्र बलों का उपयोग नहीं किया जाएगा।'

संयुक्त राष्ट्र पीढ़ियों को युद्ध के संकट से बचाने और सशस्त्र बलों के उपयोग को रोकने के अपने लक्ष्यों में आश्चर्यजनक से विफल रहा है। युद्ध की प्रकृति भी अब बदल गई है। अब लड़ाई मनुष्य और मनुष्य की न रहकर, मशीनों और ड्रोन मिसाइलों की हो गई है। अगर दुनिया जमीन के विवादों को हल नहीं कर पाती, तो युद्ध रोके नहीं जा सकते। भारत और पाकिस्तान के बीच भी जमीन को लेकर विवाद है। दक्षिणपंथियों को इस संघर्ष को हिंदू भारत और इस्लामी पाकिस्तान के रूप में प्रदर्शित करना ज्यादा सुविधाजनक लगता है। हालांकि यह एक शरारत से ज्यादा कुछ नहीं है।

सच यह है कि दोनों देशों ने विभाजन और दो स्वतंत्रता अधिनियमों को स्वीकारा था और विवाद उस जमीन को लेकर है, जिस पर पाकिस्तान कब्जा चाहता है। इसकी तुलना में चीन और भारत के बीच का जमीन विवाद ज्यादा जटिल है, क्योंकि सीमा के एक बड़े हिस्से का सीमांकन हुआ ही नहीं है। इन समस्याओं का समाधान बातचीत ही है, युद्ध नहीं, जैसा कि प्रधानमंत्री भी कह चुके हैं, 'यह युद्धों का दौर नहीं है।'

पोप फ्रांसिस ने रूस, यूक्रेन, इस्राइल और हमास से लगातार शांति की अपील की है, लेकिन उन्हें अनसुना कर दिया गया। उनके पूर्ववर्तियों के साथ भी यही हुआ था। युद्धों ने इस ग्रह को नुकसान ही पहुंचाया है। समुद्री कानूनों पर अंतरराष्ट्रीय कन्वेंशन (1982) को 150 से ज्यादा देशों ने अनुमोदित किया है। इसके तहत बने अंतरराष्ट्रीय न्यायाधिकरण ने कई नौसैनिक विवादों का समाधान किया है। जमीन संबंधी विवादों के लिए भी एक ऐसे ही अंतरराष्ट्रीय न्यायाधिकरण की स्थापना जरूरी है। इसके बगैर युद्ध, मौतें और विनाश रोकना संभव नहीं होगा।

हिन्द स्वराज्य

मशीनें (भाग-3)

गतांक से आगे...

प्रश्न- ट्रामगाड़ी और बिजली की बत्ती का क्या होगा?

उत्तर- यह सवाल आपने बहुत देर से किया। इस सवाल में अब कोई जान नहीं रही। रेलने अगर हमारा नाश किया है, तो क्या ट्राम नहीं करती? यंत्र तो साँप का ऐसा बिल है, जिसमें एक नहीं, बल्कि सैकड़ों साँप होते हैं। एक के पीछे दूसरा लगा ही रहता है। जहाँ यंत्र होंगे वहाँ बड़े शहर होंगे। जहाँ बड़े शहर होंगे वहाँ ट्रामगाड़ी और रेलगाड़ी होगी। वहीं बिजली की बत्ती की जरूरत रहती है। आप जानते होंगे कि विलायत में भी देहातों में बिजली की बत्ती या ट्राम नहीं है। प्रामाणिक वैद्य और डॉक्टर आपको बतायेंगे कि जहाँ रेलगाड़ी, ट्रामगाड़ी वगैरा साधन बढ़े हैं, वहाँ लोगों की तन्दुरुस्ती गिरी हुई होती है। मुझे याद है कि यूरोप के एक शहर में जब पैसे की तंगी हो गयी थी तब ट्रामों, वकीलों और डॉक्टरों की आमदनी घट गयी थी, लेकिन लोग तन्दुरुस्त हो गये थे। यंत्र का गुण तो मुझे एक भी याद नहीं आता, जब कि उसके अवगुणों से मैं पूरी किताब लिख सकता हूँ।

प्रश्न- यह सारा लिखा हुआ यंत्र की मदद से छापा जायेगा और उसकी मदद से बाँटा जायेगा, यह यंत्र का गुण है या अवगुण?

उत्तर- यह जहर की दवा जहर हैं की मिसाल है। इसमें यंत्र का कोई गुण नहीं है। यंत्र मरते-मरते कह जाता है कि मुझसे बचिये, होशियार रहिये; मुझसे आपको कोई फायदा नहीं होने का। अगर ऐसा कहा जाय कि यंत्र ने इतनी ठीक कोशिश की, तो यह भी उन्हीं के लिए लागू होता है, जो यंत्र के जाल में फँसे हुए हैं। लेकिन मूल बात न भूलियेगा। मन में यह तय कर लेना चाहिए कि यंत्र खराब चीज है। बाद में हम उसका धीरे-धीरे नाश करेंगे। ऐसा कोई सरल रास्ता कुदरत ने बनाया ही नहीं है कि जिस चीज की हमें इच्छा हो वह तुरन्त मिल जाय। यंत्र के ऊपर हमारी मीठी नजर के बजाय जहरीली नजर पड़ेगी, आखिर वह जायेगा ही।

इंडिया गठबंधन को कहीं महंगा न पड़ जाए कांग्रेस का गुरूर

उमेश चतुर्वेदी

क्या इंडी एलायंस फेल होने जा रहा है? पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के बीच ऐसे सवाल उठना सोशल मीडिया के दौर में ट्रोलिंग और आलोचना का कारण बन सकता है। लेकिन यह सवाल मौजूं हो चुका है। इसकी वजह है, विशेषकर उत्तर और मध्य भारत के विधानसभा चुनावों में बिना सामंजस्य के उतरे विपक्षी गठबंधन के उम्मीदवार।

राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में बेशक सीधा मुकाबला कांग्रेस और बीजेपी के ही बीच है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि समाजवादी पार्टी और आम आदमी पार्टी जैसे दलों की इन चुनावों में कोई भूमिका नहीं है। लेकिन जिस तरह कांग्रेस, विशेषकर राहुल गांधी का इन चुनावों में इंडिया गठबंधन के दलों और उनके नेताओं के साथ जैसा व्यवहार है, उसके संकेत साफ हैं। संकेत यह कि कांग्रेस अपनी शर्तों और मनमर्जी पर इन दलों को मौका देगी और अगर उसे महसूस हुआ तो वह सहयोगी दलों के लिए मौका भी नहीं छोड़ेगी। विपक्षी गठबंधन में सबसे बड़ा दल निश्चित तौर पर कांग्रेस है। उसका संगठन भी सबसे पुराना है। इस नाते उसका अगुआई का स्वाभाविक दावा भी बनता है। लेकिन उसे यह नहीं भूलना चाहिए कि उसकी सोच से आगे दुनिया निकल चुकी है। अगर वह सचमुच बड़ा दल ही होती, जमीन पर उसकी वैसी ही पकड़ होती, जैसी करीब तीन दशक पहले तक थी, तब उसे गठबंधन की भला जरूरत ही क्यों पड़ती? लेकिन कांग्रेस और उसका नेतृत्व अब भी अतीत के चमकदार पन्नों में ही अपना इतिहास देखने का आदी है। वह स्वीकार नहीं कर पा रही है कि सुनहरे इतिहास के पन्ने आधुनिकता की यात्रा करते-करते धुंधले पड़ गए हैं। यह धुंधलापन ही उसे गठबंधन के लिए मजबूर कर रहा है।

संख्याबल के लिहाज से देखें तो विपक्षी गठबंधन में ममता बनर्जी का दल सबसे बड़ा है। लेकिन ममता इन दिनों गठबंधन की गतिविधियों में कम ही दिलचस्पी दिखा रही हैं। जाहिर है कि वे गठबंधन को अपने हिसाब से तौलना और उसका बंगाली माटी में इस्तेमाल की गुंजाइश देख रही हैं। जनता दल यूनाइटेड भी बड़ा दल है। लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि उसके सांसदों की संख्या बीजेपी के साथ मिलकर चुनाव लड़ने के चलते इतनी है।

इस लिहाज से विपक्षी गठबंधन में समाजवादी पार्टी दूसरे नंबर का महत्वपूर्ण दल है। लोकसभा में उसके सांसदों की संख्या भले ही कम हो, लेकिन यह तय है कि जनसंख्या और लोकसभा सीटों के लिहाज से सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में वही बीजेपी के सीधे मुकाबले में है। ऐसे में समाजवादी पार्टी का गठबंधन में अहमियत की चाहत रखना स्वाभाविक है। इसी चाहत के चलते अखिलेश यादव ने मध्य प्रदेश में अपने लिए कुछ सीटों की उम्मीद रखी। लेकिन कांग्रेस ने उनकी बात सुनना तो दूर, एक तरह से अपमानित कर दिया। कमलनाथ का यह कहना कि छोड़िए अखिलेश-वखिलेश को एक तरह से समाजवादी पार्टी का अपमान ही है। रही-सही कसर उत्तर प्रदेश के नये नवेले कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने पूरी कर दी। ऐसे में अखिलेश ने आपा खो दिया। इसका असर मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान तीनों राज्यों में दिख रहा है। यहां समाजवादी पार्टी भी मैदान में है। शायद अखिलेश का हश्र देखकर ही आम आदमी पार्टी ने तीनों राज्यों में अपने उम्मीदवार उतार दिए।

मीडिया के कुछ मोदी विरोधी समीक्षक आजकल यह स्थापित करने में जुटे हैं कि मल्लिकार्जुन खड़गे कांग्रेस अध्यक्ष का पद दमदार तरीके से संभाल रहे हैं। इस कथन का अभिप्राय यह स्थापित करना है कि राहुल गांधी बेहद लोकतांत्रिक हैं। लेकिन हकीकत इससे कहीं दूर है। हकीकत यह है कि असल में कांग्रेस पर नियंत्रण राहुल गांधी का ही है। ऐसे में यह मानने में हर्ज नहीं होना चाहिए कि चाहे नीतीश कुमार को किनारे रखना हो या फिर अखिलेश पर कांग्रेसी हमला हो, या फिर आम आदमी पार्टी की उपेक्षा हो, सबके पीछे उनकी ही सोच है। राहुल गांधी इन दिनों जाति जनगणना की बात खूब कर रहे हैं। कुछ साल पहले एक वामपंथी पत्रकार समूह ने मीडिया समूहों की जाति जनगणना कराई थी। तब से लेकर वह समूह बार-बार यह स्थापित करने की कोशिश करता है कि मीडिया घरानों में दलित, अन्य पिछड़ा वर्ग आदि का उचित प्रतिनिधित्व नहीं है।आजकल राहुल गांधी इसे अपनी रिसर्च बता रहे हैं और राष्ट्रीय स्तर पर जाति जनगणना की वकालत कर रहे हैं। उनके नेता राज्यों में वादा कर रहे हैं कि जैसे ही उनकी सरकार बनी, वह जाति जनगणना कराएगी।

राजस्थान में तो ऐन चुनावों के बीच ऐसा ऐलान अशोक गहलोत ने कर भी दिया, जिसे चुनाव आयोग ने रोक दिया। जाति जनगणना की मांग हो या लागू करना हो, पिछड़े वर्गों को फायदा पहुंचाने की बजाय उसका असल मकसद राजनीतिक फायदा उठाना ज्यादा है। राहुल गांधी भी निश्चित तौर पर इसी वजह से बार-बार इस मसले को उठा रहे हैं।

अगर जाति जनगणना का मुद्दा विकास की दौड़ में पीछे रह गई जातियों को फायदा पहुंचाना होता और अन्य पिछड़ा वर्ग की राजनीति को शह देना होता तो कांग्रेस कम से कम अखिलेश से ऐसा व्यवहार नहीं करती। बेशक अखिलेश और उनका परिवार क्रीमी लेयर तबके से आता हो, लेकिन सच यह भी है कि वे भी उसी अन्य पिछड़े वर्ग के हैं। बेहतर तो होता कि कांग्रेस अखिलेश के साथ पिछड़े वर्ग के नेता की ही तरह व्यवहार करती। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है।

कांग्रेस को कुछ राज्यों मसलन हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक जैसे राज्यों में जीत के बाद लगता है कि अब उसके लिए बयार बह रही है। लेकिन उसे यह नहीं भूलना चाहिए कि कर्नाटक, हिमाचल, मध्य प्रदेश और राजस्थान में उसे जीत पहले भी मिली, लेकिन लोकसभा चुनावों में भाजपा की लहर चली। राजस्थान की समूची सीटें भाजपा ने जीती, कर्नाटक में भी यही हाल रहा, हिमाचल में भी कांग्रेस का सूपड़ा साफ हुआ और मध्य प्रदेश में भी कांग्रेस के दो ही सांसद चुने गए। साफ है कि कांग्रेस के केंद्रीय नेतृत्व पर तब जनता ने भरोसा नहीं किया। और लगता नहीं कि बहुत हालात बदले हुए हैं। लेकिन कांग्रेस जिस तरह अपने सहयोगी दलों की अनदेखी कर रही है और कई बार वह अनदेखी अपमान तक पहुंच जाती है, ऐसे में लगता नहीं कि कांग्रेस चेत रही है। हाल ही में मोतीहारी स्थित केंद्रीय विश्वविद्यालय के कार्यक्रम में नीतीश ने जिस तरह बीजेपी के लोगों के प्रति अपनी दोस्ती का इजहार किया, उसे कांग्रेस के व्यवहार से उपजी मायूसी का नतीजा बताया गया। कांग्रेस के प्रति आम आदमी पार्टी भी सशंकित नजर आ रही है। ऐसे में सवाल यह है कि किस बिना पर कांग्रेस अगले आम चुनाव में अपने सहयोगी दलों का दिल से साथ हासिल कर पाएगी। उसके लिए ऐसा कर पाना आसान नहीं लगता।

कांग्रेस भले ही सोच रही हो कि गठबंधन की गांठ लोकसभा चुनावों तक ढीली पड़ जाएगी, लेकिन ऐसा होना आसान नहीं लगता। नीतीश का अतीत गवाह है कि वे अपना अपमान नहीं भूल पाते। अखिलेश तो खुलकर बोल ही देते हैं। अखिलेश के लोगों ने जिस तरह उत्तर प्रदेश की सड़कों पर उन्हें भावी प्रधानमंत्री के तौर पर प्रस्तुत किया है, उसके संकेत साफ हैं। संकेत यह कि आने वाले दिनों में अखिलेश कांग्रेस और राहुल की राह में कांटे जरूर बोएंगे। राहुल हर मुमकिन मोर्चे पर अडानी-अडानी करते रहे हैं। लेकिन यह भी सच है कि उनके इस कोरस गान में ना तो नीतीश शामिल हुए, ना ही अखिलेश और ना ही ममता बनर्जी। साफ है कि राहुल हों या कांग्रेस या कांग्रेस के दूसरे नेता, अगले आम चुनाव में उनका पिछड़ावादी होने का दावा, अडानी विरोध का एजेंडा और गठबंधन के बेल्लौस नेता बनने की उम्मीद शायद ही पूरी हो पाए।

धार सीट पर वर्मा दंपती का दबदबा

कमलेश सेन

धार का इतिहास अति प्राचीन समय से जुड़ा है। धार और मांडू का वर्णन इतिहास की पुस्तकों में दर्ज है। पवार वंश के राजा यहां के शासक थे। धारा नगरी से धार का नाम का उद्भव हुआ। आजादी के बाद से धार-बदनावर संयुक्त विधानसभा सीट थी। 1951 -52 में यहां से कांग्रेस विजयी रही थी। 1957 के चुनाव में धार नाम से नामकरण हो गया और यह पृथक सीट हो गई। 1957 के चुनाव में धार से हिन्दू महासभा के वसंत राव प्रधान विजयी रहे थे। 1962 के चुनाव में कांग्रेस ने हिन्दू महासभा के उम्मीदवार को पराजित कर कब्जा कर लिया था। 1967 में वसंतराव प्रधान हिंदू महासभा के बजाय जनसंघ से चुनाव लड़े और विजय रहे थे। 1972 में पुनः कांग्रेस की धार विधानसभा से विजय हुई। इस तरह बारी-बारी से प्रत्येक दल को मतदाता मौका मिलता रहा। 1977 के चुनाव में देश में जनता पार्टी की लहर व्याप्त थी। तब छात्र नेता विक्रम वर्मा जो इंदौर के क्रिश्चियन कॉलेज में छात्रसंघ से जुड़े रहे, उन्हें जनतापार्टी का उम्मीदवार बनाया और वे विजयी रहे। 1980 में भी विक्रम वर्मा विजय रहे थे। 1985 और 1998 के चुनाव में विक्रम वर्मा को पराजय का सामना करना पड़ा था। 1998 में करणसिंह पवार से वर्मा मात्र 147 मतों से पराजित हो गए थे। विक्रम वर्मा राज्यसभा से सांसद और खेल युवा मामलों के मंत्री रहे। विक्रम वर्मा धार जिले की जमीनी राजनीति से जुड़े रहे। पिछले तीन चुनाव से लगातार विक्रम वर्मा की पत्नी नीना वर्मा विजयी होती रही हैं। वर्ष 2008 में काफी कशमकश में वे एकमात्र मत से विजय रही थीं। नीना वर्मा का चुनाव कोर्ट द्वारा शून्य घोषित कर दिया था। 2013 में नीना वर्मा पुनः चुनाव मैदान में खड़ी हुईं और कांग्रेस के बालमुकुंद गौतम को 11482 मतों से पराजित कर विजय प्राप्त की थी। 2018 में नीना वर्मा का मुकाबला प्रभा गौतम से हुआ और इसमें नीना वर्मा विजय रही थी। पार्टी के जमीनी कार्यकर्ता जो लंबे समय से पार्टी का कार्य कर रहे हैं। वे इस बात से नाराज हैं कि धार की सीट एक परिवार की हो गई है और अन्य को मौका नहीं मिल पा रहा है। इस बार के चुनाव में भाजपा ने नीना वर्मा को पुनः मौका देकर असंतोष को बढ़ा दिया है। धार के मिलन गार्डन में आयोजित कार्यक्रम में परिवारवाद का आरोप लगा कर विरोध किया गया। इस बार नीना वर्मा की राह इतनी आसान नहीं है। मतदाता का रुख यह सब दिशा तय करेगा और यह भविष्य ही बताएगा। धार विधानसभा में पहली महिला उम्मीदवार 1967 में कांग्रेस से प्रमिला बाई खड़ी हुई थीं, पर वे तीसरे स्थान पर रही थीं। सबसे कम मतों से विजय होने का रिकॉर्ड नीना वर्मा का 1 वोट से और विक्रम वर्मा का 147 मतों से पराजय का है। सर्वाधिक 16 उम्मीदवार मैदान में वर्ष 2013 में थे और न्यूनतम उम्मीदवार 3 वर्ष 1972 एवं 1977 में थे। सर्वाधिक मतदान वर्ष 2008 में 75.17 प्रतिशत हुआ था।

गठबंधन की उलझन के बीच नीतीश का राजनीतिक संतुलन

शिव शरण शुक्ला

नीतीश कुमार की राजनीतिक यात्रा एक चौराहे पर है, क्योंकि वह बदलते गठबंधनों और सत्ता संघर्षों की पृष्ठभूमि के बीच, बिहार के लगातार बदलते राजनीतिक परिदृश्य में संतुलन खोजने का प्रयास कर रहे हैं। वह जो रास्ता चुनेंगे वह बिहार के राजनीतिक भविष्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालेगा। गतिशील और लगातार बदलते राजनीतिक परिदृश्य में, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अज्ञात राह पर चलते दिख रहे हैं, जिससे उनकी राजनीतिक रणनीति पर सवाल उठ रहे हैं। विपक्षी गठबंधन का हिस्सा होने के बावजूद, नीतीश के जदयू ने मध्य प्रदेश में शुरुआती उम्मीदवार सूची में कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के खिलाफ अपने उम्मीदवार उतारे। ये दोनों दल विपक्षी गठबंधन के अभिन्न सदस्य हैं। हालांकि, जैसा कि विपक्षी गठबंधन का झुकाव कांग्रेस पार्टी की ओर होता दिख रहा था, नीतीश ने अपनी रणनीति को समायोजित कर लिया है। मध्य प्रदेश के लिए जदयू की दूसरी सूची मे नीतीश ने राजनीतिक संतुलन बनाते हुए कांग्रेस के विरोध में 4-1 के बाद भाजपा के खिलाफ 4-1 की लिस्ट जारी कर दी। दूसरी सूची में जदयू ने पांच ऐसी सीटों पर उम्मीदवार उतार दिए जिनमें पिछले विधानसभा चुनाव में चार पर भाजपा के विधायक चुने गए थे। इनमें नरयावली से भाजपा प्रदीप लारिया, बहोरीबंद से भाजपा से प्रणय पांडे, जबलपुर उत्तर से भाजपा से राकेश सिंह और बालाघाट से भाजपा से गौरीशंकर बिसेन चुनाव जीते थे। इनमें एक सीट गोटेगांव से आईएनसी से नर्मदा प्रसाद प्रजापति ने चुनाव जीता था। कांग्रेस और राजद के बीच गठबंधन अधिक स्वाभाविक है, जबकि नीतीश कुमार का शामिल होना कुछ हद तक मजबूरी प्रतीत होता है। जिस तरह से कांग्रेस ने धीरे-धीरे गठबंधन के भीतर नीतीश के महत्व को कम किया, उससे उनमें असंतोष साफ नजर आने लगा है। फिर भी, वह सीमित विकल्पों के साथ एक चौराहे पर खड़ा दिखता है। नीतीश के ट्रेडमार्क राजनीतिक संतुलन अधिनियम, जिसे उन्होंने बिहार में प्रभावी ढंग से लागू किया है, को इस बार भाजपा के अधिक मुखर रुख अपनाने से चुनौती मिलती दिख रही है। इसके अतिरिक्त, लालू प्रसाद यादव, जो अक्सर नीतीश को छोटा भाई बताते हैं, उन्हें वापस लाने की कोशिश करते रहते हैं। हाल की घटनाओं ने नीतीश और कांग्रेस के बीच स्पष्ट कलह को उजागर किया है। जब नीतीश ने आनंद मोहन के गांव का दौरा किया, तो लालू यादव अनुपस्थित थे। इसी तरह, श्रीकृष्ण सिंह की जयंती समारोह के दौरान कांग्रेस ने लालू यादव को तो निमंत्रण दिया, लेकिन नीतीश के साथ भी वैसा शिष्टाचार नहीं दिखाया।

अखिलेश यादव की तल्खी और विपक्षी एकता

रशीद किदवई

पिछले दिनों समाजवादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कांग्रेस को लेकर जो नाराजगी प्रकट की, वह दरअसल उस राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का एक उदाहरण है, जो विपक्षी दलों के इंडिया गठबंधन के घटक दलों के बीच चल रही है। इससे पहले भारत में जब भी गठबंधन बने हैं, तो उनमें किसी एक दल की भूमिका प्रमुख होती थी और अन्य दल सहयोगी पार्टियां होती थीं, लेकिन अभी विपक्षी दलों के गठबंधन में समाजवादी पार्टी, राष्ट्रीय जनता दल, जनता दल यूनाइटेड, तृणमूल कांग्रेस और आम आदमी पार्टी जैसे दल शामिल हैं, जो अपने आप को कांग्रेस के बराबर समझते हैं। उन्हें लगता है कि कांग्रेस भी उनके ऊपर उसी तरह से निर्भर है, जितना कि वे कांग्रेस पर निर्भर हैं।

इसी प्रतिस्पर्धा की वजह से इन दलों के बीच एक अघोषित रस्साकशी चल रही है। अखिलेश यादव ने मध्य प्रदेश चुनाव में अपनी पार्टी के उम्मीदवार होने को लेकर जो टिप्पणियां की हैं, उन्हें इसी नजरिये से देखा जाना चाहिए। उनके इस रवैये की एक वजह यह भी है कि अक्सर राजनीतिक दल अपना जनाधार बढ़ाने की कोशिश करते हैं। ऐसे में भले ही जिन इलाकों में उनका प्रभाव कम हो, लेकिन ऐसे आक्रामक बयानों से पार्टी नेता वहां अपने सीमित समर्थकों को एक संदेश देना चाहते हैं। कांग्रेस के लिए मध्य प्रदेश के संदर्भ में व्यावहारिक समस्या भी है कि पिछले चुनाव में भाजपा और कांग्रेस के बीच नजदीकी मुकाबला हुआ था और बाद में 21 विधायकों के पाला बदलने की वजह से भाजपा की सरकार बन गयी। इसलिए इस बार कांग्रेस बहुत सतर्क है और उसे लगा कि अगर वह सपा को पांच-छह सीटें दे देती और उनके कुछ विधायक जीत जाते, तो उन्हें काबू में रखना चुनौती हो सकती थी।

विपक्षी दलों के गठबंधन में दरार को लेकर भाजपा

जरूर हमले कर रही है, लेकिन वास्तविकता यह है कि ये यूपीए या एनडीए जैसा गठबंधन नहीं है। अखिलेश यादव ने एक तरह से यह स्टैंड लेकर इस बात का इशारा दे दिया है कि जब लोकसभा के चुनाव होंगे, तो उत्तर प्रदेश में भी वह कांग्रेस के साथ भी उसी तरह का व्यवहार कर सकते हैं। विपक्षी गठबंधन में अघोषित रूप से अखिलेश यादव की सपा, ममता बनर्जी की टीएमसी और अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी एक अलग तरह का छोटा ग्रुप हैं। वैसे ही कांग्रेस, डीएमके, आरजेडी, एनसीपी, वाम दलों के अलग ग्रुप हैं, जो पुराने यूपीए में सहयोगी रह चुके हैं और उनके बीच एक समझ है, लेकिन आप के साथ कांग्रेस कभी नहीं रही। टीएमसी के साथ भी गठबंधन था, जो टूट गया और सपा के साथ भी तालमेल कामयाब नहीं रहा। ऐसे में इस छोटे ग्रुप की पार्टियां लॉबीइंग कर रही हैं।

इंडिया गठबंधन की 28 पार्टियों में अधिकतर के बीच कोई समानता नहीं है। इसलिए वे एक-दूसरे पर प्रहार कर फायदा उठाने की कोशिश कर रही हैं। विपक्षी दलों के एकजुट होने को लेकर भाजपा थोड़ी असहज है और इसलिए वह दबाव बनाने के लिए घटक दलों की नाराजगी की घटनाओं को तूल देने की कोशिश कर रही है, लेकिन राजनीतिक दलों में यह रस्साकशी स्वाभाविक बात है। स्वयं भाजपा को ऐसे अनुभव हुए हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि तेलंगाना में केसीआर की बीआरएस के साथ उनका गठबंधन होने वाला था, जिसे उन्होंने स्वीकार नहीं किया। ऐसे ही तमिलनाडु में भाजपा ने एआइएडीएमके के साथ गठबंधन की कोशिश की, लेकिन वह कामयाब नहीं हो सकी। भाजपा के इतिहास पर नजर डालें, तो कांग्रेस, वाम दलों और सपा को छोड़ वह देश के लगभग हर राजनीतिक दल के साथ तालमेल कर चुकी है। इस बार का चुनाव भाजपा के लिए एक अलग तरह की चुनौती है, क्योंकि 2014 और 2019 के चुनावों में उसके खिलाफ कोई गठबंधन नहीं बन सका था। इस बार तमाम विपक्षी दल बेबस होकर एकजुट हुए हैं। आम चुनाव में भाजपा को मात देने के लिए गैर कांग्रेसी दलों को 150 सीटें जीतनी होंगी और कांग्रेस को भी 125-150 सीटें जीतनी पड़ेंगी। ऐसे में दोनों ही पक्षों को पता है कि चाहे जितनी भी खटपट हो, साथ-साथ रहना उनकी मजबूरी है।

सीटों के बंटवारे को लेकर कांग्रेस के लिए अखिलेश यादव के साथ तल्खी जैसी स्थिति दूसरे दलों के साथ भी आ सकती है। यहां पर किसी एक ऐसे नेता के होने से फर्क पड़ सकता था, जो एक संयोजक या समन्वयक की भूमिका निभा सके या जिसकी बातों का सब सम्मान कर सकें। जैसे जनता पार्टी के समय जयप्रकाश नारायण थे, फिर बाद के चुनावों में हरकिशन सिंह सुरजीत और विश्वनाथ प्रताप सिंह जैसे नेताओं ने अहम भूमिका निभायी, जो तटस्थ भी थे और जिनके प्रति हर घटक दल में आदर का भाव था, लेकिन आज समस्या यह है कि जो नेता ऐसी मध्यस्थता या सुलह कराने वाली भूमिका निभा सकते हैं, उनकी स्थिति स्पष्ट नहीं है। जैसे नीतीश कुमार को खुद ही प्रधानमंत्री पद का एक दावेदार समझा जा रहा है। इसी प्रकार शरद पवार की राजनीतिक निष्ठा को लेकर भी लोग आश्वस्त नहीं हो पा रहे हैं।

दो बिजनेसमैन की लड़ाई में कैसे फंसी महुआ

अभिनय आकाश

संसद में अपने दमदार भाषणों के लिए कई नेताओं की तारीफ होती रही है। चाहे वो पक्ष के रहे हो या विपक्ष के सांसद। उन्हीं में से एक महुआ मोइत्रा हैं। पश्चिम बंगाल की कृष्णानगर से लोकसभा सांसद अपने भाषणों के जरिए मोदी सरकार पर हमलावर नजर आती हैं। लेकिन अब बीजेपी के सांसद निशिकांत दुबे ने उन पर कई गंभीर आरोप लगाए थे कि महुआ लोकसभा में सवाल पूछने के पैसे लेती हैं। पैसे लेने का नाम भी बिजनेसमैन हीरानंदानी के रूप में सामने आया। जिसके बाद मीडिया में एक चिट्ठी हीरानंदानी के नाम से आई जिसमें इन आरोपों को सही बताया गया। मामला संसद की एथिक्स कमेटी के पास भी जा चुका है। आज हम इसी विवाद का एमआरआई स्कैन करेंगे। इस पूरे विवाद के किरदार कौन-कौन हैं। महुआ पर जो आरोप लगे हैं उनपर संसद क्या कार्रवाई कर सकती है?

15 अक्टूबर 2023 को झारखंड के गोड्डा से सांसद ने निशिकांत दुबे ने लोकसभा सांसद ओम बिरला को एक शिकायती पत्र लिखा। दूबे ने आरोप लगाया कि महुआ मोइत्रा ने संसद में अडानी समूह के खिलाफ सवाल पूछने के लिए पैसे लेती हैं। लिहाजा उन्हें लोकसभा से संस्पेंड कर दिया जाए और उनके खिलाफ भ्रष्टाचार की जांच हो। निशिकांत दुबे ने कहा कि हीरानंदानी समूह को अडानी ग्रुप की वजह से एनर्जी और इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़ा एक बड़ा कॉन्ट्रैक्ट नहीं मिल पाया। अडानी समूह और हीरानंदानी समूह कॉन्ट्रैक्ट पाने के लिए देश के कई इलाकों में एक दूसरे के खिलाफ बोली लगाते हैं। यानी दोनों समूहों में तगड़ा कंपटीशन है। हीरानंदानी समूह ने खार खाकर महुआ मोइत्रा को पैसे देकर अडानी समूह को लेकर सवाल पूछने के लिए कहा। निशिकांत दुबे ने केंद्रीय आईटी मंत्री अश्वनी वैष्णव और राज्यमंत्री राजीव चंद्रशेखर को भी एक चिट्ठी लिखी। इस चिट्ठी में इल्जाम लगाया कि महुआ मोइत्रा ने हीरानंदानी को अपने लोकसभा वेबसाइट का लॉगिन और पासवर्ड दे दिया। वो इसका इस्तेमाल अपने लाभ के लिए करने लगे। इसे भारत की सुरक्षा से खिलवाड़ बताया गया।

मूलतः, सवाल यह है कि क्या कोई सांसद कुछ प्रतिफल के बदले में प्रश्न पूछ रहा है। अगर यह बात प्रमाणित होती है तो यह गंभीर मामला है। यदि किसी सांसद ने प्रश्न पूछा है और किसी ऐसे व्यक्ति की ओर से अन्य संसदीय कार्य किया है जिसने विचार किया है, तो यह वास्तव में विशेषाधिकार समिति के पास आना चाहिए क्योंकि यह विशेषाधिकार का गंभीर उल्लंघन और सदन की अवमानना है। ऐसी स्थिति में संसद सदस्य को सदन से निष्कासित करने के अपने अधिकार का प्रयोग कर सकती है।

इसे विशेषाधिकार समिति को भेजा जाना चाहिए था, जो विशेषाधिकार के कथित उल्लंघन और सदन की अवमानना की जांच करने वाली एकमात्र समिति है। आचार समिति केवल औचित्य आदि के कुछ प्रश्नों से निपट रही है, उन मामलों के साथ नहीं जहां विशेषाधिकार का कथित उल्लंघन होता है। उदाहरण के लिए, एक ऐसा मामला था जिसमें एक व्यक्ति अपनी मालकिन या प्रेमिका को यह कहकर आधिकारिक दौरे

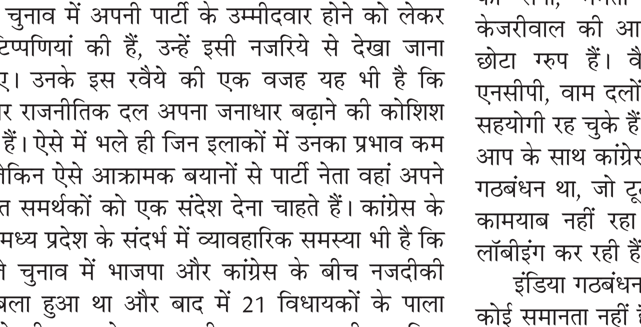

पर ले गया कि वह उसकी पत्नी है और आचार समिति ने इस पर गौर किया। लेकिन एक और उदाहरण था जिसमें एक आदमी अपनी पत्नी और बच्चे के पासपोर्ट पर एक महिला और एक लड़के को विदेश ले गया। ये एक गंभीर मामला बनता और पासपोर्ट अधिनियम का उल्लंघन भी। इसकी जांच के लिए एक विशेष समिति गठित की गई और उन्हें सदन से निष्कासित कर दिया गया। इसलिए, गंभीर मामलों के लिए, या तो विशेषाधिकार समिति होती है या उस विशेष उद्देश्य के लिए सदन द्वारा नियुक्त एक विशेष समिति होती है।

क्या पहले भी किसी सांसद पर लगे हैं ऐसे आरोप? - नहीं, यह प्रणाली हाल ही में अस्तित्व में आई है। लोकसभा के नियमों के अनुसार, एक सदस्य को अपनी पहचान संख्या के साथ हस्ताक्षरित एक विशेष फॉर्म में एक प्रश्न प्रस्तुत करना होता है। प्रश्न सदस्य की ओर से किसी के द्वारा दिया जा सकता है, लेकिन इस पर सदस्य के हस्ताक्षर होने चाहिए। हस्ताक्षर सत्यापित किया जाता है और फिर प्रश्न पर कार्रवाई की जाती है।

संसद सदस्यों अपना लॉगिन-पासवर्ड किसी को शेयर किया जा सकता है? - अभी तक ऐसा कोई नियम नहीं है> प्रश्नों को ऑनलाइन जमा करने का चलन हाल ही में हुआ है। जब ऑनलाइन सबमिशन की अनुमति दी गई तो नियम में संशोधन किया जाना चाहिए था। अगर कोई नियम होता तो उल्लंघन के खिलाफ कुछ सुरक्षा उपाय भी बताए गए होते।

समिति इसमें शामिल व्यक्तियों, हितधारकों शिकायत करने वाले व्यक्ति, बयान देने वाले, हलफनामे दायर करने वाले लोगों को बुलाएगी और उनके साक्ष्य लेगी। इसके बाद कमेटी उस सदस्य को जरूर बुलाएगी जिसके खिलाफ शिकायत की गई है। उसे शिकायतकर्ता से जिरह करने का अधिकार है। वह एक वकील के माध्यम से पेश होने के लिए अध्यक्ष की अनुमति भी मांग सकती है, जो दूसरे पक्ष से जिरह कर सकता है। समिति किसी निर्णय पर पहुंचने में कितना समय ले सकती है और यदि उन्हें शिकायत में योग्यता मिलती है, तो वह अधिकतम सजा की सिफारिश क्या कर सकती है? समिति को लगने वाला समय मामले की जटिलता पर निर्भर करता है। सामान्य तौर पर दो महीने का समय दिया जा सकता है और आवश्यकता पड़ने पर समिति विस्तार की मांग कर सकती है। यह समिति पूर्व में सदस्य को एक निश्चित अवधि के लिए निलंबित करने की सिफारिश कर चुकी है। अपनी गर्लफ्रेंड को टूर पर ले जाने वाले सदस्य को 30 बैठकों के लिए निलंबित कर दिया गया। मुझे लगता है कि एथिक्स कमेटी सिर्फ निलंबन की सिफ़ारिश कर सकती है।

क्या समिति इस मामले को सीबीआई या पुलिस जैसी किसी जांच एजेंसी को भेज सकती है? - नहीं, इस (नैतिकता) समिति के पास उस प्रकार का जनादेश नहीं है।

संसद की सभी समितियों में सत्तारूढ़ दल के पास बहुमत होगा। इसी तरह समितियों की संरचना की जाती है। संसदीय समितियों से अपेक्षा की जाती है कि वे मुद्दों की जांच करते समय दलगत विचारों से ऊपर उठकर गैर-राजनीतिक तरीके से कार्य करें। यह परंपरा रही है, और उम्मीद है कि समिति मुद्दों को निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ तरीके से संबोधित करेगी। समिति के पास कार्यकारी शक्तियाँ नहीं हैं; यह सदस्य को दंडित नहीं कर सकता. इसकी अनुशंसा सदन के समक्ष जायेगी, जो निर्णय लेगी। सदन सिफ़ारिश को स्वीकार कर सकता है और सुझाई गई सज़ा से सहमत हो सकता है, या शायद निष्कर्षों से सहमत हो सकता है लेकिन सज़ा से नहीं - यह एक उदार दृष्टिकोण अपना सकता है।

क्या सांसद संभावित प्रतिकूल निर्णय के खिलाफ अदालत में अपील कर सकता है? - यदि सदस्य को निष्कासित किया जाता है तो वह इसे चुनौती दे सकती है। यदि समिति द्वारा पूरी प्रक्रिया को अंजाम देने के तरीके में कुछ अवैधता या असंवैधानिकता है, यदि प्राकृतिक न्याय से पूरी तरह इनकार किया गया है, तो उस स्थिति में वह इसे चुनौती दे सकती है अन्यथा नहीं।

1 नवंबर को वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी ?

पूजा का शुभ मुहूर्त और चंद्रोदय समय क्या है ? वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी व्रत 2023 कब है ? हिंदू कैलेंडर के अनुसार, कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि की शुरूआत 31 अक्टूबर को रात 09:30 बजे से होगी और इस तिथि की समाप्ति 01 नवंबर को रात 09 बजकर 19 मिनट पर होगी। उदयातिथि के आधार पर देखा जाए तो वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी का व्रत 1 नवंबर को रखना चाहिए।

सर्वार्थ सिद्धि योग में करें गणेश पूजा, जानें मुहूर्त और चंद्रोदय समय कार्तिक कृष्ण चतुर्थी तिथि की **शुरूआत 31 अक्टूबर को रात 09:30 बजे से होगी।**
वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी के दिन सर्वार्थ सिद्धि योग, परिघ योग और शिव योग बन रहा है।
वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी पर चंद्रोदय रात 08 बजकर 15 मिनट पर होगा।

वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी के दिन करवा चौथ का व्रत रखा जाता है। हर साल कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी होती है। इस बार वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी पर सर्वार्थ सिद्धि समेत 3 योग बन रहे हैं और 4 संयोग भी बन रहे हैं।

इस दिन गणेश जी की पूजा करते हैं और रात के समय में चंद्रमा को अर्घ्य देते हैं। बिना चंद्र अर्घ्य के यह व्रत पूर्ण नहीं होता है। इस दिन सुहागन महिलाएं अपने पति की लंबी आयु के लिए करवा चौथ का निर्जला व्रत रखती हैं। काशी के ज्योतिषाचार्य चक्रपाणि भट्ट से जानते हैं कि वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी व्रत कब है?

3 शुभ योग में वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी व्रत

वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी के दिन सर्वार्थ सिद्धि योग, परिघ योग और शिव योग बन रहा है। उस दिन सर्वार्थ सिद्धि योग सुबह 06:33 बजे से अलगे दिन सुबह 04:36 बजे तक है। इस दिन परिघ योग प्रातःकाल से लेकर दोपहर 02:07 बजे तक है, उसके बाद से शिव योग प्रारंभ हो जाएगा, जो रात तक रहेगा।

वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी पर 4 शुभ संयोग

इस साल 4 शुभ संयोग में वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी मनाई जाएगी। वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी के दिन करवा चौथ और रुद्राभिषेक का संयोग बना है।

उसके अलावा बुधवार दिन भी गणेश पूजा के लिए है। इस तरह से वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी पर 4 शुभ संयोग बनेंगे। वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी पर रुद्राभिषेक सूर्योदय से कर सकते हैं। पूरे दिन शिववास है।

वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी पर चंद्रोदय

वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी के दिन चंद्रोदय रात 08 बजकर 15 मिनट पर होगा। उस समय आपको चंद्रमा की पूजा करनी चाहिए। उसके बाद कच्चे दूध, पानी, अक्षत और सफेद फूल से चंद्रमा को अर्घ्य देना चाहिए।

वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी का महत्व

इस व्रत को रखकर गणेश जी की पूजा करने से संकट दूर होते हैं। गणपति बप्पा के आशीर्वाद से मनोकामनाएं पूरी होती हैं। कार्यों में आने वाली विघ्न और बाधाएं खत्म होती हैं, कार्य में सफलता प्राप्त होती है।

सबसे पहले किसने रखा था करवा चौथ का व्रत?

करवा चौथ का शुभ मुहूर्त

इस साल कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि की शुरुआत 31 अक्टूबर (मंगलवार) की रात 10 बजकर 42 मिनट से होने जा रही है और समापन अगले दिन 1 नवंबर (बुधवार) की रात 9 बजकर 53 मिनट पर होगा। वहीं, उदयातिथि और चंद्रोदय को देखते हुए 1 नवंबर को करवा चौथ का व्रत रखा जाएगा। वहीं, पूजा करने का शुभ मुहूर्त शाम 5 बजकर 12 मिनट से रात 8 बजकर 43 मिनट तक रहने वाला है।

हिन्दू धर्म में करवा चौथ का विशेष महत्व है। करवा चौथ का व्रत सुहागिन महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र के लिए करती हैं। मान्यता है कि महिलाओं द्वारा इस पर्व को करने से इनके पति के सारे संकट दूर हो जाते हैं और दीर्घायु होते हैं। करवा चौथ का व्रत हर साल कार्तिक माह के कृष्णा पक्ष के चतुर्थी तिथि को मनाया जाता है। वहीं व्रत रखने की यह परंपरा आदि अनादि काल से चली आ रही है। ऐसे में मन में एक सवाल आता है कि करवा चौथ का व्रत सबसे पहले किसने रखा होगा। हर साल करवा चौथ का व्रत कार्तिक महीने के कृष्णा पक्ष की चतुर्थी के दिन रखा जाता है।
वहीं इस साल 1 नवंबर को करवा चौथ का व्रत रखा जाएगा। इस दिन महिलाए निर्जला व्रत रखकर अपने पति की दीर्घायु की कामना करती हैं और यह परंपरा आदि अनादि काल से ही चलती आ रही है। वहीं सबसे पहले करवा चौथ का व्रत माता पार्वती भगवान शिव के लिए रखा था।

दूसरी प्राचीन कथा

पंडित जी ने बताया कि एक दूसरी प्राचीन कथा यह भी है कि जब देवताओं का राक्षसो से युद्ध चल रहा था तो राक्षस सभी देवताओं पर भारी पड़े थे। तो सभी देवी ब्रह्मदेव के पास पहुंची और अपने पतियों की रक्षा के लिए सुझाव मांगा। तभी ब्रह्मदेव ने करवा चौथ व्रत रखने का सुझाव दिया। जिससे उनके पति दीर्घायु हो सकें। तभी से करवा चौथ के व्रत की परंपरा चली आ रही है।

चांद की क्यों होती है पूजा

ज्योतिषाचार्य के अनुसार, चंद्रमा से अमृत वर्षा होती है। जिसके कारण चंद्रमा को पूजने से सुहागिन महिलाओं के पति पर अमृत वर्षा होती है। वहीं दूसरी तरफ एक मान्यता यह भी है कि जब भगवान गणेश की गर्दन कटी तो मस्तिष्क जाकर चंद्रमा पर गिरा तो भगवान गणेश की पत्नी सिद्धि और बुद्धि चंद्रमा में ही अपने पति को देखती थी और चंद्रमा को देखकर ही अपना व्रत तोड़ती थीं। इसलिए करवा चौथ के दिन चंद्रमा को देखकर ही व्रत तोड़ा जाता है।

मिट्टी के करवा के बिना क्यों अधूरा है करवा चौथ

हिन्दू धर्म में करवा चौथ का व्रत बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। यह कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को मनाया जाता है। इस दिन सुहागिन महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र के लिए निर्जला व्रत रखती हैं और पूजा-पाठ करती हैं। इस दिन रात्रि में चांद की पूजा करने का भी महत्व है। महिलाएं चांद की पूजा करने के बाद ही व्रत को तोड़ती हैं। इस साल करवा चौथ का पर्व 1 नवंबर को है। ऐसी मान्यता है कि करवा चौथ के दिन पूजा में मिट्टी के करवे का प्रयोग करना चाहिए। यह बेहद शुभ और पवित्र माना जाता है।
करवा पंच तत्वों का प्रतीक माना जाता है। मिट्टी के करवा में पांच तत्व होते हैं, जैसे कि जल, मिट्टी, अग्नि, आकाश, वायु।

जिससे व्यक्ति का शरीर भी बना है। करवा में मिट्टी और पानी मिलाया जाता है। पानी में मिट्टी को गलाकर करवा बनाया जाता है। यह भूमि और जल तत्व का प्रतीक है। उसके बाद इसे धूप और हवा से सुखाकर तैयार किया जाता है पश्चात आग में पकाया जाता है। हमारी संस्कृति में पानी को परम ब्रह्म माना गया है। सभी जीवों की उत्पत्ति यहीं से हुई है।
इसलिए मिट्टी के करवे से पानी पिलाकर ही पति अपनी पत्नी का व्रत खोलें। यह पंच तत्व और परमात्मा दोनों को साक्षी बनाकर दांपत्य जीवन में सुखी बनाने की कामना करते हैं। साथ ही मिट्टी के बर्तन से पानी पीने से स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है।

वास्तु के इन उपायों से करें बच्चों के तनाव को कम

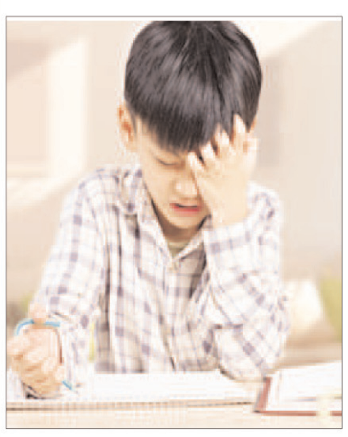

आज अधिकांश बच्चे जिनमें युवा किशोर से लेकर वयस्क तक शामिल हैं, सभी कम या खराब एकाग्रता के साथ चिंता, तनाव और घबराहट से पीड़ित हैं। आपने अक्सर उन्हें यह कहते हुए सुना होगा कि वे चीजों को अधिक समय तक याद नहीं रख सकते। ऐसा ही मामला बच्चों के कमरे में वास्तु दोष का होता है जहां स्टडी टेबल की स्थिति, पढने की स्थिति, सोने की स्थिति आदि बहुत मायने रखती है।

1. बच्चों को उत्तर/पूर्व या पश्चिम में कमरा देना चाहिए।
2. बच्चे को अपना सिर दक्षिण या पूर्व की ओर करके सोना चाहिए। पश्चिम या उत्तर की ओर सिर करके सोने से बचें।
3. हमेशा उत्तर या पूर्व की ओर मुंह करके पढ़ाई करें।
4. अपनी स्टडी टेबल को रद्दी सामग्री या अप्रासंगिक किताबों से अस्त-व्यस्त न करें। अपने आस-पास सकारात्मक ऊर्जा देने के लिए इसे साफ रखें।
5. उत्तर-पूर्व में कुछ जल स्रोत जैसे फिश एक्वेरियम या पानी का फव्वारा रखें।
6. पढ़ाई करते समय हमेशा स्टडी टेबल के सामने पानी से भरा गिलास रखें क्योंकि इससे एकाग्रता बढ़ती है।
7. उत्तर दिशा की दीवार पर लगी पेंडुलम घडियां भी एकाग्रता बढ़ाती हैं।
8. स्टडी टेबल का आकार नियमित होना चाहिए।
9. स्टडी टेबल दीवार से सटी नहीं होनी चाहिए। दीवार और टेबल के बीच कम से कम 3 इंच की जगह छोड़ दें।
10. स्टडी टेबल के ऊपर ओवरहेड स्टोरेज रखने से बचें।
11. बच्चों के कमरे में किसी भी तरह के इलेक्ट्रॉनिक सामान से दूर रहें। यदि वे मौजूद हैं, तो उपयोग में न होने पर उन्हें मुख्य स्विच से बंद करने का प्रयास करें।
12. सूरजमुखी के पीले रंग की कोई भी वस्तु रखें, इससे समग्र ग्रहण शक्ति और बुद्धि में वृद्धि होती है।

करवा चौथ पर चाहती हैं चमकती त्वचा तो आज ही लगाएं ये फेस पैक

करवा चौथ नजदीक आ रहा है और इस दिन हर महिला खूबसूरत दिखना चाहती है। किसी की सुंदरता को बढ़ाने के लिए चमकदार त्वचा का होना आवश्यक है। हालांकि, त्वचा की देखभाल के लिए पार्लर जाना जरूरी नहीं है। आप अपनी त्वचा को चमकदार और खूबसूरत बनाने के लिए घर पर ही कुछ खास सामग्रियों का इस्तेमाल कर सकते हैं। ऐसा ही एक प्रभावी घटक है मेथी के बीज, जिसका उपयोग त्वचा की कई समस्याओं के समाधान के लिए एक शक्तिशाली पैक के रूप में किया जा सकता है। घर पर बने फेस मास्क में कोई भी केमिकल नहीं होता है, जिससे यह त्वचा के लिए फायदेमंद होता है। आमतौर पर रसोई में पाए जाने वाले मेथी के बीज औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं। ये त्वचा के लिए जितने असरदार हैं उतने ही सेहत के लिए भी। आइए जानें कि मेथी के बीज का उपयोग त्वचा को कैसे प्रभावित करता है और त्वचा संबंधी विभिन्न समस्याओं का समाधान करता है।
त्वचा के लिए मेथी के बीज के फायदे
मेथी के बीज एंटी-इंफ्लेमेटरी गुणों से भरपूर होते हैं जो त्वचा को अंदर से ठंडक पहुंचाने में मदद करते हैं। त्वचा की कोशिकाओं को मजबूत बनाने और त्वचा को होने वाले नुकसान से बचाने में मेथी के दानों का इस्तेमाल काफी कारगर साबित होता है। यह क्षतिग्रस्त कोशिकाओं को पुनर्जीवित करने और त्वचा में चमक लाने में भी मदद करता है।

विभिन्न त्वचा समस्याओं का समाधान:-

* मेथी के बीज का पैक चेहरे की झुर्रियों को कम करने में विशेष रूप से प्रभावी है। यह चेहरे पर बढ़ती उम्र के लक्षणों को कम करने के लिए बेहतरीन है।
* फाइबर, जिंक और विटामिन सी जैसे पोषक तत्वों से भरपूर मेथी के बीज का पैक चेहरे के मुंहासों को दूर करने में मदद करता है। यह चेहरे पर तेल को नियंत्रित करता है, जिससे मुंहासों से राहत मिलती है।
* मेथी के बीज का पैक त्वचा को अंदर से साफ करता है, धूल, मिट्टी और हानिकारक सूरज की किरणों से बचाता है, साथ ही त्वचा में चमक भी लाता है।
* डार्क सर्कल से छुटकारा पाने के लिए मेथी के बीज का पैक लगाएं। बीजों को रात भर भिगो दें, सुबह पानी निकाल दें, उन्हें ब्लेंडर का उपयोग करके पीसकर पेस्ट बना लें और पेस्ट को आंखों के नीचे 15-20 मिनट के लिए लगाएं। यह पैक अपने एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटीऑक्सीडेंट गुणों के कारण काले घेरों को खत्म करने में मदद करेगा।

मेथी बीज पैक तैयार करना

सामग्री:

2 बड़े चम्मच मेथी दाना
1 बड़ा चम्मच दही
½ बड़ा चम्मच हल्दी पाउडर

तरीका:

मेथी के दानों को रात भर पानी में भिगो दें। सुबह पानी निकाल दें और बीजों को ब्लेंडर में पीसकर पेस्ट बना लें। पेस्ट में हल्दी और दही मिलाएं और इसे चेहरे और गर्दन पर 15 मिनट के लिए लगाएं। 15 मिनट बाद इस पैक से हल्के हाथों से मसाज करें और चेहरे को ठंडे पानी से धो लें। यह पैक आपकी त्वचा में चमक लाएगा और दाग-धब्बे और काले धब्बे कम करने में मदद करेगा।

करवाचौथ में हाथों को ऐसे संवारें

पति हाथ थामें और एक बार फिर दिल हार बैठें

1. सबसे पहले, अपने हाथों को साबुन से अच्छी तरह धोएं। हाथों को पोंछ लें और सबसे पहले पुराने नेल पेंट को नेल पेंट रिमूवर की मदद से रिमूव कर दें। ये हमेशा ध्यान रखें कि कॉटन बॉल में रिमूवर ज़रूरत से ज्यादा न लें। क्योंकि इसके नाखूनों की नेचुरल चमक खोती है और वे बेजान नज़र आते हैं।
2. अब नेल कटर से नाखूनों को ट्रिम करें, यानी थोड़ा-थोड़ा काट लें। नेल्स को सुंदर शेप देने के लिए फाइलर का इस्तेमाल करें। इस टूल को आप आसानी से मार्केट से खरीद सकती हैं। अगर नहीं भी है तो नेलकटर के धारीदार वाले हिस्से से हल्का - हल्का रगड़ कर नेल्स के ऐज सही कर लें। फाइलर का खास फायदा यह है कि इसके नेल्स काटने के बाद रफ़ किनारों को ठीक तो किया ही जा सकता है साथ ही मनचाहा शेप भी दिया जा सकता है। आप यूट्यूब से इसे इस्तेमाल करने का तरीका सीख सकती हैं। शेप देने के बाद नाखूनों की मॉइश्चराइज़र से हल्की मालिश कर लें।
3. अब एक कटोरे में गुनगुना पानी लें। इसमें कुछ बूंदें शैंपू या बाथ जैल, एक चम्मच नींबू का रस, कुछ बूंदें गुलाब जल और थोड़ा सा ऑलिव ऑइल डालें। ऑलिव ऑइल न हो तो थोड़ा शहद भी डाल सकती हैं। शहद एक नेचुरल मॉइश्चराइज़र है। अब अपनी हथेलियों को इस पानी में कुछ देर डुबाकर रखें। 5 मिनट बाद आपको हाथों में बढ़िया सी सॉफ्टनेस महसूस होगी।
4. अब हाथों को टॉवेल से पोंछ लें। एक अन्य टूल आता है क्यूटिकल पुशर। आपके नाखूनों के इर्द-गिर्द की स्किन (क्यूटिकल) में तमाम गंदगी इकट्ठी होती रहती है। क्यूटिकल पुशर से क्यूटिकल्स को हल्के हाथों से धीरे-धीरे पीछे की ओर पुश करें। इससे गंदगी और डेड स्किन रिमूव होगी। एक सॉफ्ट ब्रश से नाखून और क्यूटिकल साफ कर लें। क्यूटिकल पुशर के शार्प प्वाइंट से नाखूनों के अंदर की तरफ की गंदगी साफ कर लें। यह काम आप हर घर में ईज़ीली अवेलेबल नेलकटर के शार्प वाले अटैचमेंट से भी कर सकती हैं।
5. अब एक बार फिर हाथों को शैंपू वाले पानी में 2 मिनट के लिए डुबो कर रखें। हाथों को बाहर निकालें। टॉवेल से पोंछें। अब अपने हाथों की कोहनी से लेकर उंगलियों तक मॉइश्चराइज़र या मसाज क्रीम से मसाज करें। अब आपके हाथ एकदम सॉफ्ट हो चुके होंगे। आप अपने खूबसूरत नेल्स पर मनपसंद नेल पेंट लगा लें। एक नई ताज़गी और अंदरूनी खुशी के साथ अपने पसंदीदा त्योहार के लिए तैयार हो जाएं।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

आंध्र प्रदेश ट्रेन हादसे को लेकर कांग्रेस का केंद्र पर हमला

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने आंध्र प्रदेश में ट्रेन के पटरी से उतरने की घटना को लेकर सोमवार को मोदी सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि ट्रेनों को हरी झंडी दिखाने में जो उत्साह दिखाया जाता है, उसे रेलवे सुरक्षा और यात्रियों की भलाई में भी दिखाया जाना चाहिए। आंध्र प्रदेश के विजयनगरम जिले में हावड़ा-चेन्नई लाइन पर रविवार शाम दो ट्रेनों की टक्कर में कम से कम 13 लोगों की मौत हो गई और 50 अन्य घायल हो गए। हादसे में तीन कोच क्षतिग्रस्त हुए हैं। खरगे ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर कहा कि आंध्र प्रदेश के विजयनगरम जिले में ट्रेन के पटरी से उतरने की घटना के बारे में जानकर बहुत दुख हुआ। इस हादसे में कई अनमोल जानें चली गईं और कई लोग घायल हो गए। उन्होंने पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदना जताई। साथ ही घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। खरगे ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं से हर संभव मदद मुहैया कराने का अनुरोध किया।

सिसोदिया को सुप्रीम कोर्ट ने जमानत देने से किया इनकार

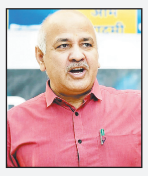

नईदिल्ली। सुप्रीम कोर्ट में सोमवार 30 अक्टूबर को दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया की जमानत याचिका पर सुनवाई की गई। सुप्रीम कोर्ट ने मनीष सिसोदिया की ओर से दायर की गई जमानत याचिका को सुनवाई के बाद खारिज किया है। मनीष सिसोदिया की याचिका पर जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस एसवीएन भट्टी की पीठ ने सीबीआई और एड के जरिए सिसोदिया के खिलाफ की गई जांच के मामलों पर अपना फैसला दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने इससे पहले दिल्ली एक्साइज पॉलिसी और सिसोदिया के खिलाफ मामलों को लेकर सीबीआई और ईडी ने कई सवाल किए थे। इस मामले पर सिसोदिया से लंबी पूछताछ की गई है। वहीं इस मामले पर सुनवाई करते हुए न्याय मूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति एस वी एन भट्टी की पीठ ने कहा कि जांच एजेंसियों के बयान रिकॉर्ड किए गए है। इन मामलों में छह से आठ महीनों में सुनवाई पूरी होगी।

वैभव गहलोत प्रवर्तन निदेशालय के सामने हुए पेश

जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के बेटे वैभव गहलोत कथित विदेशी मुद्रा नियम उल्लंघन की चल रही जांच के सिलसिले में सोमवार को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के सामने पेश हुए। गहलोत सुबह करीब साढ़े 11 बजे दिल्ली स्थित ईडी के मुख्यालय पहुंचे। ईडी ने वैभव गहलोत को समन जारी किया था, जिसमें उन्हें ईडी के जयपुर या दिल्ली कार्यालय में गवाही देने का विकल्प दिया गया था। ये समन सीधे तौर पर राजस्थान स्थित आतिथ्य समूह ट्राइटन होटल्स एंड रिसॉर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, वर्धा एंटरप्राइजेज प्राइवेट लिमिटेड और शिव शंकर शर्मा, रतन कांत शर्मा और अन्य व्यक्तियों के खिलाफ किए गए हालिया ईडी छापे से जुड़े हैं। पिछले महीने की गई तलाशी के दौरान ईडी ने ?1.2 करोड़ नकद जब्त किए थे। जांच से संकेत मिलता है कि ट्राइटन समूह को 2007-2008 की अवधि के दौरान मॉरीशस इकाई से निवेश प्राप्त हुआ था।

एनडीए ने केरल सरकार के खिलाफ खोला मोर्चा

तिरुवनन्तपुरम। भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए ने राज्य में वामपंथी सरकार के कथित कुशासन के विरोध में सोमवार को केरल सचिवालय के चार में से तीन गेटों का घेराव किया। सुबह करीब छह बजे से ही सचिवालय के तीन गेटों के बाहर सैकड़ों भाजपा समर्थक जमा हो गए। प्रदर्शन को देखते हुए बड़ी संख्या में पुलिस मौजूद थी। इसके अलावा कार्यालय जाने वालों और स्कूली बच्चों की सुचारू आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए यातायात को डायवर्ट कर दिया गया। बताया जा रहा है कि भाजपा प्रमुख जेपी नड्डा भी प्रदर्शन में भाग लेने के लिए पहुंचेंगे। वहीं, तिरुवनंतपुरम में सचिवालय के मुख्यमंत्री सम्मेलन हॉल में केरल के सीएम पिनाराई विजयन की अध्यक्षता में सर्वदलीय बैठक शुरू हो गई है। बता दें, सर्वदलीय बैठक रविवार को राज्य में एक धार्मिक सभा में हुए विस्फोटों के मद्देनजर बुलाई गई है, जिसमें तीन लोगों की मौत हो गई थी और लगभग 50 लोग घायल हो गए थे।

तेलंगाना में टीडीपी ने चुनाव नहीं लड़ने का किया फैसला

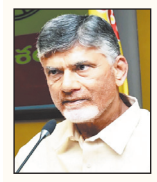

हैदराबाद। तेलुगु देशम पार्टी ने आगामी तेलंगाना विधानसभा चुनाव नहीं लड़ने का फैसला किया है, जिससे पार्टी की राज्य इकाई के भीतर हलचल मच गई है। यह पहली बार होगा कि टीडीपी ने 2014 में तेलंगाना के गठन के बाद विधानसभा चुनाव नहीं लड़ने का फैसला किया। टीडीपी 2018 के चुनावों में केवल दो सीटें जीतने में कामयाब रही। कथित कौशल विकास घोटाले में टीडीपी सुप्रीमो और पूर्व मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू अभी भी जेल में हैं, इसलिए पार्टी ने चुनाव से दूर रहने का फैसला किया।

टीडीपी तेलंगाना इकाई के अध्यक्ष कसानी ज्ञानेश्वर को इस फैसले के बारे में पार्टी प्रमुख चंद्रबाबू नायडू ने खुद बताया, जब चंद्रबाबू नायडू ने शनिवार को राजमुंद्री सेंट्रल जेल में उनसे मुलाकात की। नायडू ने उनसे तेलंगाना में पार्टी नेताओं को उन परिस्थितियों के बारे में बताने को कहा, जिनके कारण पार्टी को चुनाव से दूर रहना पड़ा। हालाँकि, ज्ञानेश्वर द्वारा कार्यकर्ताओं को

प्रधानमंत्री ने गुजरात में विभिन्न विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया

भारत का तेज विकास और दुनिया भर में उसकी प्रशंसा स्थिर सरकार होने की वजह से : मोदी

अहमदाबाद। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को कहा कि स्थिर सरकार देने वाली जनता की शक्ति के कारण ही देश में तेजी से विकास हो रहा है और दुनिया भर में इसकी प्रशंसा हो रही है। गुजरात के महेसाणा जिले के खेरालु में 5,950 करोड़ रुपये की विभिन्न विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करने के बाद एक जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने यह भी कहा कि जब वह संकल्प लेते हैं, तो उसे पूरा करते हैं। मोदी ने कहा कि गुजरात ने अनुभव किया है कि कैसे लंबे समय तक स्थिर सरकार बने रहने से एक के बाद एक फैसले लेने में मदद मिली है, जिससे राज्य को फायदा हुआ है। इससे पहले खेरालु में बड़ी संख्या में लोग एकत्र हुए और प्रधानमंत्री को लेकर आ रहे हेलीकॉप्टर के आयोजन स्थल के पास एक अस्थायी हेलीपैड पर उतरते ही खुशी से झूम उठे।

बाद में, एक खुली कार में खड़े होकर मोदी ने कार्यक्रम स्थल की ओर जाते समय भीड़ का हाथ हिलाकर अभिवादन किया और कई लोगों ने अपने मोबाइल फोन कैमरों से इस पल को कैद करने की कोशिश की। इस मौके पर लोगों ने 'देखो-देखो कौन आया, गरीबों का मसीहा आया' और 'महिलाओं का अधिकार-मोदी है तो मुमकिन है' जैसे नारे लगाए। जब भीड़ के बीच से वह मंच की ओर बढ़ रहे थे तो कलाकारों की एक मंडली प्रधानमंत्री के वाहन के सामने पारंपरिक नृत्य करते हुए चल रही थी। गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सी आर पाटिल भी कार्यक्रम में प्रधानमंत्री के साथ थे। मोदी ने कहा, ''देश में जिस तेजी से विकास हो रहा है और दुनिया में भारत की प्रशंसा हो रही है, उसकी जड़ में जनता की वह शक्ति है जिसने देश में स्थिर सरकार दी है।'' उन्होंने कहा कि लोग अच्छी तरह जानते हैं कि विकास की बड़ी परियोजनाओं, साहसिक फैसले लेने और गुजरात के तेज विकास के पीछे पिछले कई वर्षों में रखी गई मजबूत नींव है। उन्होंने कहा, ''और आप अपने नरेन्द्र भाई को जानते हैं, आप मुझे प्रधानमंत्री के बजाय अपने नरेन्द्र भाई के रूप में देखते हैं। और आप अपने नरेन्द्र भाई को जानते हैं, एक बार जब वह

संकल्प लेता है, तो वह उसे पूरा करता है।'' मोदी ने कहा कि अब तक पूर्वी और पश्चिमी समर्पित माल गलियारे के 2,500 किलोमीटर लंबे मार्ग पर काम पिछले नौ वर्षों में पूरा हो चुका है, जिसके कारण यात्री और मालगाड़ियों दोनों को लाभ मिल रहा है। उन्होंने कहा, ''अंतिम स्टेशन तक इसका लाभ पहुंचाने की व्यवस्था की जा रही है।'' प्रधानमंत्री ने डेयरी क्षेत्र में महिलाओं के योगदान का भी उल्लेख किया और कहा कि उनकी कड़ी मेहनत के कारण उनकी घरेलू आय स्थिर हुई है। उन्होंने कहा, ''उत्तर गुजरात में सैकड़ों नए पशु चिकित्सालय स्थापित किए गए हैं क्योंकि हम पशुओं (गोवंश) की क्षमता को समझते हैं। हमारा ध्यान यह सुनिश्चित करने पर है कि पशु स्वस्थ रहें, उन्हें उचित सेवा मिले ताकि उनके दूध का उत्पादन बढ़े।'' उन्होंने कहा कि सरकार ने पशुओं के मुफ्त टीकाकरण के लिए लगभग 15,000 करोड़ रुपये निर्धारित किए हैं। उन्होंने डेयरी किसानों से अपने जानवरों का टीकाकरण कराने का अनुरोध भी किया। मोदी ने कहा कि पिछले दो दशकों में राज्य में 800 से अधिक नई ग्रामीण महिला सहकारी समितियों की स्थापना की गई है और बायोगैस विकसित करने के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हरित हाइड्रोजन क्षेत्र में उत्तर गुजरात क्षेत्र भी बड़ी भूमिका निभाएगा। मोदी ने कहा कि उन्होंने उत्तर गुजरात, गुजरात के तटीय और आदिवासी क्षेत्रों को बदलने का संकल्प लिया है। इसके लिए उन्होंने संपर्क और सिंचाई के लिए पानी की आपूर्ति पर जोर दिया। उन्होंने कहा, ''इसकी वजह से गुजरात औद्योगिक विकास की ओर बढ़ा है... नर्मदा का पानी जो समुद्र में बर्बाद हो जाता था आज आपके खेत तक पहुंचता है। हमने एक ऐसा गुजरात बनाया है जहां 20 से 25 साल के युवाओं को अपने माता-पिता के सामने आयी कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ा।'' उन्होंने कहा कि विभिन्न परियोजनाओं के कारण, लगभग दो दशकों में सिंचाई का क्षेत्र कई गुना बढ़ गया और ड्रिप सिंचाई तथा नई प्रौद्योगिकियों को अपनाने से किसानों को कई नई प्रकार की फसलों की खेती की संभावनाओं को बढ़ाने में मदद मिली। उन्होंने कहा कि उत्तरी गुजरात के ईसबगोल और आलू की दुनिया में अच्छी मांग है, क्षेत्र में आलू प्रसंस्करण इकाइयां स्थापित की जा रही हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि उत्तर गुजरात के क्षेत्र में भी तेजी से औद्योगिकीकरण हुआ है, जिससे स्थानीय लोगों के लिए रोजगार पैदा करने और प्रवासियों को आकर्षित करने में मदद मिली है। उन्होंने कहा कि उत्तर गुजरात भी सौर ऊर्जा का लाभ उठा रहा है और यह क्षेत्र लॉजिस्टिक्स के लिए एक बड़े केंद्र के रूप में भी उभरेगा। एक सरकारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि मोदी द्वारा शुरू की गई परियोजनाएं भारतीय रेलवे, गुजरात रेल अवसंरचना विकास निगम (जीआरआईडीई), राज्य जल संसाधन और जल आपूर्ति विभागों, सड़कों और भवनों और शहरी विकास विभागों सहित कई सरकारी विभागों से संबंधित हैं। इसमें कहा गया है कि मोदी ने जिन क्षेत्रों में विकास पहलों की शुरुआत की है उनमें मेहसाणा, अहमदाबाद, बनासकांठा, साबरकांठा, महिसागर, गांधीनगर और पाटन जिले शामिल हैं। प्रधानमंत्री ने वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (डब्ल्यूडीएफसी) के नए खंडों, वीरमगाम-सामाखियाली रेल लाइन के दोहरीकरण, साथ ही ग्रामीण झीलों के पुनर्भरण के लिए एक परियोजना, साबरमती नदी पर एक बैराज के निर्माण और पेयजल और सीवेज जल उपचार के लिए परियोजनाओं सहित रेलवे परियोजनाओं का उद्घाटन किया। उन्होंने विभिन्न सिंचाई परियोजनाओं, सड़कों के चौड़ीकरण और सीवेज उपचार संयंत्रों की आधारशिला भी रखी।

सोनिया ने इजराइल पर मतदान में गैरहाजिर रहने के लिए सरकार की निंदा की

कहा- कांग्रेस स्पष्ट करती है कि फिलिस्तीन एक संप्रभु राष्ट्र है

नई दिल्ली। कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी ने संयुक्त राष्ट्र में भारत द्वारा इजराइल में संघर्ष विराम के मुद्दे पर वोटिंग के दौरान नदारत रहने की बेहद तीखी आलोचना की है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी का इजराइल और फिलिस्तीन के मुद्दे पर वर्षों से एक जैसा रूख रहा है।

अंग्रेजी समाचार पत्र द हिंदू के संपादकीय में सोनिया गांधी ने लिखा है, कुछ शरारती सुझावों के विपरीत, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थिति लंबे समय से चली आ रही है और पार्टी उस सिद्धांत पर भरोसा करती है कि फिलिस्तीन एक संप्रभु स्वतंत्र राष्ट्र है और शांति के लिए इजरायल को सीधी बातचीत करनी चाहिए।

सोनिया गांधी ने लिखा है, 12 अक्टूबर 2023 को विदेश मंत्रालय द्वारा भी यही रुख अपनाया गया था। फिलिस्तीन पर भारत की ऐतिहासिक स्थिति को फिर से इजरायल द्वारा गाजा पर किये गये हमले के बाद दोहराया गया है। प्रधानमंत्री मोदी ने इजराइल के साथ पूर्ण एकजुटता व्यक्त करते हुए फिलिस्तीनी का कोई उल्लेख नहीं किया था।

कांग्रेस की वरिष्ठ नेता ने लिखा, कांग्रेस हाल ही में संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव पर भारत की गैर हाजिर रहने का कड़ा विरोध करती है, जिसमें गाजा में इजरायली हमले को खत्म करने और हमास के साथ तत्काल संघर्ष विराम करके बातचीत का प्रस्ताव रखा गया था।

इजराइल और फिलिस्तीन दोनों पक्षों में कई लोग बातचीत चाहते हैं और इसे ही आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता मानते हैं। सोनिया गांधी ने दोनों पक्षों के बीच चल रहे युद्ध को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए लिखा कि कई प्रभावशाली देश इस मसले में पूरी तरह से पक्षपातपूर्ण रवैया बनाये हुए हैं।

उन्होंने लिखा, यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कई प्रभावशाली देश पूरी तरह से पक्षपातपूर्ण व्यवहार कर रहे हैं, जबकि उन्हें युद्ध को समाप्त करने के लिए अधिकतम प्रयास होना चाहिए। विश्व की शक्तिशाली ताकतों को सैन्य गतिविधि को समाप्त करने के लिए आगे आना चाहिए और हस्तक्षप करना चाहिए अन्यथा यह युद्ध अनवरत जारी रहेगा। यह स्थिति लंबे समय के लिए घातक हो सकती है।

मालूम हो कि भारत ने जॉर्डन-मसौदा प्रस्ताव पर मतदान से परहेज किया था, जिसमें इज़रायल से संघर्ष विराम का आह्वान किया गया था लेकिन प्रस्ताव में हमास के हमले की निंदा नहीं की गई थी। भारत ने हमास की निंदा करने वाला एक पैराग्राफ शामिल करने के लिए कनाडा द्वारा प्रस्तावित संशोधन के पक्ष में मतदान किया।

भारत ने कहा था कि इजरायल पर हुए आतंकी हमले की निंदा की जानी चाहिए थी और इसलिए वह इस मतदान से दूर हो रहा है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ भारत का रुख बेहद कड़ा है। उन्होंने कहा था, अगर हम यह कहें कि जब आतंकवाद हमें प्रभावित करता है, तो यह बहुत गंभीर होता है। लेकिन जब यह किसी और के साथ होता है तो यह गंभीर नहीं होता है। हमें आतंकवाद के मुद्दे पर एक सतत रुख अपनाने की जरूरत है।

खेल
प्रमुख समाचार

ईडन गार्डन में पाकिस्तान का मुकाबला बांग्लादेश से आज

कोलकाता। विश्व कप में जीत के साथ शुरुआत करने वाली पाकिस्तान की क्रिकेट टीम पटरी से उतर गई है। पिछले सभी चार मैच हारकर पाकिस्तान पर सेमिफाइल से बाहर होने का खतरा मंडरा रहा है। हालांकि पाकिस्तानी फैंस को उम्मीद है कि उनकी टीम सेमिफाइनल का टिकट पाने में कामयाब होगी। फिलहाल, टीम पाकिस्तान प्वाइंट टेबल में छठे स्थान पर काबिज है।

छह मैच में दो जीत चार हार के साथ पाकिस्तान के कुल 4 प्वाइंट हैं। अब अगला मैच 31 अक्टूबर को बांग्लादेश के खिलाफ कोलकाता के ईडन गार्डन में होना है। दोनों टीम अपना पिछला मैच हारकर इस मैदान में पहुंच रहे हैं। दोनों टीम को विश्व कप में लय बरकरार रखने के लिए जीत चाहिए। पाकिस्तान अगर मैच हारती है तो उसके लिए विश्व कप में आगे जाने का रास्ता बंद हो जाएगा।

हालांकि इस मैच में पाकिस्तानी फैंस की नजर अपने कप्तान बाबर आजम पर होगी। दरअसल, बाबर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 13 हजार रन पूरे करने से महज 127 रन दूर हैं। अगर बांग्लादेश के खिलाफ 127 रन बाबर करते हैं तो वह पाकिस्तान की उस लिस्ट में शामिल हो जाएंगे। जहां पूर्व पाकिस्तानी खिलाड़ियों ने 13 हजार अंतरराष्ट्रीय रन पूरे किए हैं। बाबर ने कुल 267 अंतरराष्ट्रीय मैच में 12873 रन बनाए। 49 टेस्ट मैच की 88 पारियों में 3772 रन, उच्च स्कोर 196, 47.75 की एवरेज, स्ट्राइक रेट 55.19, 9 शतक 26 हाफ सेंचुरी। वनडे इंटरनेशनल में 114 मैचों की 111 पारियों में 5616 रन, 156 उच्च स्कोर, 56.73 की एवरेज, 6331 रन 88.71 की स्ट्राइक रेट, 19 शतक 31 हाफ सेंचुरी। टीट्वेंटी में 104 मैच की 98 पारियों में 3485 रन, 122 उच्च स्कोर, 41.49 एवरेज 128.41 का स्ट्राइक रेट 3 शतक 30 हाफ सेंचुरी। बाबर के नाम 31 शतक 87 हाफ सेंचुरी है।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

330 अंक चढ़कर सेंसेक्स फिर हुआ 64 हजारी

नईदिल्ली। हफ्ते के पहले कारोबारी दिन यानी सोमवार को रिलायंस इंडस्ट्रीज, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, एचडीएफसी बैंक, एलएंडटी और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज के शेयरों में तेजी ने घरेलू बाजार को मजबूती दी। आज हालांकि ग्लोबल मार्केट से मिले मिश्रित रुझानों के बीच घरेलू शेयर बाजार की शुरुआत गिरावट के साथ हुई थी। दोनों फ्रंटलाइन इंडेक्स सेंसेक्स और निफ्टी में बढ़त दर्ज की गई। आज के कारोबार में बीएसई सेंसेक्स 330 अंक मजबूत हुआ। वहीं, निफ्टी में भी 94 अंक की बढ़त दर्ज की गई। बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 329.85 अंक यानी 0.52% फीसदी की उछाल के साथ 64,112 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान सेंसेक्स 64,184 की ऊंचाई तक गया और नीचे में 63,431 तक आया। वहीं, दूसरी तरफ नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी में भी 93.65 अंक यानी 0.49 फीसदी की बढ़त दर्ज की गई।

भारत की विकास गाथा इस समय दुनिया में सबसे बेहतर

नईदिल्ली। बीएस बीएफएसआई समिट 2023 को दो दिवसीय कार्यक्रम के पहले दिन सोमवार को जेफरीज के इक्विटी रणनीति के वैश्विक प्रमुख क्रिस्टोफर वुड ने भारत के विकास को लेकर महत्वपूर्ण बात कही। रफ्तार पकड़ रहे देश के विकास को लेकर वुड ने कहा कि भारत की विकास गाथा इस समय दुनिया में सबसे बेहतर है। वहीं वैश्विक स्तर पर बात करते हुए क्रिस्टोफर वुड ने चीन की आर्थिक मंदी का जिक्र करते हुए कहा, 'चीन की समस्या आर्थिक कम और मनोवैज्ञानिक अधिक है।' बाजार और बाजार की चाल को निर्धारित करने वाले फैक्टर्स को लेकर वुड ने कहा कि बाजार को संचालित करने वाली दो भावनाएं लालच और भय हैं। उन्होंने आगे कहा कि बाजार में अधिकांश समय यह भावना लालच होती है। वहीं भारत की विकास दर को लेकर वुड ने कहा, भारत को न्यूनतम 6-7% की दर से बढ़ना चाहिए।

कंज्यूमर प्रॉडक्ट कंपनी का खुल गया आईपीओ

नईदिल्ली। घरेलू सामान और स्टेशनरी प्रॉडक्ट बनाने वाली मशहूर कंपनी सेलो वर्ल्ड लिमिटेड का आईपीओ सोमवार (30 अक्टूबर) को खुल गया है। यह 1 नवंबर 2023 तक सब्सक्रिप्शन के लिए खुला रहेगा। इश्यू के लिए प्राइस बैंड 617-648 रुपये प्रति शेयर तय किया गया है। सब्सक्रिप्शन के लिए 1900 करोड़ का रुपये का आईपीओ 30 अक्टूबर को खुला है। बोली 1 नवंबर तक लगाई जा सकेगी। सेलो के शेयर आईपीओ के अपर प्राइस बैंड से 120 रुपये यानी 18.52 फीसदी की जीएमपी पर हैं। कंपनी ने आईपीओ के खुलने से पहले एंकर निवेशकों से 567 करोड़ रुपये जुटा लिए है। कंपनी ने मॉर्गन स्टैनले एशिया (सिंगापुर), सीएलएसए ग्लोबल मार्केट्स, बजाज एलियांज जनरल इंश्योरेंस कंपनी, बीएनपी पारिबास आर्बिट्रेज, आईसीआईसीआई प्रू म्यूचुअल फंड, एडलवाइज म्यूचुअल फंड और एचडीएफसी म्यूचुअल फंड समेत 39 एंकर निवेशकों को 648 रुपये के भाव पर 87,49,999 शेयर जारी किए हैं।

आईथिंक लॉजिस्टिक्स ने किया फेडएक्स के साथ करार

नई दिल्ली। प्रौद्योगिकी संचालित लॉजिस्टिक्स स्टार्टअप आईथिंक लॉजिस्टिक्स ने सीमापार सामान भेजने के लिए फेडएक्स के साथ करार किया है। आईथिंक लॉजिस्टिक्स ने सोमवार को बयान में कहा कि इस रणनीतिक साझेदारी का उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय बाजारों में उतरने वाले ई-कॉमर्स विक्रेताओं को शिपिंग समाधान और पर्याप्त लागत बचत प्रदान करना है। इस महीने की शुरुआत में लॉजिस्टिक्स स्टार्टअप ने देश के दूरदराज के हिस्सों में ई-कॉमर्स डिलिवरी के लिए इंडिया पोस्ट के साथ गठजोड़ किया था। कंपनी ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सामान भेजने की जटिलताएं कई बार मध्यम आकार की ई-कॉमर्स कंपनियों के लिए मुश्किलें पैदा करती हैं। इसकी वजह उपभोक्ता मांग और सीमा शुल्क नियमनों की विविधता है।

आर्थिक उम्मीदों के बावजूद मुद्रास्फीति से जुड़ी चिंताओं की अनदेखी ठीक नहीं

पत्रलेखा चटर्जी

भारत जैसे जटिल देश में स्याह या सफेद जैसे दोहरे विकल्पों में फंसने का मतलब है मुद्दे से भटक जाना। हमारे जेहन में सबसे ऊपर एक सवाल है-भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति। भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति कैसी है? इसका उत्तर इस पर निर्भर करता है कि आप इसे किस संदर्भ में देख रहे हैं।

देश में विलासिता की वस्तुओं का बाजार फल-फूल रहा है! ग्लोबल कंसल्टेंसी किर्नी और लक्सासिया की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, एशिया प्रशांत क्षेत्र में दक्षिण पूर्व एशिया और भारत के विलासिता की वस्तुओं के सबसे आकर्षक बाजार बनने की उम्मीद है। दक्षिण पूर्व एशिया और भारत इस क्षेत्र में अगली प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार हैं, जो 2026 तक 7.6 अरब डॉलर की बाजार क्षमता तक पहुंच जाएगा, और 10 वर्षों के भीतर आकार में लगभग तीन गुना हो जाएगा।

वाणिज्यिक अखबारों का कहना है कि देश में महंगी कारों के ग्राहक युवा हैं, जो तेजी से उच्च गुणवत्ता वाली, परिष्कृत मॉडल की कारें खरीदना पसंद कर रहे हैं। भारत में विभिन्न ब्रांडों की महंगी कार खरीदने वालों की औसत आयु अब 30 वर्ष के आसपास है। खरीदार अक्सर प्रगतिशील पेशेवर और स्टार्ट-अप के संस्थापक होते हैं। लक्जरी कार निर्माता कंपनी मर्सिडीज बेंज अपनी सुपर लक्जरी और परफॉर्मेंस कारों, जैसे स्थानीय रूप से असेंबल की गई एस-क्लास, मेबैक और एएमजी की मांग में वृद्धि देख रही है।

इस साल की पहली छमाही में देश में महंगी स्विस घड़ियों का आयात एक साल पहले की तुलना में 21 फीसदी बढ़कर 9.85 करोड़ स्विस फ्रैंक या 933 करोड़ रुपये को पार कर गया। द स्वैच ग्रुप के स्वामित्व

वाली कंपनी ब्रांड-राडो- उस लहर पर सवार होना चाहती है। कंपनी ने अधिक महिला लक्जरी खरीदारों को आकर्षित करने के लिए हाल ही में बॉलीवुड स्टार और ब्रांड एंबेसडर कैटरीना कैफ के साथ अनुबंध किया है। लगभग 30 ब्रांड बुटीक के साथ भारत में इसकी मौजूदगी और राजस्व, दोनों में वृद्धि हो रही है। यह सब निर्विवाद रूप से वर्ष 2023 में भारतीय अर्थव्यवस्था की वास्तविकता का एक हिस्सा है। लेकिन यह हमें आम भारतीयों के जीवन के बारे में कुछ नहीं बताता है। यकीनन, हालिया मीडिया रिपोर्टें त्योहारी सीजन के दौरान उपभोक्ता खर्च में वृद्धि की ओर इशारा करती हैं। कार, टीवी, मोबाइल फोन, आभूषण, सौंदर्य प्रसाधन, चॉकलेट और शराब की बिक्री बढ़ गई है। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि खपत में वृद्धि का एक प्रमुख कारण परिवारों द्वारा बढ़ती उधारी है। विशेषज्ञ बताते हैं कि बैंक ऋण बकाया के आंकड़ों से पता चलता है कि व्यक्तिगत ऋण एक साल पहले की तुलना में 30 प्रतिशत बढ़ गया है। अधिकांश बढ़ोतरी आवास ऋण में हुई है, लेकिन क्रेडिट कार्ड बकाया में वृद्धि सहित अन्य ऋण में वृद्धि भी मजबूत रही है।

हमारे देश में युवाओं की आबादी सबसे ज्यादा है, लेकिन रोजगार की क्या स्थिति है, इस पर भी गौर करना प्रासंगिक होगा। बंगलूरू स्थित अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय की एक रिपोर्ट- 'स्टेट ऑफ वर्किंग इंडिया 2023 = सोशल आइडेंटिटीज ऐंड लेबर मार्केट आउटकम' के अनुसार, 25 वर्ष से कम आयु के लगभग 42 फीसदी स्नातक कोविड-19 महामारी के बाद बेरोजगार रहे, जबकि वैश्विक आर्थिक मंदी के बाद रोजगार सृजन की गति कम हो गई। विश्व बैंक की भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रमुख अर्धवार्षिक रिपोर्ट- 'इंडिया डेवलपमेंट अपडेट' अर्थव्यवस्था से संबंधित समग्र आशावाद को उजागर करते हुए चिंता के कुछ क्षेत्रों को चिह्नित करती है। विश्व बैंक ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि वास्तविक ग्रामीण मजदूरी स्थिर हो रही है और महिलाओं तथा ग्रामीण क्षेत्रों में पुरुषों के लिए नौकरियां घटती जा रही हैं। शहरी श्रमिक जनसंख्या अनुपात (डब्ल्यूपीआर) में इस वर्ष थोड़ा सुधार हुआ है। हालांकि, महिलाओं के लिए डब्ल्यूपीआर में वृद्धि मुख्य रूप से अवैतनिक कार्यों में महिलाओं की हिस्सेदारी में वृद्धि से प्रेरित है। आने वाले महीनों में त्योहारी खर्च और उसके बाद अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले बड़े पैमाने पर सरकारी खर्च से अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा।

वे झूठ बोलने की प्रतियोगिता में पाएंगे गोल्ड मेडल: फडणवीस

रायपुर। भाजपा के वरिष्ठ नेता महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने आज यहां कांग्रेस नेता राहुल गांधी की घोषणाओं पर पिछले चुनाव की उनकी घोषणाओं का हवाला देते हुए कहा कि ये गजनी हो गए हैं। उन्हें भूलने की बीमारी है। 5 साल पहले जो घोषणाएं राहुल गांधी ने की थीं, भूपेश बघेल और टीएस सिंहदेव ने की थीं, उनकी क्लिपिंग दिखाते हुए फडणवीस ने सवाल किया कि इन्हें भूल गए और नई घोषणाएं कर रहे हैं। इनमें से ज्यादातर वही घोषणाएं हैं जो 5 साल में पूरी नहीं हुईं। *अगर झूठ का कोई ओलंपिक हो जाए तो सारे गोल्ड मेडल कांग्रेस को* भाजपा कार्यालय एकात्म परिसर में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में श्री फडणवीस ने कहा कि किस प्रकार के वादे किए गए थे छत्तीसगढ़ में अभी जो राहुल गांधी की सभाएं हो रही हैं, बघेल जी के सभाएँ हो रही हैं तो उसको देखने के बाद मुझे गजनी फिल्म की याद आती है। यह पहले क्या बोले, सब भूल जाते हैं और नए सिरे से वापस झूठ बोलना शुरू करते हैं। मैं तो यह कहूंगा कि अगर झूठ का कोई ओलंपिक हो जाए तो सारे गोल्ड मेडल यही लोग ले जाएंगे।

उन्होंने शराब की नीति के बारे में क्या कहा? हाथ में गंगाजल ले लेकर कहते थे कि शराब बंदी करेंगे। शराबबंदी तो छोड़ दीजिए लेकिन जिस प्रकार का शराब घोटाला छत्तीसगढ़ में हुआ है मुझे लगता है कि देश का यह भी एक नायाब अजूबा है। क्योंकि देश में सारे राज्यों ने होलोग्राम इसलिए लाया कि शराब में टैक्स की चोरी होती है और नकली शराब बेची जाती है लेकिन यहां पर तो सरकार के तत्वावधान में ही नकली होलोग्राम से 2 हजार करोड रुपए का घोटाला हो गया। यही सारा पैसा चुनाव में लग रहा है। *वादे एयर एम्बुलेंस के और चार चक्के की एम्बुलेंस तक नहीं* महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री फडणवीस ने कहा कि अब जनता यह सवाल पूछ रही है कि यह जो हाथ में गंगाजल ले लेकर आपने कसमें खाई थी तो हमारे गजनी कहते हैं हमको तो याद ही नहीं है कि हमने ऐसी कोई कसम खाई है। आप देख सकते हैं कि स्वास्थ्य को लेकर यूनिवर्सल स्वास्थ्य स्कीम साढ़े चार हजार करोड़ रुपया प्रतिवर्ष खर्च करने की बात थी, वह स्कीम तो आई नहीं। अब नई स्कीम घोषित कर दी। छत्तीसगढ़ में प्रधानमंत्री मोदी जी की जन आरोग्य योजना से जिस प्रकार से लोगों को फायदा हुआ है, सुविधा हुई है और विशेष रूप से बघेल जी की सरकार ने जो वादे किए थे, वे देखें। कहा तो था कि वह सुदूर इलाकों से हेलीकॉप्टर एंबुलेंस में पेशेंट को लाने वाले थे। हेलीकॉप्टर एंबुलेंस को छोड़ दीजिए। चार चक्के वाली एंबुलेंस भी सुदूर इलाकों में वह ले नहीं जा पाए ।स्वास्थ्य की सेवाओं में अगर हम नेशनल एवरेज को देखें तो पिछले 5 वर्षों में छत्तीसगढ़ नेशनल एवरेज से नीचे चला गया। फिर एक बार नई घोषणा स्वास्थ्य को लेकर इस सरकार ने की है तो यह भी घोषणा पूरी नहीं होने वाली है।

जो पीएससी का घोटाला उजागर हुआ, यह पहला ऐसा राज्य होगा कि जहां पर नौकरियां पाने के लिए या तो अधिकारियों के बेटा बेटी होना पड़ेगा या कांग्रेस पार्टी के नेताओं के बेटा बेटी होना पड़ेगा। तभी आप पीएससी के एग्जाम पास हो पाओगे। जिस प्रकार से छत्तीसगढ़ के युवाओं के सपनों को कुचलने का काम पीएससी घोटाले के माध्यम से हुआ है। जो बच्चे दो-दो तीन-तीन साल पढ़ाई करते हैं ,आज उनके मन में शंका है कि हमारी पढ़ाई का फायदा क्या है? माननीय उच्च न्यायालय ने इस बारे में बहुत गंभीर टिप्पणी की है। उन्होंने कहा कि राज्य के अंदर लगातार जो घोटाले हुए हैं चाहे फिर गोठान का घोटाला हो। जिस प्रकार से घोषणा की गई थी ऐसा लगता था कि बहुत बड़ा गो संवर्धन का कार्य छत्तीसगढ़ में होने वाला है।

डरी हुई है कांग्रेस इसलिए धरातल पर नहीं उनका घोषणा पत्र

बीजापुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 के पहले चरण का मतदान 7 नवंबर हो होना है. वहीं चुनाव में पार्टी की स्थिति और तैयारियों की समीक्षा करने भाजपा प्रदेश प्रभारी ओम माथुर बीजापुर पहुंचे. इस दौरान ओम माथुर ने लल्लूराम डॉट कॉम से खास बातचीत की. उन्होंने कांग्रेस की तरफ से चुनावी मंच पर घोषणाओं पर कहा कि भाजपा का चुनावी घोषणा पत्र छत्तीसगढ़ में जीत दर्ज करने की दिशा में ऐतिहासिक होगा. कांग्रेस डरी हुई है. उनका घोषणा पत्र धरातल पर उतरा नहीं है. वहीं बस्तर की सीटों पर उन्होंने सभी सीटों पर जीत का दावा किया.ओम माथुर विशेष विमान से सुबह बीजापुर पहुंचें. बीजेपी अटल सदन कार्यालय में कार्यकर्ताओं को संबोधित करने के बाद बंद कमरे में भाजपा प्रत्याशी महेश गागड़ा और अन्य प्रमुख पदाधिकारियों के साथ घंटे भर से अधिक उनकी बैठक चली. माना जा रहा है कि बैठक में सीट जीतने अंतिम और महत्वपूर्ण रणनीति पर चर्चा हुई है.

भूपेश पर नहीं रहा प्रदेश का भरोसा: डॉ. रमन

■ दिल्ली के नेताओं को बुलाकर करवानी पड़ रही हैं घोषणाएँ: डॉ. रमन

रायपुर। खैरागढ़ में आज कांग्रेस की सभा में पहुंची प्रियंका गांधी ने कई घोषणाएं की, जिसपर पूर्व मुख्यमंत्री और भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। कांग्रेस की पहली घोषणा, सिलेंडर रिफिल करने पर 500 रुपए की सब्सिडी देने को लेकर कहा कि पहले कांग्रेस सिर्फ़ वादे कर जनता को छलती है, न केवल गैस सिलेंडर में सब्सिडी बल्कि गरीबों को उज्जवला योजना के माध्यम से गैस सिलेंडर देने का काम भी हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार ने किया है। 200 यूनिट तक बिजली फ्री देने को लेकर कहा कि कांग्रेस ने पहले भी बिजली बिल हाफ करने का वादा किया था, बिल तो हाफ नहीं हुआ बल्कि बिजली ही हाफ हो गई, वहीं पिछले 15 साल में भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने न सिर्फ़ प्रदेश के सुदूर अंचलों तक बिजली पहुंचाई बल्कि छत्तीसगढ़ को जीरो पावर कट राज्य बनाया। प्रियंका गांधी द्वारा महिला स्व-सहायता समूहों की ऋण माफी के वादे को लेकर पूर्व सीएम ने कहा कि इस कांग्रेस सरकार ने सबसे अधिक दुर्दशा प्रदेश में महिलाओं की ही की है जिन महिला स्व सहायता समूह को प्रलोभन देने का काम कांग्रेस कर रही है पिछले 5 साल में उन्हीं महिला स्वसहायता समूहों से रेडी टू ईट का काम छीनकर प्राइवेट ठेकेदार के हाथों में देने का काम इस कांग्रेस सरकार ने किया है, प्रदेश में महिलाओं की सुरक्षा समाप्त हो चुकी है, राजधानी रायपुर के एएसपी ऑफिस की पार्किंग में नाबालिग का बलात्कार होता है और प्रियंका गांधी छत्तीसगढ़ आकर महिलाओं से वोट मांगती हैं। आगामी वर्षों में 700 नवीन ग्रामीण औद्योगिक पार्कों की स्थापना की घोषणा को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछली बार राहुल गांधी ने घोषणा पत्र में 200 फूड पार्क बनाने का वादा

किया था जिसमें से आज तक 2 फूड पार्क का भी निर्माण नहीं किया और एक बार फिर इस छलावे को और बड़े स्तर पर लाकर जनता को छलने का प्रयास कर रही है। राज्य के सभी सरकारी स्कूल को स्वामी आत्मानंद इंग्लिश एवं हिन्दी मीडियम स्कूलों में अपग्रेड करने की घोषणा पर पूर्व सीएम ने कहा कि पिछले 5 साल में कांग्रेस की सरकार ने छत्तीसगढ़ को शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ाने का नहीं बल्कि पछाड़ने का काम किया है, कांग्रेस सरकार के आने के बाद छत्तीसगढ़ शिक्षा के क्षेत्र में केंद्रशासित प्रदेशों से भी पिछड़कर 34वें स्थान पर आया गया जबकि भाजपा की सरकार में हमने पिछले 15 साल में 40000 से ज्यादा स्कूलों का निर्माण किया, आदिवासी अंचलों तक स्कूल, कॉलेज, मेडिकल कॉलेज, आदि के माध्यम से शिक्षा का विस्तार किया जहां भाजपा की सरकार में ह्ढ्ढञ्ज, ढ्ढढ्ढञ्ज, ढ्ढढ्ढरू ढ्ढढ्ढढ्ढञ्ज, ।ह्रु और ढ्ढरूस्र जैसे शैक्षणिक संस्थान आए, बस्तर में एजुकेशन हब बना, प्रियंका गांधी जिन स्वामी आत्मानंद स्कूलों की बात कर रही हैं कांग्रेस सरकार ने उनमें एक ईट तक नहीं लगाया वो सभी स्कूल भवन भाजपा के कार्यकाल में बने हैं कांग्रेस ने सिर्फ़ नाम बदलकर भाजपा सरकार के कार्यों का श्रेय लेने का काम किया है। इसके अलावा छत्तीसगढ़ के निवासियों के सड़क दुर्घटनाओं में तथा अन्य आकस्मिक दुर्घटनाओं में मुख्यमंत्री विशेष स्वास्थ्य सहायता योजना के तहत निःशुल्क इलाज की घोषणा पर पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने कहा कि कांग्रेस ने दुर्घटनाएं देने का काम किया है और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार ने इलाज देने का काम किया है, आयुष्मान भारत योजना के तहत 5 लाख के इलाज की सुविधा किसी ने दी है तो भाजपा की सरकार ने दी है, छत्तीसगढ़ में 60 हजार किलोमीटर से ज्यादा सड़कों का विस्तार किसी ने बढ़ाया है तो भाजपा की सरकार ने बढ़ाया है, मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने छत्तीसगढ़ को कुछ दिया है तो सड़कों पर गड्ढे, मवेशी और सड़क दुर्घटना में छत्तीसगढ़ को नंबर 1 पर ले आए हैं। कांग्रेस ने अपनी पिछली घोषणा पत्र का 1 भी वादा ठीक से पूरा नहीं किया है तो जनता इनके झूठे वादों में नहीं फंसने वाली छत्तीसगढ़ की जनता का भरोसा भूपेश से समाप्त हो गया है इसलिए कांग्रेस अपने केंद्रीय नेताओं को बुलाकर वादे करवा रही है लेकिन छत्तीसगढ़ कांग्रेस की भ्रष्टाचार और वादाखिलाफी की नियत को समझ चुका है, 15000 करोड़ रुपए से अधिक का भ्रष्टाचार करने वाली इस कांग्रेस सरकार का इस बार छत्तीसगढ़ से सफाया जरूर होगा।

रायपुर जिला के 7 विधानसभा के भाजपा प्रत्याशियों ने एक साथ भरा नामांकन

रायपुर। विधानसभा चुनाव के मद्देनजर भारतीय जनता पार्टी रायपुर जिला के सभी सातों प्रत्याशियों ने एक साथ रैली की शक्ल में कलेक्ट्रेट परिसर पहुंचकर अपनी अपनी विधानसभा के लिए भाजपा प्रत्याशी के तौर पर नामांकन दाखिल किया रायपुर दक्षिण विधानसभा से बृजमोहन अग्रवाल भाजपा के अधिकृत प्रत्याशी हैं वहीं पश्चिम से राजेश मूणत , उत्तर से पुरंदर मिश्रा , ग्रामीण से मोतीलाल साहू , अभनपुर से इंद्रकुमार साहू , आरंग से गुरु कुशवंत साहेब और धरसीवां से भाजपा ने छत्तीसगढ़ी सीने स्टार अनुज शर्मा को अपना प्रत्याशी बनाया है भाजपा के सभी प्रत्याशी आज दोपहर रैली की शक्ल में अपने अपने विधानसभा से भाजपा कार्यालय एकात्म परिसर पहुंचे जहां सभी 7 प्रत्याशी एक साथ रथ में सवार होकर रायपुर लोकसभा सांसद सुनील सोनी जिला भाजपा अध्यक्ष जयंती पटेल सहित भाजपा के कई वरिष्ठ कार्यकर्ताओ सहित रैली की शक्ल में नामांकन दाखिल करने रवाना हुए प्रत्याशियों के रथ के आगे बाजे गाजे , ढोल , नगाड़ा , बग्गियां और विशेष आकर्षण में बस्तरीया रूप में विशालकाय पुतले साथ चल रहे थे भाजपा कार्यालय से लेकर कलेक्ट्रेट परिसर तक जनता का हुजूम साथ चल रहा था पूरी सड़क समर्थकों से खचाखच भरी हुई थी सभी ने हाथ में भाजपा के झंडे पकड़ रखे थे भाजपा समर्थक लगातार भाजपा जिंदाबाद , जीतेगा भई जीतेगा कमल का फूल जीतेगा और अऊ नई साहिबो बदल के रहीबो जैसे नारे लगा रहे थे भाजपा कार्यालय से कलेक्ट्रेट परिसर तक पूरा रास्ता भाजपा मयी हो गया था । नामांकन दाखिल कर निकले राजेश मूणत से पत्रकारों ने सवाल करते हुए पूछा की आज कांग्रेस द्वारा एक और घोषणा की गई है भाजपा का घोषणा पत्र कब आएगा।

नामांकन का आज आखिरी दिन

रायपुर। विधानसभा चुनाव 2023 के दूसरे चरण के लिए नामांकन दाखिल करने का आखिरी मौका आज 30 अक्टूबर है। अब तक 70 विधानसभा क्षेत्रों के लिए 474 अभ्यर्थियों ने 740 नामांकन पत्र दाखिल किया है। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार विधानसभा निर्वाचन-2023 के द्वितीय चरण के 70 विधानसभा क्षेत्रों के लिए दूसरे चरण में रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग तथा सरगुजा संभाग के कुल 70 विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं। सारे दावेदार आज शक्ति प्रदर्शन के साथ नामांकन दाखिल करने पहुंचेंगे इसलिए घमासान का माहौल रहेगा।द्वितीय चरण के लिए नामांकन पत्रों की संवीक्षा 31 अक्टूबर को होगी। अभ्यर्थी दो नवंबर तक अपना नाम वापस ले सकेंगे। द्वितीय चरण में भरतपुर-सोनहट, मनेन्द्रगढ़, बैकुंठपुर, प्रेमनगर, भटगांव, प्रतापपुर, रामानुजगंज, सामरी, लुण्ड्रा, अम्बिकापुर, सीतापुर, जशपुर, कुनकुरी, पत्थलगांव, लैलूंगा, रायगढ़, सारंगढ़, खरसिया, धर्मजयगढ़, रामपुर, कोरबा, कटघोरा, पाली-तानाखार, मरवाही, कोटा, लोरमी, मुंगेली, तखतपुर, बिल्हा, बिलासपुर, बेलतरा, मस्तूरी, अकलतरा, जांजगीर-चांपा, सक्ती, चंद्रपुर, जैजैपुर, पामगढ़, सराईपाली, बसना विधानसभा क्षेत्रों में 17 नवंबर 2023 को मतदान होगा।

इसी तरह खल्लारी, महासमुंद, बिलाईगढ़, कसडोल, बलौदाबाजार, भाटापारा, धरसींवा, रायपुर ग्रामीण, रायपुर नगर पश्चिम, रायपुर नगर उत्तर, रायपुर नगर दक्षिण, आरंग, अभनपुर, राजिम, बिन्द्रानवागढ़, सिहावा, कुरूद, धमतरी, संजारी बालोद, डोंडीलोहारा, गुंडरदेही, पाटन, दुर्ग ग्रामीण, दुर्ग शहर, भिलाई नगर, वैशाली नगर, अहिवारा, साजा, बेमेतरा और नवागढ़ विधानसभा क्षेत्रों में भी 17 नवंबर को मतदान होगा।

छत्तीसगढ़/राजधानी
प्रमुख समाचार

विश्वास खो चुकी भाजपा वादा करने की हालत में भी नहीं: बैज

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद दीपक बैज ने कहा कि जनता की नजरों में वादाखिलाफी का पर्याय बन चुकी भाजपा छत्तीसगढ़ में जनता से कोई वादा करने की हिम्मत भी नहीं जुटा पा रही है। भाजपा जानती है कि वह कितने रू. भी प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य की भी घोषणा करेगी तो 15 साल भाजपा की वादा खिलाफी को भुगत चुकी जनता उन पर विश्वास नहीं करने वाली। छत्तीसगढ़ की जनता ने

भाजपा को तीन बार उनके घोषणा पत्र में किए गए वादों को पूरा करने का मौका दिया था लेकिन हर बार जनता को छला गया। 2003 के घोषणा पत्र में वायदा किया था कि हर आदिवासी परिवार को गाय देंगे, हर आदिवासी परिवार से एक को सरकारी नौकरी देंगे, युवाओं को 500 रू. बेरोजगारी भत्ता देंगे मगर तीन-तीन बार सरकार में आने के बावजूद किसी वादे को पूरा नहीं किया। 2003 में वायदा किया था कि किसानों को धान का 300 रू. बोनस देंगे मगर नहीं दिया।2013 में वायदा किया था कि धान का समर्थन मूल्य 2100 रू. और 300 रू. बोनस मतलब कुल 2400 रुपए समर्थन मूल्य पर धान खरीदी होगी मगर फिर से छला। भाजपा को यह समझ में नहीं आ रहा है कि किस मुंह से वह जनता के बीच वायदा करें। दूसरी ओर धान खरीदी व अन्य योजनाओं में कई बार रोड़े अटका चुकी मोदी सरकार के रवैय्ये से छत्तीसगढ़ भाजपा अच्छी तरह अवगत है।

भाजपा नेताओं के जुमला और झूठ को सुन-सुन के पक चुकी : ठाकुर

रायपुर। भाजपा के वरिष्ठ नेता और उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस पर तंज कसते हुए प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि भाजपा के वरिष्ठ नेता उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस भाजपा के झूठ बोलो प्रतियोगिता में शामिल होने आए थे लेकिन देवेंद्र फडणवीस भूल गये की वो कितना भी झूठ बोल ले आखिर में प्रतियोगिता में जीत तो मोदी की ही होगी। मोदी के आगे भाजपा के सारे नेताओं की झूठ फीकी हो जाती है। प्रदेश की जनता के कान भाजपा

नेताओं के जुमला और झूठ को सुन-सुन के पक चुकी है। मन की बात हो या चुनाव का मंच झूठ परोसने के अलावा कुछ आता भी नही है। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि गजनी तो 4 नवम्बर को छत्तीसगढ़ आ रहे है? जो जनता से किये हर वादे को भूल चुके हैं।15-15 लाख रुपया खाता में आएगा, अच्छे दिन आएंगे, 100 दिन में महंगाई कम होगी, 30 रु35 रु में डीजल-पेट्रोल मिलेगा, हवाई चप्पल वाले हवाई यात्रा करेंगे, एक सैनिक के बदले पाक के दस सैनिको का सिर काट कर लायेंगे, 2022 में किसानों की आय दोगुनी होगी, स्वामीनाथन कमेटी के सिफारिश के अनुसार उपज की लागत मूल्य का डेढ़ गुना समर्थन मूल्य मिलेगा, युवाओं को दो करोड़ रोजगार प्रतिवर्ष मिलेगा, 100 दिन में महंगाई कम होगी। बेटी सुरक्षित होगी। बुलेट ट्रेन चलेगा सहित अनेक वादा किया गया था और सत्ता मिलते ही उन वादों को जुमला बताकर जनता का उपहास उड़ाया गया है। प्रदेश में भी भाजपा ने वादाखिलाफी किया है।

देश में सबसे सस्ता सिलेंडर छत्तीसगढ़ में: शुक्ला

रायपुर। देश में सबसे सस्ता गैस सिलेंडर छत्तीसगढ़ में मिलेगा। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि साढ़े 9 साल पहले कांग्रेस की यूपीए सरकार के समय जिस रेट में घरेलू सिलेंडर का दाम छोड़ा था, छत्तीसगढ़ में 10 वर्षों बाद भी छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद फिर उसी रेट में गैस सिलेंडर मिलेगा। मोदी सरकार की

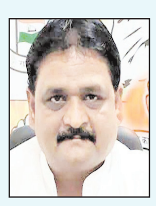

मुनाफाखोरी वाली नीति के कारण आज सिलेंडर की कीमत 974 रू. है, 500 रू. की कांग्रेस द्वारा दी जाने वाली 500 सब्सिडी के बाद छत्तीसगढ़ में सिलेंडर 400 के लगभग में मिलेगा।प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि चोरी की सरकार में उपमुख्यमंत्री बने देवेंद्र फडनवीस को कांग्रेस की छत्तीसगढ़ सरकार से सीखना चाहिये कि जनता से किया गया वायदा कैसे निभाया जाता है। कांग्रेस ने 2018 में जनता से जो वायदा किया था मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने उसमें 95 प्रतिशत से अधिक वायदों को पूरा किया। यही कारण है प्रदेश में फिर से कांग्रेस की सरकार बनने वाली है। कांग्रेस ने जो कहा था भूपेश सरकार ने वह सब किया। जनता को इसीलिये कांग्रेस के वायदों पर भरोसा भी हो रहा है। इस चुनाव में भी कांग्रेस जो घोषणा कर रही जनता उसको पूरा होने की गारंटी मान रही है।

सात लाख युवा पहली बार करेंगे मताधिकार का प्रयोग

रायपुर । दूसरे चरण के नामांकन के अंतिम दिन मतदाताओं की संख्या लाक हो चुकी है। विधानसभा चुनाव-2023 में कुल दो करोड़ तीन लाख 93 हजार 160 पात्र मतदाता हैं। इससे पहले निर्वाचक नामावलियों का अंतिम प्रकाशन चार अक्टूबर को किया गया था। 30 अक्टूबर तक की स्थिति में 32 हजार 920 मतदाता नए जुड़े हैं। फ्रीज की गई मतदाता सूची के अनुसार, राज्य में मतदाताओं का लिंगानुपात 1,012 हैं। 18 से 19 वर्ष के युवा मतदाताओं की संख्या सात लाख 29 हजार 267 हैं एवं 100 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले मतदाताओं की संख्या 2,457 हैं। राज्य में प्रवासी भारतीय मतदाताओं की संख्या 17 हैं। दूसरे चरण के चुनाव के लिए एक करोड़ 63 लाख 14 हजार 479 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकेंगे। इनमें 81 लाख 41 हजार 624 पुरुष, 81 लाख 72 हजार 171 महिला तथा 684 तृतीय लिंग के मतदाता शामिल हैं। पहले व दूसरे चरण में 80 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के मतदाताओं की संख्या 6,477 हैं। इन सभी मतदाताओं का मतदान विशेष गठित मतदान दल द्वारा घर-घर जाकर संपन्न कराया जा रहा है। प्रथम चरण के विधानसभा क्षेत्रों में निर्वाचन ड्यूटी में तैनात मतदाताओं एवं अनुपस्थित श्रेणी के मतदाताओं की डाक मतपत्र के माध्यम से मतदान की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। 29 अक्टूबर तक की स्थिति में अलग-अलग विधानसभा क्षेत्रों में अब तक 2,141 मतदाताओं ने डाक मतपत्र के माध्यम से मतदान कर लिया है। सी-विजिल एप में 1,787 शिकायतों में से 1,129 शिकायतों का निराकरण कर दिया गया है। 623 शिकायतें निरस्त की गई है।

निर्वाचन की हुई तैयारी की समीक्षा की प्रेक्षकों ने

रायपुर। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा रायपुर जिले के लिए नियुक्त प्रेक्षकगणों ने आज कलेक्टोरेट परिसर स्थित सभाकक्ष में आयोजित निर्वाचन से जुडे अधिकारियों की बैठक ली। उन्होंने जिले की सभी विधानसभा के व्यवस्था और निर्वाचन प्रक्रिया से जुडे विषयों की जानकारी ली। प्रेक्षकों ने जिले के सभी विधानसभा क्षेत्रों में चुनाव को लेकर किये गये अब तक की तैयारियों की समीक्षा की। इस दौरान कलेक्टर व जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ सर्वेश्वर भुरे तथा विधानसभा रायपुर ग्रामीण क्रमांक-48 के प्रेक्षक श्री रविन्द्र लक्ष्मण बिनवाडे (आई.ए.एस), विधानसभा क्रमांक-49 रायपुर पश्चिम हेतु नियुक्त प्रेक्षक इसराइल वातरे लंगटी (आई.ए.एस), रायपुर उत्तर क्रमांक-50 हेतु नियुक्त प्रेक्षक श्रीमती विमला आर (आई.ए.एस), विधानसभा क्रमांक-51 रायपुर दक्षिण हेतु नियुक्त प्रेक्षक डॉ.लक्ष्मीशा जी.(आई.ए.एस), आरंग क्रमांक-52 हेतु नियुक्त प्रेक्षक मीर तारिक अली (आई.ए.एस), अभनपुर क्रमांक-53 हेतु नियुक्त प्रेक्षक श्री विष्णु प्रसाद मिश्रा (आई.ए.एस), उप जिला निर्वाचन अधिकारी गजेन्द्र ठाकुर सहित सभी विधानसभा के रिटर्निंग अधिकारी, सहायक रिटर्निंग अधिकारी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रशांत अग्रवाल सहित अन्य प्रभारी अधिकारी निर्वाचन उपस्थित थे।बैठक में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ भुरे ने बताया कि इस बार उत्तर और पश्चिम विधानसभा में महिला अधिकारियों को चुनाव संचालन का कार्य सौंपा जा रहा है। उन्हें पीठासीन अधिकारी मतदान दल में जिम्मेदारी दी जा रही है।

देशभर से पधारे साधु संतों ने बृजमोहन को दिया जीत का आशीर्वाद

रायपुर। रायपुर दक्षिण विधानसभा के भाजपा प्रत्याशी बृजमोहन ने आज अपना नामांकन दाखिल किया। इस मौके पर उन्हें अपना आशीर्वाद देने के लिए देशभर से पूज्य महामंडलेश्वरों के अलावा अनेक साधु संत रायपुर पधारे। आज सुबह वे सभी श्री अग्रवाल के निवास पहुंचे और उन्हें सनातन धर्म और धर्म परायण जनता की हमेशा की तरह सेवा करते रहने का आशीर्वाद दिया। पूज्य संतश्री भी श्री अग्रवाल की नामांकन रैली में शामिल हुए। हरिद्वार से पधारे अनंतानंद जी महाराज ने इस अवसर पर कहा कि बृजमोहन अग्रवाल ने सनातन धर्म के लिए अनुकरणीय कार्य किया है। राजिम

कुंभ का आयोजन कर उन्होंने सनातन धर्म और संस्कृति को और समृद्ध बनाने को दिशा में सार्थक प्रयास किया था। देश में ऐसे कम ही नेता है जो राजनीतिक स्वार्थ से परे धर्म के बारे में सोचते हैं। जोधपुर से आए ज्ञान स्वरूपानंद अक्रिय जी महाराज ने कहा कि बृजमोहन अग्रवाल जैसे धर्म परायण नेतृत्व का मिलना रायपुर की जनता के लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने कहा कि देश में सनातन धर्म पर निरंतर प्रहार हो रहे हैं। हमने देखा है कि राजनीतिक दल विशेष जो राम मंदिर के विरोध में खड़ा था, वह आज राम के नाम पर वोट मांगने की नाकाम कोशिश कर रहा है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि संत महंत का चोला ओढ़कर रामद्रोहियों के साथ चलने वाले लोगों को भगवान माफ नहीं करेंगे, जनता भी उनके साथ नहीं देगी।

हरिद्वार से आए गंगादास उदासीन,स्वामी रामानुज सरस्वती ,गुरु मां सुशीला देवी,राजीव लोचन महाराज,शास्त्री हरिवलभ जी महाराज,स्वामी नित्यानंदपुरी जी ने भी बृजमोहन अग्रवाल को सनातन धर्म और मानवता का सेवक बताते हुए जीत का आशीर्वाद दिया। इस दौरान श्री अग्रवाल ने सभी साधु संतों का चरणवंदन किया और शुभकामनाओं के लिए उनका आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आप धर्म गुरुओं के मार्गदर्शन,सहयोग और आशीर्वाद से मैं अपने राज्य और सर्वसमाज के लिए बेहतर कार्य कर पा रहा हूं और करता रहूंगा।

चुनाव के लिए 15 हजार वाहनों का होगा अधिग्रहण

रायपुर । छत्तीसगढ़ में होने जा रहे विधानसभा चुनाव के लिए करीब 15 हजार वाहनों का अधिग्रहण करने का लक्ष्य परिवहन विभाग को दिया गया है। इसमें करीब सात हजार यात्री बस, दो हजार स्कूल बस, तीन हजार ट्रक और तीन हजार लग्जरी कार शामिल हैं।यात्री वाहनों के अधिग्रहण से आम यात्रियों को करीब एक हफ्ते तक परेशान होना पड़ेगा। खासकर दीपावली में छत्तीसगढ़ के अलग-अलग शहरों के साथ ही पड़ोसी राज्यों मध्यप्रदेश, ओडिशा, बिहार, उत्तरप्रदेश, झारखंड, महाराष्ट्र जाने की तैयारी कर रहे लोगों को खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा,

क्योंकि इस रूट पर जाने वाली अधिकांश ट्रेनें पहले से रद हैं। ऐसे में यात्री वाहन ही एकमात्र विकल्प है। चुनाव आयोग के निर्देश पर सभी जिलों के आरटीओ द्वारा बस मालिकों, ट्रांसपोर्टरों और ट्रैवल्स संचालकों को मतदान के पांच दिन पहले वाहन उपलब्ध कराने नोटिस दिया गया है। निर्धारित समय पर वाहन नहीं देने और नोटिस की अवहेलना करने पर परमिट निरस्त कर ब्लैक लिस्टेड करने की चेतावनी दी गई है। परिवहन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि सात नवंबर को होने जा रहे प्रथम चरण के मतदान के लिए सुरक्षा बलों और राज्य पुलिस के जवानों को मतदान केंद्रों तक पहुंचाने और वहां से लाने के लिए पांच हजार से अधिक वाहन अधिगृहीत किए जा चुके हैं।पहले चरण का मतदान संपन्न होने के बाद परिवहन विभाग 17 नवंबर को होने वाले दूसरे चरण के मतदान के लिए वाहनों का अधिग्रहण शुरू करेगा। इसके लिए करीब 10 हजार वाहनों का अधिग्रहण किया जाना है।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.